# समाचार पचीसा

।। संगछध्वम् संवदध्वम् ।।

राजनीति का जनपक्षकार

● वर्ष-4 ● अंक-72 ● रायपुर, शुक्रवार 1 नवंबर 2024 ● पृष्ठ-8 ● मूल्य-3 रु. samacharpacheesa@gmail.com


## दिवाली की रोशनी से जगमगाया देश, कहीं पटाखों की धूम तो कहीं मंदिरों में पूजा-पाठ

नई दिल्ली। देशभर में दिवाली का त्योहार धूमधाम से मनाया जा रहा है। लोगों ने अपने घरों को रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया है। घरों और मंदिरों में माता लक्ष्मी और भगवान गणेश पूजा अर्चना की जा रही है। लोग उत्सव को धूमधाम से मनाने के लिए पटाखे जला रहे हैं। तस्वीरों में देखिए, दिवाली की रोशनी से किस तरह डूबा देश- जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर के लाल चौक में दीपावली के मौके पर लोगों ने दीये जलाए। राजस्थान के अजमेर में भी दिवाली का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर अजमेर के पुष्कर में विदेशी नागरिक भी शामिल हुए। पश्चिम बंगाल के दक्षिण दिनाजपुर जिले के अटीला में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों ने बांग्लादेश सीमा के पास दीवाली का त्योहार मनाने के लिए मोमबत्तियां जलाईं। उत्तर प्रदेश के वाराणसी में दीवाली के मौके पर लोगों ने श्री स्वामीनारायण मंदिर में दीए जलाए। केरल के कोच्चि के एर्नाकुल में दिवाली के मौके पर श्रद्धालुओं ने श्री कृष्ण मंदिर में दीए जलाए। केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने राजस्थान के बीकानेर में बीएसएफ के जवानों के साथ दीवाली का जश्न मनाया। उत्तर प्रदेश के मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर में भक्तों ने दिवाली के मौके पर दीये जलाए।

पूर्वी दिल्ली के शास्त्री नगर के रानी गार्डन में एक रिक्शाचालक ने दिवाली को मनाने के लिए अपने रिक्शे पर मोमबत्तियां जलाईं।

### शुभकामनाएं

दीप पर्व के अवसर पर समाचार पचीसा के सुधी पाठकों, एजेंटों एवं शुभचिंतकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं....

### अवकाश

समाचार पचीसा के संस्थान में 1 नवंबर से 3 नवंबर तक अवकाश रहेगा। पाठकों को समाचार पचीसा का अगला अंक 5 नवंबर को प्राप्त होगा।

● संपादक

## कच्छ में मोदी ने बढ़ाया जवानों का जोश, कहा- सरकार एक इंच जमीन से भी समझौता नहीं कर सकती

**कच्छ।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बार कच्छ में सेना के जवानों के साथ दिवाली मनाने पहुंचे। पीएम नरेंद्र मोदी ने जवानों का जोश बढ़ाया। उन्होंने कहा कि जवानों के साथ दिवाली का त्योहार मनाने का मौका मिलना सबसे बड़ी खुशी है। मैं आप सभी को शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने कहा कि देश में एक ऐसी सरकार है, जो भारत की एक इंच जमीन के साथ समझौता नहीं कर सकती।

पीएम ने कहा कि 21वीं सदी की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए आज हम अपनी सेनाओं, अपने सुरक्षा बलों को आधुनिक संसाधनों से लैस करके आधुनिक सैन्य बल बना रहे हैं। हम अपनी सेना को दुनिया की सबसे बड़ी सेनाओं की कतार में खड़ा कर रहे हैं।

**देश आपकी वजह से सुरक्षित**

हमारे इन प्रयासों का आधार रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता है।

भारत पाक सीमा के पास एक कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कहा कि अतीत में इस क्षेत्र को युद्ध के मैदान में बदलने की कोशिश की गई थी। दुश्मन लंबे समय से इस क्षेत्र पर अपनी नजर गड़ाए हैं। लेकिन हम चिंतित नहीं हैं क्योंकि आप देश की रक्षा कर रहे हैं। हमारे दुश्मन इसे अच्छे से जानते हैं। पीएम ने कहा कि भारत के लोगों को लगता है कि उनका देश आपकी वजह से सुरक्षित है। जब दुनिया आपको देखती है, तो उसे भारत की ताकत दिखाई देती है, जब दुश्मन आपको देखते हैं, तो उन्हें अपनी नापाक योजनाओं का अंत दिखाई देता है।

**सरकार को सेना की ताकत पर विश्वास**

पीएम मोदी ने कहा कि सरकार देश की रक्षा के लिए सेना की ताकत पर विश्वास करती है और देश के दुश्मनों की बातों पर निर्भर नहीं है। हम सेना, नौसेना और वायु सेना को अलग-अलग संस्थाओं के रूप में देखते हैं, लेकिन जब वे एक साथ आएंगे तो उनकी ताकत कई गुना बढ़ जाएगी। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के पद का निर्माण इस दिशा में एक कदम था। सरकार अब एकीकृत थिएटर कमांड बनाने पर काम कर रही है, जो सेना, वायु सेना और नौसेना के बीच बेहतर समन्वय लाएगा।

**बुनियादी ढांचे का निर्माण प्राथमिकता**

पीएम मोदी ने कहा कि सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का विकास हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) ने अब तक 80 हजार किमी सड़कें बनाई हैं। सरकार सशस्त्र बलों को नवीनतम उपकरण प्रदान करने पर काम कर रही है। यह नए युग के युद्ध का युग है। ड्रोन इसका उदाहरण है। वर्तमान में युद्धरत देश अलग-अलग उद्देश्यों के लिए ड्रोन का उपयोग कर रहे हैं। हम सशस्त्र बलों के तीनों अंगों के लिए प्रीडेटर ड्रोन खरीद रहे हैं। कई भारतीय फर्म भी ड्रोन बना रही हैं।

**विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे**

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि देश विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा है। आप सभी इस सपने के रक्षक हैं। कच्छ में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं और सीमा पर्यटन राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा एक पहलू है। हम यहां मैंग्रोव को लेकर काम कर रहे हैं। मैंग्रोव वन पर्यटकों को आकर्षित करेगा। इससे क्षेत्र निकट भविष्य में पर्यटकों के लिए स्वर्ग बन जाएगा।

**भारत-पाक सीमा के पास सशस्त्र बलों के साथ मनाई दिवाली**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बृहस्पतिवार को गुजरात के कच्छ जिले में भारत-पाक सीमा के पास सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ), सेना, नौसेना और वायुसेना के जवानों के साथ दिवाली मनाई। बीएसएफ के अधिकारी ने बताया कि पीएम मोदी एकता नगर से कच्छ के कोटेश्वर पहुंचने के बाद सर क्रीक इलाके में लक्की नाला पहुंचे।

### प्रमुख समाचार

#### ओडिशा सरकार ने घटाई पूर्व मुख्यमंत्री नवीन की सुरक्षा

**बंगलूरू।** ओडिशा सरकार ने पांच बार के पूर्व मुख्यमंत्री और विपक्ष के नेता नवीन पटनायक की सुरक्षा को घटाकर वाई श्रेणी कर दिया है। पहले उन्हें जेड श्रेणी की सुरक्षा दी गई थी। एक अधिकारी ने गुरुवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि उच्च स्तरीय सुरक्षा समिति की सिफारिश के बाद पटनायक की सुरक्षा में लगे अधिकांश सुरक्षा कर्मियों को हटा दिया गया है। अब पटनायक के साथ हवलदार रैंक के सिर्फ दो सुरक्षाकर्मी होंगे। उन्होंने बताया कि आमतौर पर पूर्व मुख्यमंत्रियों को दो निजी सुरक्षा अधिकारियों (पीएसओ) दिए जाते हैं। पटनायक को जब भी अतिरिक्त सुरक्षा की आवश्यकता होगी, स्थानीय पुलिस द्वारा उसे उपलब्ध कराया जाएगा। विशेषकर जब वह भुवनेश्वर के बाहर पर होंगे। हालांकि, पटनायक ने निजी तौर पर भी दो वरिष्ठ पीएसओ नियुक्त किए हैं, जो हाल ही में सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त हुए हैं। इस साल आम चुनाव के बाद पटनायक ने 24 वर्षों बाद सत्ता खोई थी। जिसके बाद उनके आवास और सुरक्षा में लगे सुरक्षा कर्मियों की संख्या घटाकर 23 कर दी गई थी। जबकि पहले उनके आवास नवीन निवास पर तीन शिफ्ट में 268 कर्मी तैनात थे।

#### जम्मू-कश्मीर के लोगों के लिए आज काला दिन

**जम्मू।** जम्मू कश्मीर की पूर्व सीएम और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने कहा कि उनकी पार्टी केंद्र शासित प्रदेश (यूटी) स्थापना दिवस को तब तक काला दिवस के रूप में मनाती रहेगी, जब तक कि पूर्ववर्ती राज्य की विशेष शक्तियां बहाल नहीं हो जातीं। अनंतनाग में संवाददाताओं से बातचीत के दौरान महबूबा मुफ्ती ने कहा कि मैं राज्यपाल को बताना चाहती हूं कि जम्मू-कश्मीर और खासकर पीडीपी के लिए आज का दिन काला दिन है। हम इसे तब तक काला दिवस के रूप में मनाते रहेंगे, जब तक कि जम्मू-कश्मीर की विशेष शक्तियां बहाल नहीं हो जातीं। मुफ्ती ने आगे कहा कि मैंने पहले भी कहा है कि जम्मू-कश्मीर भाजपा के लिए प्रयोगशाला बन गया है, वे देश में अल्पसंख्यकों को एक संदेश देना चाहते हैं। वहीं इससे पहले जम्मू-कश्मीर के एलजी मनोज सिन्हा ने गुरुवार को केंद्र शासित प्रदेश के स्थापना दिवस समारोह में शामिल नहीं होने के लिए मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और अन्य नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) नेताओं से सवाल किया।

#### अपनी गलतियों को स्वीकार करने को तैयार नहीं चुनाव आयोग

**नई दिल्ली>** हरियाणा विधानसभा चुनाव में हुई गड़बड़ी की कांग्रेस की शिकायतों को चुनाव आयोग ने खारिज कर दिया। जिस परकांग्रेस सांसद तारिक अनवर ने अपनी चुनाव आयोग को ही गलत बता दिया। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग अपनी गलती स्वीकार नहीं कर रहा है। आईएएनएस से खास बातचीत के दौरान तारिक अनवर ने हरियाणा में ईवीएम को लेकर कांग्रेस की शिकायत को चुनाव आयोग द्वारा खारिज किए जाने पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसके अलावा, उन्होंने महाराष्ट्र में नवाब मलिक की उम्मीदवारी को लेकर भाजपा की नाराजगी और किरीट सोमैया द्वारा मलिक को आतंकी कहे जाने पर भी टिप्पणी की। हरियाणा में ईवीएम को लेकर कांग्रेस की शिकायत को चुनाव आयोग द्वारा खारिज किए जाने पर कांग्रेस सांसद तारिक अनवर ने कहा कि चुनाव आयोग अपनी गलतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है और उस पर गंभीर आरोप लगे हैं कि वह निष्पक्षता के साथ कार्य नहीं कर रहा है। चुनाव आयोग विपक्षी शिकायतों को नजरअंदाज कर देता है।

#### सरकारी कर्मी पर चिल्लाना असॉल्ट का केस नहीं.

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि किसी पर चिल्लाना या फिर उसे धमकी देने का मतलब यह नहीं कि मामला असॉल्ट का बनेगा। सरकारी अधिकारी के काम में बाधा और असॉल्ट के मामले में आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने उसे खारिज करते हुए कहा कि यह केस कुछ और नहीं बल्कि कानूनी प्रक्रिया का दुरुपयोग है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस सुधांशु धुलिया की अगुवाई वाली बेंच के सामने यह मामला सुनवाई के लिए आया। एक व्यक्ति के खिलाफ आईपीसी की धारा 353 (सरकारी कर्मचारी के साथ असॉल्ट और काम में बाधा डालना) के तहत केस दर्ज किया गया था। आरोप के मुताबिक इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स के एक कर्मचारी के खिलाफ यह मामला दर्ज किया गया। बेंगलूर में नौकरी करने वाले आरोपी को नौकरी से बर्खास्त किया गया था, और उसने इस फैसले को कैट में चुनौती दी थी। इसी दौरान अथॉरिटी से मंजूरी लेकर वह कैट में फाइल इंस्पेक्शन करने गया था।

#### भाजपा के सबसे पुराने कार्यकर्ता भुलई भाई का निधन

**नई दिल्ली।** नेशनल डेस्क: भारतीय जनता पार्टी के सबसे पुराने कार्यकर्ता भुलई भाई का गुरुवार को निधन हो गया। उन्होंने 111 स ल की उम्र में शाम 6 बजे कसानगंज में अंतिम सांस ली। कोविड महामारी के समय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद फोन करके भुलई भाई का हालचाल जाना था। इसके बाद भुलई भाई लाइमलाइट में आ गए थे। 111 साल के श्री नारायण उर्फ भुलई भाई जनसंघ के टिकट पर विधायक रहे। सोमवार को उनकी तबीयत खराब हुई थी और उसके बाद से वो पगार छपरा स्थित अपने घर पर ही ऑक्सीजन पर थे। भुलई भाई दीनदयाल उपाध्याय से प्रेरित होकर राजनीति में आए थे और 1974 में कुशीनगर की नौरंगिया सीट से जनसंघ दो बार विधायक बने थे। जनसंघ के बीजेपी बनने के बाद भी वो पार्टी कार्यकर्ता थे। साल 2022 में उत्तर प्रदेश में दोबारा योगी आदित्यनाथ की सरकार आने के बाद शपथ ग्रहण समारोह में भुलई भाई खास मेहमान बन कर लखनऊ पहुंच थे। लखनऊ में कार्यकर्ता सम्मेलन में भुलई भाई को अमित शाह ने मंच से नीचे उतर कर सम्मानित किया था।

## भौतिक ही नहीं, आध्यात्मिक रोशनी का पर्व है दीपावली

**ललित गर्ग**

दीपावली का सम्पूर्ण पर्व एक ऊर्जा है, एक शक्ति है, एक प्रकार की गति है। एक सत्य से दूसरे सत्य की ओर अनवरत, अनिरुद्ध गति ही दीपावली की जीवंतता है। जीवन के अनेक अनुभवों का समवाय है दीपावली।

दीपावली एक समृद्धि, खुशहाली एवं रोशनी का लौकिक पर्व है। यह जितना भौतिक पर्व है, उतना ही आध्यात्मिक पर्व भी है, इसलिये यह केवल बाहरी अंधकार को ही नहीं, बल्कि भीतरी अंधकार को मिटाने का पर्व भी बने। हम भीतर में धर्म का दीप जलाकर मोह और मूर्च्छा के अंधकार को दूर कर सकते हैं। दीपावली के मौके पर सभी आमतौर से अपने घरों की साफ-सफाई, साज-सज्जा और उसे संवारने-निखारने का प्रयास करते हैं। उसी प्रकार अगर भीतर चेतना के आँगन पर जमे कर्म के कचरे को बुहारकर साफ किया जाए, उसे संयम से सजाने-संवारने का प्रयास किया जाए और उसमें आत्मा रूपी दीपक की अखंड ज्योति को प्रज्वलित कर दिया जाए तो मनुष्य शाश्वत सुख, शांति एवं आनंद को प्राप्त हो सकता है।

दीपावली का सम्पूर्ण पर्व एक ऊर्जा है, एक शक्ति है, एक प्रकार की गति है। एक सत्य से दूसरे सत्य की ओर अनवरत, अनिरुद्ध गति ही दीपावली की जीवंतता है। जीवन के अनेक अनुभवों का समवाय है दीपावली। एक अनुभूति से दूसरी अनुभूति तक की यात्रा में जो दीपावली के विलक्षण एवं अद्भुत क्षणों की गति है, वही जीवन की वास्तविकता है। जीवन एक यात्रा है, सतत यात्रा। ठीक इसी तरह दीपावली भी एक यात्रा है, एक प्रस्थान है, कुछ नया पाने की, अनूठा करने की। समय बह रहा है, जीवन बीत रहा है। वर्ष पर वर्ष, माह पर माह, दिन पर दिन एवं पलों पर पल बीत रहे हैं, सांसों के घट रीत रहे हैं। इन घटती सांसों को अर्थपूर्ण बनाने, सम्पूर्णता से जी लेने एवं उपयोगी करने का पर्व है दीपावली। वृक्ष भी जीते हैं, पशु-पक्षी भी जीते हैं, परंतु वास्तविक जीवन वे ही जीते हैं, जिनका मन मनन का उपजीवी हो। मननशीलता की संपदा मानव को सहज उपलब्ध है। अपेक्षा है उसका सम्यक् उपयोग और विकास कर जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करें। उजालों का स्वागत करें। दीपावली की रात भारत भूमि पर आसमान उतर आता है। ज्यों आकाश में तारे टिमटिमाते हैं, सो उस रात धरा पर दिए टिमटिमाते हैं। चांद से रीती इस रात का हर पक्ष उजला है। अमावस कहकर कोई याद नहीं रखता इसे। इसमें इतना उजास जो है। कहते हैं सूनी राह पर, अकेले द्वार पर, कुएं की तन्हा मेड़ पर और उजाड़ तक में दीप रखने चाहिए। कोई भूले-भटके भी कहीं किसी राह पर निकले, तो उसे अंधेरा न मिले। इस रात हरेक के लिए उजाले जुटा दिए जाते हैं। अब उजालों के इस अपूर्व एवं अलौकिक पर्व की जगर-मगर में दीपों की माटी कम और लट्टुओं वाली बिजली एवं पटाखों का प्रदूषण अधिक है। वक्त के साथ खुशियों का अहसास तो नहीं बदलता, पर उसकी आमद के जरिए अलग हो जाते हैं। दीपावली पर रोशनी का परचम बुलंद किए हौसलेमंद दिए ज्यों तम के सामने डट जाते हैं, वह एक कालजयी ऐलान है विजय का। इस विजय को पाने एवं मोह का अंधकार भगाने के लिए धर्म का दीप जलाना होगा। जहाँ धर्म का सूर्य उदित हो गया, वहाँ का अंधकार टिक नहीं सकता। एक बार अंधकार ने ब्रह्माजी से शिकायत की कि सूरज मेरा पीछा करता है। वह मुझे मिटा देना चाहता है। ब्रह्माजी ने इस बारे में सूरज को बोला तो सूरज ने कहा-मैं अंधकार को जानता तक नहीं, मिटाने की बात तो दूर, आप पहले उसे मेरे सामने उपस्थित करें। मैं उसकी शक्ल-सूरत देखना चाहता हूँ। ब्रह्माजी ने उसे सूरज के सामने आने के लिए कहा तो अंधकार बोला-मैं उसके पास कैसे आ सकता हूँ? अगर आ गया तो मेरा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

जीवन का वास्तविक उजाला लिबास नहीं है, भोजन नहीं है, भाषा नहीं है और उसकी साधन-सुविधाएं भी नहीं हैं। वास्तविक उजाला तो मनुष्य में व्याप्त उसके आत्मिक गुणों क महक ही है, जो मानवीय बनाते हैं, जिन्हें संवेदना और करुणा के रूप में, दया, सेवा-भावना, परोपकार के रूप में हम देखते हैं। असल में यही गुणवत्ता उजालों की बुनियाद है, नींव हैं जिसपर खड़े होकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाता है। जिनमें इन गुणों की उपस्थिति होती है उनकी गरिमा चिरंजीवी रहती है। समाज में उजाला फैलाने के लिये इंसान के अंदर इंसानियत होना जरूरी है। जिस तरह दीप से दीप जलता है, वैसे ही प्यार देने से प्यार बढ़ता है और समाज में प्यार और इंसानियत रूपी उजालों की आज बहुत जरूरत है। दीपों की कतारें दीपावली का शाब्दिक अर्थ ही नहीं, वास्तविक अर्थ है। कतारों के लिए निरंतरता जरूरी है। और निरंतरता के लिए नपा-तुला क्रम। दीप जब कतार में होते हैं, तो आनंद का सूचक बन जाते हैं। जैसे कोई मूक उत्सव हो- जगर-मगर उजाले का। उजालों की पंक्तियां उल्लास का द्योतक हैं। दीप होते ही प्रेरक हैं। एक बाती, अंजुरी-भर तेल और राह-भर प्रकाश। जितना सादा दीपावली का दीपक होता है, उससे सादा कुछ नहीं हो सकता। माटी ने ज्यों पक-जमकर, बाती के बीज से ज्योत पल्लवित की हो। यह विजय पताका कार्तिक अमावस्या के अंधेरे की पूरी रात दूर रखती है। दीपावली की रात को हर दीप रोशनी की लहर बनाता है, उजालों के समन्दर में अपना योगदान देता है। शेक्सपियर की चर्चित पंक्ति है- 'अगर रोशनी पवित्रता का जीवन रक्त है तो विश्व को रोशनीमय कर दो/ जगमगा दो और इसे जी-भरकर बाहुल्यता से प्राप्त करो।' शेक्सपियर ने यह पंक्ति चाहे जिस संदर्भ में कही हो, पर इसका उद्देश्य निश्चित ही पवित्र था और अनेक अर्थों को लिए हुए यह उक्ति सचमुच में जीवन व्यवहार की स्पष्टता के अधिक नजदीक है। दीपावली का पर्व और उससे जुड़े रोशनी के दर्शन का भी यह उद्घोष है। रोशनी! उत्सव का प्रतीक, खुशी के इज़हार करने का प्रतीक है, सफलता का प्रतीत है। अगर हम इस सोच को गहराई में डुबो लें तो ये सूक्तियां हमारे जीवन की रक्त धमनियां बन सकती हैं और उससे उत्तम व्यवहार की रश्मियां प्रस्फुटित हो सकती है।

# 24 साल में बदल गया बस्तर संभाग, शिक्षा स्वास्थ्य और पर्यटन के क्षेत्र में चमका

**जगदलपुर।** 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेश से अलग होकर नया राज्य छत्तीसगढ़ बना । बस्तरवासियों को अपने कामों के लिए पहले 1500 किलोमीटर दूर राजधानी भोपाल जाना पड़ता था। लेकिन राज्य गठन के बाद बस्तर मुख्यालय जगदलपुर से राजधानी की दूरी 300 किलोमीटर हो गई। आज छत्तीसगढ़ ने अपने 24 साल पूरा कर लिए हैं। इन 24 सालों में पिछड़ा क्षेत्र कहे जाने वाले आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र बस्तर का विकास हो चुका है।

**शिक्षा में कितना बदला बस्तर**- छत्तीसगढ़ राज्य गठन के दौरान बस्तर संभाग में स्कूलों की संख्या काफी कम थी।अंदरूनी क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर नीचे था। अंदरूनी क्षेत्रों में शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए पोटाकेबिन, आश्रम और छात्रावास शुरू किया गया इनमें छात्रों के लिए सुविधाएं मुहैया कराई गई। ताकि अंदरूनी क्षेत्रों के आदिवासी बच्चे इन आश्रम शालाओं में रहकर पढ़ाई पूरी कर सकें। हालांकि इन 24 सालों में कुछ स्कूल बंद हुए। लेकिन कुछ स्कूलों को फिर शुरू किया गया। बेहद अंदरूनी इलाकों में आदिवासी पढ़े लिखे युवाओं को शिक्षादूत सरकार ने बनाया। अभी भी कई स्थानों में झोपड़ी बनाकर शिक्षादूत बच्चों का भविष्य सुधार रहे हैं।

**नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में खुले स्कूल**- नक्सल प्रभावित इलाकों में नए स्कूल खोले गए। ताकि बच्चे पढ़ाई कर सकें। इनमें एक गांव का नाम चांदामेटा शामिल है। हालांकि अभी भी कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां शिक्षा बेहतर तरीके से नहीं पहुंच पाया है। जैसे-जैसे भारत विकसित देश की ओर अग्रसर है। वैसे ही अंग्रेजी पढ़ाई भी आवश्यक हो गई है। अंग्रेजी पढ़ाई महंगे फीस से केवल प्राइवेट स्कूलों में होती थी। लेकिन छत्तीसगढ़ सरकार ने भी अब शासकीय स्कूल में अंग्रेजी माध्यम शुरू कर दिया है। जिसका नाम स्वामी आत्मानंद रखा है। इस तरह बस्तर में शिक्षा पर बदलाव देखने को मिल रहा है।

**स्वास्थ्य में कितना बदला बस्तर**- बस्तर में स्वास्थ्य सुविधा सबसे बड़ी चुनौती है। पिछड़ा क्षेत्र होने के कारण बेहतर तरीके से सुविधा बस्तरवासियों को नहीं मिल पा रही है। हालांकि इन 24 सालों में सरकार सुविधा को बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयास में जुटी हुई है। बस्तर में स्वास्थ्य सुविधा बेहतर करने के लिए एक मेडिकल कॉलेज शुरू किया गया है। जिसमें हजारों छात्र पढ़ाई करते हैं। साथ ही बस्तर में जल्द स्वास्थ्य सुविधा मिले इसके लिए 108 संजीवनी एक्सप्रेस, 102 महतारी एक्सप्रेस और डायल 112 भी शुरू किया गया है। वहीं अंदरूनी इलाकों में जहां चार पहिया एम्बुलेंस नहीं पहुंच पाती है। उन क्षेत्रों के लिए बाइक एम्बुलेंस की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

**सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल का निर्माण**- बस्तर में बड़े बीमारियों के इलाज के लिए रायपुर या पड़ोसी राज्य आन्ध्रप्रदेश के विशाखापटनम लोग जाते हैं। लेकिन लोगों को इलाज बस्तर में ही मिल सके इसके लिए बस्तर के डिमरापाल में एक सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल का निर्माण कराया गया है।अस्पताल फिलहाल अधूरा है। जिसके कारण इसका शुभारंभ नहीं हो पाया है। जिसे जल्द शुरू करने की मांग बस्तर में की जा रही है।

**कनेक्टिविटी में कितना बदला बस्तर**- 24 सालों में बस्तर के सातों जिलों में लगातार सड़कों का निर्माण जारी है। हजारों किलोमीटर सड़कों का निर्माण पूरे बस्तर संभाग में हुआ है। बस्तर में सबसे चैलेंजिंग सड़कें सुकमा-कोंटा, दोरनापाल-जगरगुंडा, पल्ली-बारसूर, नारायनपुर-ओरछा, बीजापुर-बासागुड़ा, जगदलपुर-सुकमा, दंतेवाड़ा-बीजापुर, बीजापुर-भोपालपट्टनम हैं। इसके अलावा ब्लॉक मुख्यालय से ग्राम पंचायतों तक सड़कों का निर्माण संभव हुआ है। हालांकि वर्तमान की स्थिति में कई ऐसे गांव है जो आज भी जुड़ नहीं पाए हैं। आजादी के 77 साल बाद भी सड़क अंदरूनी क्षेत्रों के ग्रामीणों तक नहीं पहुंच पाया है। लेकिन जिस रफ्तार से सरकार सड़क बनाने का कार्य बस्तर में कर रही है। उससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है जल्द ही अंदरूनी क्षेत्रों के ग्रामीणों को सड़क की सुविधा मिलेगी।

**पुल और पुलियों का निर्माण**- वहीं बड़े बड़े पुल-पुलियों का निर्माण बस्तर में हुआ है। ताकि पड़ोसी राज्यों से बस्तर जुड़ सके। इनमें भोपालपट्टनम में इंद्रावती नदी पर बना पुल महाराष्ट्र और तेलंगाना को जोड़ता है। साथ ही अबूझमाड़ के छिंदनार में बना पुल शामिल हैं। वहीं कई छोटे बड़े पुल का निर्माण बस्तर संभाग में हुआ है।

**एयर और रेल से जुड़ा बस्तर**- लंबे अरसे के बाद बस्तर एयर कनेक्टिविटी से जुड़ गया। जिससे अब बस्तरवासी सीधे कनेक्टिंग फ्लाइट से देश के किसी भी राज्य का सफर कर सकते हैं। पहले अलायंस एयर की शुरुआत की गई। और अब बस्तर में इंडिगो ने अपना सेवा शुरू किया है। जो जगदलपुर से रायपुर और जगदलपुर से हैदराबाद के लिए उड़ान भरती है। हालांकि शेड्यूल को लेकर इंडिगो ने जगदलपुर से रायपुर की सेवा बंद की है। जिसे जल्द शुरू करने की मांग बस्तर के जनप्रतिनिधियों और आम नागरिकों ने की है। इसके अलावा रेल सुविधा से भी बस्तर जुड़ गया है। जगदलपुर से रेल पड़ोसी राज्य आंध्रप्रदेश के विशाखापट्टनम और कोलकाता जैसे महानगर से जुड़ गया है। साथ ही इसके अलावा बस्तर को राजधानी रायपुर से जोड़ने के लिए लंबे समय से रावघाट रेल लाइन की मांग की जा रही है। जिसका कार्य 50 प्रतिशत हो गया है।

**पर्यटन के क्षेत्र में कितना बदला बस्तर**- प्रकृति ने बस्तर की खूबसूरती को बारीकी से रचा है। बस्तर में इन 24 सालों में कई पर्यटन स्थल पर्यटकों को मिले हैं। बस्तर में पहले केवल तीरथगढ़, चित्रकोट, तामड़ाघूमर, मेन्द्रीघुमर, कुटुमसरगुफा का ही दीदार पर्यटक करते थे। लेकिन इन 24 सालों में कई पर्यटन क्षेत्र बस्तर में मिले हैं। जिसे देखने के लिए हजारों से संख्या में पर्यटक देश विदेश से बस्तर पहुंचते हैं।

इनमें हांदावाड़ा जलप्रपात, झारालावा जलप्रपात, फुलपाड जलप्रपात, नीलमसरई जलप्रपात, नम्बी जलप्रपात, प्रतापगिरी जलप्रपात, मंडवा जलप्रपात, बिजाकसा जलप्रपात, टोपर जलप्रपात, दंडक गुफा, हरी गुफा, मादरकोंटा गुफा, कैलाश गुफा, मिचनार हिल्स स्टेशन, जैसे कई जलप्रपात और गुफाएं शामिल हैं। इसके अलावा बस्तर की संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए होम स्टे के साथ ही बैम्बू राफ्टिंग, कयाकिंग जैसे एडवेंचर पर्यटन स्थल भी शुरू किया गया है।

**बस्तर में स्टील प्लांट हुआ शुरू**- बस्तर की धरती में कई खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। इनमें सबसे अधिक उत्तम क्वॉलिटी का लौह अयस्क मिलता है। इसके लिए एक बड़ा माइनिंग क्षेत्र दंतेवाड़ा जिले के बैलाडीला की पहाड़ियों पर बना है। जहां से प्रतिदिन हजारों टन लौह अयस्क बाहर निकलता है।

जिसे देखते हुए बस्तर में स्टील का उत्पादन करने के लिए एनएमडीसी से अपना स्टील प्लांट बस्तर जिले में नगरनार में शुरू किया है। इस स्टील प्लांट से उत्पादन काफी बड़ी मात्रा में होने लगी है। स्टील प्लांट से स्थापित होने से बस्तर के लोगों को काफी रोजगार भी मिला है।

# छत्तीसगढ़ में दिखे दक्षिण पूर्व एशिया के दुर्लभ पक्षी

■ **कचरा साफ करने में करते हैं मदद**

**खैरागढ़।** दुनियाभर में पक्षियों की लगभग 11 हजार प्रजातियां हैं। लेकिन आज हम आपको बताने जा रहे हैं एक ऐसे पक्षी के बारे में, जो प्रकृति के लिए बेहद महत्वपूर्ण काम करता है। हम बात कर रहे हैं लेसर एडजूटेंट स्ट्रॉक पक्षी की। ये काफी दुर्लभ प्रजाति के पक्षी होते हैं जो प्राकृतिक कचरे को साफ करने का काम करते हैं। छत्तीसगढ़ के सूरजपुर ज़िले के नवापारा खुर्द गांव के किसान ठाकुर सिंह का आंगन इन दिनों इस दुर्लभ लेसर एडजूटेंट स्ट्रॉक का प्रिय ठिकाना बना हुआ है।

बता दें लेसर एडजूटेंट स्ट्रॉक पक्षी मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया के दलदली क्षेत्रों और आर्द्रभूमि में पाए जाते हैं। ये मछलियों के साथ मरे हुए छोटे जानवरों को खाकर पर्यावरण में संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं, इसलिए इन्हें प्राकृतिक कचरा-सफाई पक्षी भी कहा जाता है। घटती संख्या के कारण इसे IUCN की vulnerable मतलब असुरक्षित श्रेणी में रखा गया है, और इसके संरक्षण के लिए प्रयास जारी हैं।

पिछले 15 साल से ये संरक्षित पक्षी ठाकुर सिंह के आंगन में लगे पेड़ो पर अपना घोंसला बना रहे हैं। ठाकुर सिंह और गांव के लोग न केवल इनका ख्याल रखते हैं, बल्कि शिकारियों से भी इनका बचाव करते हैं। सेमर के फल से मिलने वाले हजारों का लाभ भी ठाकुर सिंह खुशी-खुशी इन पक्षियों के लिए छोड़ देते हैं,पर्यावरण के लिए इनका ये प्रेम

बहुत ही सराहनीय है।

छत्तीसगढ़ में पहली बार 2018 में ए एम के भरोस और डी। दीवान ने इस दुर्लभ पक्षी के इस गांव में निवास पर रिपोर्ट प्रकाशित की थी, जिसमें पाया गया कि ठाकुर सिंह के आंगन के बरगद के पेड़ पर चार घोंसले बने थे। अब 2024 में एक नई रिपोर्ट, जो कि एंबिएंट साइंस में प्रतीक ठाकुर, रवि नायडू, डॉ। हिमांशु गुप्ता और ए एम के भरोस द्वारा प्रकाशित हुई, इसमें एक और चौंकाने वाला तथ्य उजागर किया है। अब ये स्ट्रॉक पक्षी और चमगादड़ एक ही पेड़ पर बसेरा कर रहे हैं। पेड़ के ऊपरी हिस्से में स्ट्रॉक ने अपना घोंसला बना रखा है, और नीचे की ओर चमगादड़ों का निवास है। यह दृश्य पक्षी प्रेमियों और वैज्ञानिकों को बेहद रोमांचित कर रहा है।

रिसर्च करने वाले लेखकों का मानना है कि इन दोनों प्रजातियों का एक ही पेड़ पर रहवास दोनों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभाव डाल सकता है। इस स्थिति के गहरे वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है ताकि इस असामान्य मेलजोल के कारण और प्रभाव समझे जा सकें।

इस क्षेत्र में लेसर एडजूटेंट स्ट्रॉक के घोंसलों की संख्या में गिरावट देखी जा रही है। जहां 2017 में इनकी संख्या 5 थी, वहीं 2022 से 2024 तक यह घटकर दो पर आ गई है। विशेषज्ञों का मानना है कि ये पक्षी हर कुछ वर्षों में अपने घोंसले की जगह बदल लेते हैं, इसलिए आसपास के क्षेत्रों में सर्वेक्षण की आवश्यकता है ताकि इन संरक्षित पक्षियों को ट्रैक कर उनकी देखभाल की जा सके।

छत्तीसगढ़ का यह छोटा गाँव आज एक बड़ा संदेश दे रहा है। प्राकृतिक संसाधनों को त्याग कर इन अनमोल पक्षियों को सुरक्षित ठिकाना देना, इंसान और प्रकृति के बीच की मजबूत साझेदारी का प्रतीक बन गया है। इस अध्ययन में छत्तीसगढ़ में एक अनोखा दृश्य देखा गया, दुर्लभ लेसर एडजूटेंट स्टॉर्क और चमगादड़ एक ही पेड़ पर रह रहे हैं। पिछले 15 सालों से ठाकुर सिंह के आँगन में ही ये पक्षी अपना घोंसला बना रहे हैं, और हाल ही में इस आँगन में 250 से ज्यादा चमगादड़ भी रहने लगे हैं। यह रहवास खास है, क्योंकि ये दोनों प्रजातियां आमतौर पर अलग-अलग रहती हैं। चमगादड़ की नियमित उड़ान व्यवहार इन पक्षियों के घोंसले की सुरक्षा में मददगार हो सकता है। शोधकर्ता मानते हैं कि इनके साथ रहने के फायदे और नुकसान को समझने के लिए आगे और अध्ययन करना जरूरी है।

## केले का पौधा किसानों को बना सकता है लखपति

**बिलासपुर।** बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल कृषि महाविद्यालय के प्रयोगशाला में टिशू कल्चर तकनीक से वैज्ञानिकों ने ऐसा केला पौधा तैयार किया है, जो किसानों को कम खर्च में अधिक मुनाफा दे सकता है। कृषि महाविद्यालय द्वारा किसानों को यह पौधा मात्र 14 रूपए में उपलब्ध करवाया जा रहा है, जिससे किसान केले की उच्च पैदावार और अच्छी गुणवत्ता प्राप्त कर सकते हैं। इस तकनीक से तैयार केले के पौधे न केवल किसानों की आमदनी बढ़ाने में सहायक होंगे, बल्कि उनकी खेती को रोगमुक्त और लाभकारी भी बनाएंगे। वैज्ञानिक तरीके से तैयार ये पौधे खेत में लगाने के बाद एक समान आकार और अच्छी गुणवत्ता वाले फल प्रदान करते हैं, जिससे किसानों की उपज और आमदनी में बढ़ोतरी होती है। टिशू कल्चर से तैयार केले के पौधे सामान्य पौधों की तुलना में डेढ़ से दो गुना अधिक पैदावार देते हैं। 6-9 महीने में पौधे की वृद्धि और 12-18 महीने में फलों का निर्माण पूरा हो जाता है। इसके फल जल्दी पकते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता से लैस होते हैं, जिससे किसानों को अधिक मुनाफा होता है।

# राम जी के ननिहाल कौशल्या धाम में आज मनेगी दिवाली

## अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के बाद चंदखुरी में पहली दीपावली

**रायपुर।** दीपावली का त्योहार कुछ जगहों पर गुरुवार को तो कुछ जगहों पर आज मनाया जाएगा। प्रभु श्री राम के ननिहाल चंदखुरी में दीपावली का त्योहार शुक्रवार को बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। शुक्रवार को मनाए जाने वाले दीपावली के त्योहार को लेकर चंदखुरी में सारी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। राम जी के ननिहाल में कौशल्या माता धाम में दीपोत्सव को लेकर लोगों के बीच काफी उत्साह है। दीपोत्सव की तैयारियां अपने अंतिम चरण में है।

कौशल्या धाम मंदिर के पुरोहित विकास कुमार ने मीडिया से बातचीत के दौरान बताया कि कौशल्या धाम मंदिर में दीपावली शुक्रवार को मनाई जाएगी। शाम 6:00 से 7:00 बजे के बीच में दीपावली का मुहूर्त है। शुभ मुहूर्त में मंदिर में दीपावली के लिए दीप प्रज्वलित की जाएगी। पुजारी विकास कुमार ने बताया की तारीख और गणना में जो भी चीज रही हो लेकिन कौशल्या धाम मंदिर के लिए जो शुभ मुहूर्त निकाला गया है वह शुक्रवार का ही माना गया है। शुक्रवार को ही यहां पर दीपावली मनाई जाएगी।

पुरोहित विकास कुमार ने कहा दीपावली को लेकर के मंदिर परिसर में साफ सफाई और साज सज्जा का काम किया जा रहा है। प्रभु श्री राम के ननिहाल कौशल्या धाम में मंदिर परिसर में दीपावली शुक्रवार को 6 से 7 बजे के बीच शुरू होगी और शुक्रवार को ही यहां दीपावली मनाई जाएगी।

कौशल्या धाम मंदिर में इस बार की दीपावली काफी अहम होगी। अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद कौशल्या धाम ये पहली दीपावली होगी जब राम मंदिर अपने मंदिर में विराजे हुए हैं। दीपावली का उत्सव खूब धूमधाम से मनाए जाने की तैयारियां यहां चल रही हैं। मंदिर के पुजारी विकास कुमार ने बताया कि जिस रीति रिवाज से यहां पर दीपावली मनाई जाती है उसी रीति रिवाज से हां दीपावली मनाई जाएगी।

## छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

### पुलिस स्मृति दिवस समारोह का समापन

**रामानुजगंज।** बारहवीं बटालियन कैंप में पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर 21 अक्टूबर से लेकर 31 अक्टूबर तक कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें खेलकूद समेत कई कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती पर बटालियन के जवानों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई गई। साथ ही बच्चों को पुरस्कार वितरण के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। रामानुजगंज स्थित बारहवीं बटालियन कैंप में पुलिस स्मृति दिवस पर लगातार दस दिनों तक क्रिकेट, दौड़ प्रतियोगिता रस्सीकूद, फुटबॉल समेत खेलकूद का आयोजन हुआ। जिसमें बटालियन के जवानों और बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित एवं प्रोत्साहित किया गया। 31 अक्टूबर को देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के मौके पर राष्ट्रीय एकता दिवस पर राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने बारहवीं बटालियन कैंप में जवानों को शपथ दिलाई गई। बता दें कि सरदार पटेल की जयंती 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई जाती है।

### दुर्ग में दिवाली पर बड़ी वारदात पड़ोसियों के विवाद में हत्या

दुर्ग। छोटी दिवाली पर दुर्ग में एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई। हत्या की इस वारदात के पहले काफी विवाद हुआ। उसके बाद घटना को अंजाम दिया गया। त्योहार पर हुई इस घटना से पूरे इलाके में दहशत का माहौल है। मोहन नगर थाना के उरला की घटना है। यहां राजपूत परिवार और मानिकपुरी परिवार आपस में पड़ोसी है। छोटी दिवाली की देर शाम दोनों परिवारों के बीच काफी झगड़ा हुआ। बताया जा रहा है कि दोनों परिवारों के बीच लंबे समय से आपसी विवाद था। इसी विवाद में बुधवार को काफी विवाद हुआ। मामला गाली गलौज से शुरू होकर हाथापाई तक पहुंच गया। विवाद इतना बढ़ गया कि खेलदास मानिकपुरी, छममन दास मानिकपुरी और एक महिला ने लाठी डंडे से भूपेंद्र सिंह राजपूत को बुरी तरह पीट दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। भूपेंद्र सिंह राजपूत को तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। हत्या की घटना की सूचना मिलते ही मोहन नगर थाने की पुलिस मौके पर पहुंची।

### दिवाली मिलन कार्यक्रम में रमन सिंह बेमेतरा पहुंचे

**बेमेतरा।** छत्तीसगढ़ के विधानसभा अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह कवर्धा प्रवास के दौरान बेमेतरा रेस्ट हाउस में रुके। रमन सिंह ने भाजपा के कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। दिवाली के मौके पर रमन सिंह ने बेमतरावासियों को बधाई दी। इस दौरान बेमेतरा के भाजपा कार्यकर्ताओं ने आतिशबाजी और फूल बारिश कर उनका अभिनंदन किया है। बेमेतरा रेस्ट हाउस में विधानसभा अध्यक्ष रमन सिंह ने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि दिवाली का अवसर है। पूरे प्रदेश में देश में दिवाली का पर्व मना रहे हैं। बेमेतरा से मेरा शुरू से ही लगाव रहा है। यहां मैंने पढ़ाई की है, यहां मैंने क्रिकेट खेला है। काफी दिन मैंने यहां समय निकाला। इसीलिए सभी से मेरे नजदीकी संबंध रहा है। महेश तिवारी के समय से क्षेत्र में मेरा लगातार मेरा संपर्क रहा है। दिवाली पर बेमेतरा के सभी लोगों से मुलाकात हुई। सभी को शुभकामनाएं। पथर्रा एथेनॉल फैक्ट्री को लेकर हो रहे विरोध को लेकर रमन सिंह ने कहा लोगों ने अपनी पीड़ा बताई हैं। मुझसे मुलाकात की। उनकी बातों को मुख्यमंत्री तक पहुंचाऊंगा।

### आंख में संक्रमण वाले मरीजों की संख्या बढ़कर 17 हुई

**दंतेवाड़ा।** दंतेवाड़ा में मोतियाबिंद ऑपरेशन के बाद आंख में संक्रमण की शिकायत वाले मरीजों की संख्या 14 से बढ़कर 17 हो गई है। आपरेशन के बाद संक्रमण बढ़ने पर मरीजों को रायपुर रेफर किया गया था। जिनका इलाज आंबेडकर अस्पताल में चल रहा है। अस्पताल में भर्ती मरीजों में से 14 मरीजों का संक्रमण धीरे-धीरे कम हो रहा है। डाक्टरों ने अनुमान लगाया है कि इन मरीजों की रोशनी वापस आ जाएगी। वहीं तीन मरीजों की रोशनी वापस आने में अभी भी संशय बना हुआ है। ऑल इंडिया आप्थोल्मोलाजिकल सोसायटी (एआईओएस) की टीम आंबेडकर अस्पताल पहुंची। भर्ती मरीजों के आंखों की जांच की। टीम में डा. उदय गाजीवाला (अध्यक्ष एआइओएस एडवर्स इवेंट्स रिपोर्टिंग कमेटी), डा. अरविंद कुमार मोर्या (राष्ट्रीय संयोजक, एआईओएस एडवर्स इवेंट्स रिपोर्टिंग समिति), डा. प्रशांत केशाओ बावनकुले (शैक्षणिक एवं अनुसंधान समिति एआईओएस एवं रेटिना विशेषज्ञ) शामिल है।

### सीसीएफ के पास पहुंचे रेल अफसर

**बिलासपुर।** बिना अनुमति कटाई का यह मामला हाई कोर्ट के संज्ञान में लेने का बाद बेहद गंभीर हो गया है। रेलवे में 267 वृक्षों की कटाई के मामले में बिलासपुर सीसीएफ ने आवश्यक दस्तावेज के साथ तलब होने के लिए कहा है। उन्होंने यह पत्र जनरल मैनेजर के नाम भेजा है। इसमें 30 सितंबर की शाम चार बजे तक उपस्थित होने के लिए कहा गया है। इस पर चार अधिकारी सीसीएफ कार्यालय पहुंचे। सीसीएफ प्रभात मिश्रा के समक्ष उपस्थित होने के बाद अधिकारियों को रेलवे को भूमि के स्वामित्व संबंधी अभिलेख, परियोजना का प्रस्ताव, सक्षम अधिकारी द्वारा अनुमोदित प्राक्कलन व वृक्षों की कटाई के संबंध में लिए गए निर्णय, वृक्षों की प्रजाति व संख्या के संबंध में प्रमाणित अभिलेख के साथ वृक्ष कटाई के संबंध में प्राप्त आदेश के साथ उपस्थित होना था। लेकिन रेल अफसरों के बाद परियोजना प्रस्ताव के अलावा कोई भी पुख्ता दस्तावेज नहीं थे। अधिकारी ने 2023 में प्रकाशित राजपत्र भी दिखाया उसमें भी कही भी स्पष्ट नहीं है कि विभाग किसी कार्य के लिए कितने पेड़ काट सकता है।

# बस्तर राजपरिवार ने निभाई राजा दियारी परंपरा

## बस्तर राजपरिवार ने दिवाली के दौरान पुरातन काल से चली आ रही परंपरा का निर्वहन किया

**बस्तर।** पूरे भारत देश में आज दिवाली का त्योहार मनाया जा रहा है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र बस्तर में दिवाली बाजार सज चुका है। बस्तर के आदिवासी अपने पालतू मवेशियों को नए फसल का खिचड़ी खिलाकर इस उत्सव को मनाते हैं। जिसे दियारी कहा जाता है। दरअसल भगवान राम के वापस आने और समुद्र मंथन में देवी लक्ष्मी के प्रकट होने की तिथि के दिन दिवाली मनाने की परंपरा है। इस परंपरा का निर्वहन राज परिवार भी करता है।इसीलिए बस्तर के आदिवासी दिवाली को राजा दियारी कहते हैं।

राजा दियारी के दिन राजा अपने राजमहल से पैदल निकलकर शहर के संजय मार्केट और गोल बाजार का चक्कर

लगाते हैं। स्थानीय आदिवासियों के हाथों से बने दिये, टोरा का तेल, कपास, फूल, लाई, चिवड़ा, गुड़िया खाजा जैसे कई सामानों की खरीदी करते हैं। जिसे आदिवासी अपने हाथों से तैयार करते है। आदिवासी अपने खेतों में फसल उगाकर जो सामान तैयार करते हैं वो भी बेचने के लिए बाजार में आते हैं।राजा दो से तीन घंटे पूरे बाजार में घूमकर वापस राजमहल में जाते हैं और दीवाली का त्योहार मनाते हैं।

खरीदी के दौरान राजा को स्थानीय आदिवासी अपने हाथों से गूंथे फूल माला पहनाकर स्वागत करते हैं। इस परंपरा को आज बस्तर राजपरिवार सदस्य कमलचंद ने बखूबी निभाया। बस्तर राजपरिवार सदस्य कमलचंद भंजदेव ने बताया कि राजपरिवार के इतिहास के समय से ही जगदलपुर में बाजार बैठता था। पूर्वज यहां उपस्थित होकर सामग्री खरीदी करके दीवाली मनाते आए हैं।

कमल भंजदेव ने कहा पूर्वजों की परंपरा का निर्वहन लंबे समय से करते आया हूं। पूरा मार्केट घूमकर कुम्हारों से दीया और अन्य मिट्टी की आकृति की खरीदी की गई। इसके अलावा पनारीन के गूंथे गए फूल माला की खरीदी की गई। इसी माला को मैंने पहना है। इसके पीछे का उद्देश्य यह है कि स्थानीय लोगों के हाथों से बने सामग्री की खरीदी को प्रोत्साहन मिले। ताकि स्थानीय आदिवासियों के जेब मे पैसा आए। जिससे उनका दिवाली अच्छा हो। इसके अलावा अपील करते हुए कहा कि सभी को स्थानीय लोगों से द्वारा निर्मित फूलमाला, दीया, कलाकृति, मिठाई, बतासा की खरीदी करें।

# लोमड़ी का आतंक, छह लोगों पर किया हमला

■ **वन विभाग पर भारी आक्रोश; दहशत में जीने को मजबूर ग्रामीण**

**कोरबा।** विकासखंड पाली के ग्राम बतरा और पोड़ी में लोमड़ी ने छह लोगों पर हमला कर दिया। घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती किया गया है। इस घटना से गांव के लोग डरे हुए हैं।

क्षेत्र में लोमड़ी के हमले से ग्रामीणों में वन विभाग को लेकर नाराजगी भी है। ग्रामीणों ने बताया कि काटने से सभी छह लोग घायल हो गए। घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाली में भर्ती कराया गया है। पोड़ी निवासी गीता बाई जंगल की ओर गई थी।

इसी दौरान लोमड़ी ने हमला कर घायल कर दिया। वहीं नगराहीपारा से 3 लोगों में एक बुजुर्ग व दो बच्चे शामिल हैं। इसमें योगेश कुमार राज (11)वर्ष, अंश वीर मरावी (11)वर्ष व बुजुर्ग लाला राम मरावी (75)वर्ष शामिल हैं। सोनसरी निवासी राजेंद्र कुमार टेकाम (13) वर्ष व रितु कुमारी (11) वर्ष को गांव से लगे नदी किनारे लोमड़ी ने हमला

कर घायल कर दिया। घायलों को पाली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है।

बतरा सरपंच रामायण देवी खुसरो ने पाली वन परिक्षेत्र अधिकारी संजय लकड़ा को इसकी जानकारी दी। वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। ग्रामीणों ने बताया कि लोमड़ी जंगल में जा घुसा है। वन विभाग ने आसपास के गांवों में मुनादी कराकर लोगों को सतर्क किया है। लोमड़ी पागल हो गई है। जिसकी वजह से अलग-अलग स्थानों पर हमला कर रहा है। विभाग की ओर से घायलों को 500 रुपए तात्कालिक सहायता राशि दी गई है।

# भारत के लिए कैसा रहा बाइडन का कार्यकाल?

**सुरेंद्र कुमार**

वर्ष 2019 में ह्यूस्टन के एनआरजी स्टेडियम में हाउडी मोदी के मंच से उठी एक टैग लाइन : अबकी बार ट्रंप सरकार, को प्रधानमंत्री मोदी की तत्कालीन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रति समर्थन के रूप में समझा गया था, जिससे कुछ हलकों में यह चिंता पैदा हो गई थी कि यदि बाइडन राष्ट्रपति बने, तो वह इसे नकारात्मक रूप से ले सकते हैं। यह बात निराधार साबित हुई; छह जनवरी 2025 को समाप्त होने वाला बाइडन का कार्यकाल कोविड महामारी के चलते लंबे व्यवधानों के बावजूद भारत-अमेरिका संबंधों के लिए बहुत परिवर्तनकारी रहा है। मोदी के साथ उनके व्यक्तिगत रिश्ते उल्लेखनीय रूप से सकारात्मक रहे हैं, जिसमें अचूक गर्मजोशी, मिलनसारिता और स्पष्टवादिता है।

माना जाता है कि 2006 में अमेरिकी सीनेट की विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए सीनेटर बाइडन ने कहा था, 'मेरा सपना है कि 2022 में दुनिया के दो सबसे करीबी देश भारत और अमेरिका होंगे।' काफी हद तक उन्होंने अपने सपने को जीया है। डेलावेयर में प्रधानमंत्री मोदी ने 'भारत-अमेरिका साझेदारी को गति देने में राष्ट्रपति बाइडन के अद्वितीय योगदान के लिए प्रशंसा की।' मोदी 21 सितंबर को क्वाड शिखर सम्मेलन में भागीदारी के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन से उनके निजी आवास पर आठवीं बार व्यक्तिगत रूप से मिले; वे वर्चुअल रूप से भी मिले हैं। ओबामा के कार्यकाल के बाद से भारत-अमेरिका व्यापार में तेजी देखी जा रही है।

वर्ष 2023 में अमेरिका से भारत का हाइड्रोकार्बन आयात 13.4 अरब डॉलर तक पहुंच गया। पिछले साल तक, अमेरिकी कंपनियों ने भारत में लगभग 60 अरब डॉलर का निवेश किया, जिससे लगभग 2,50,000 नौकरियां पैदा हुई हैं। रक्षा समझौते के तहत रसद विनिमय ज्ञापन समझौता; संचार संगतता और सुरक्षा समझौता, औद्योगिक सुरक्षा समझौता और 2016-2020 के बीच हस्ताक्षरित बुनियादी विनिमय और सहयोग समझौते ने दोनों देशों की सेनाओं और त्रि-सेवाओं और विशेष बलों के बीच संचार और अंतर-संचालन क्षमता को काफी बढ़ाया है। जनवरी 2023 में शुरू किए गए आईसीईटी (उभरती और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों) पर समझौता बाइडन के कार्यकाल के सबसे परिवर्तनकारी मील के पत्थर के रूप में जाना जाएगा।

दोनों देशों के एनएसए की अगुवाई में यह पहल कई क्षेत्रों में तकनीकी सहयोग का प्रेरक इंजन होगी = कृत्रिम बुद्धिमता (एआई), क्वांटम टेक्नोलॉजीज, साइबर, 5जी, 6जी, बायोटेक, रक्षा, अंतरिक्ष, सेमीकंडक्टर और कई अन्य।?बाइडन के कार्यकाल का एक अन्य परिवर्तनकारी पहलू यह है कि उनके प्रशासन ने भारत पर भरोसा जताया है और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी हस्तांतरित करने की अभूतपूर्व इच्छा दिखाई है। मोदी की राजकीय यात्रा के दौरान माइक्रोन ने गुजरात में सेमीकंडक्टर संयंत्र लगाने और परीक्षण सुविधा की घोषणा की थी। जुलाई 2023 में माइक्रोचिप ने भारत में अपने परिचालन का विस्तार करने के उद्देश्य से 30 करोड़ डॉलर के निवेश की घोषणा की।

21 सितंबर को प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति बाइडन के बीच द्विपक्षीय वार्ता के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा की खातिर सेमीकंडक्टर के लिए दुनिया की पहली मल्टी-मटेरियल फैब्रिकेशन यूनिट स्थापित करने के लिए एक अहम?समझौता हुआ। ग्रेटर नोएडा के जेवर में स्थित यह नई फैब्रिकेशन यूनिट उच्च प्रौद्योगिकी युद्ध में इस्तेमाल होने वाले चिप बनाएगी। यह प्रौद्योगिकी साझेदारी भारत को उन चुनिंदा देशों के समूह में शामिल करेगी, जिनके पास ऐसे चिप को अपने देश में बनाने की क्षमता होगी। अगर जॉर्ज बुश जूनियर को भारत के साथ असैन्य परमाणु समझौते के लिए याद किया जाता है, तो बाइडन को चिप निर्माण समझौते में उनके योगदान के लिए याद किया जाएगा। यूक्रेन पर रूसी हमले की निंदा करने से भारत के लगातार इन्कार ने बाइडन प्रशासन को परेशान कर दिया था। हालांकि, धीरे-धीरे उन्हें रूस की निंदा न करने और उससे अत्यधिक छूट वाले तेल खरीदने के भारत के फैसले का औचित्य समझ में आ गया। एक वरिष्ठ अमेरिकी सचिव ने महसूस किया कि भारत द्वारा रूसी तेल की खरीद ने अंतरराष्ट्रीय तेल की कीमतों को स्थिर करने में मदद की है। बाइडन ने मोदी की सलाह की?सराहना की कि 'यह युद्ध का युग नहीं है'। बाइडन गलवान घाटी में चीनी आक्रामकता की आलोचना करते रहे हैं। अमेरिका ने चीन के खतरे का मुकाबला करने के लिए सैटेलाइट इमेजरी और अन्य तरीकों से भारत की मदद की थी। बाइडन ने कहा था, 'प्रधानमंत्री मोदी के साथ जब भी हम बैठते हैं, तो मैं सहयोग के नए क्षेत्रों को खोजने की हमारी क्षमता से प्रभावित होता हूं।' बाइडन-मोदी ने ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ लड़ाई और हरित ऊर्जा के दोहन में सहयोग बढ़ाया है।

# देशभर में दिवाली की धूम, जगमग हुआ सारा नजारा, जले खुशियों के दीप, पटाखों की धूम

**नई दिल्ली।** आज पूरे देश में जबरदस्त तरीके से दीपावली मनाया जा रहा है। अंधियारे में उजाले के प्रतीक के रूप में यह त्योहार भारत के प्राचीन ने त्योहारों में से एक है जो लोगों में नई उत्साह और उमंग भर देता है। आज जबरदस्त तरीके से दिवाली के मौके पर क्या शहर, क्या गांव, क्या गली, सारा जहां जगमग दिखाई दे रहा है। दिल्ली हो या फिर मुंबई, हैदराबाद हो या फिर चेन्नई, पटना हो या फिर गुवाहाटी, हर जगह दीपावली धूमधाम से मनाई जा रही है। नेता हो या व्यापारी, आम इंसान हो या कोई बड़ा कारोबारी, सभी के घरों में दीपावली की रौनक है। आज महालक्ष्मी और गणेश भगवान की भी जगह-जगह पूजा हो रही है।

प्रदूषण की समस्या के बीच आतिशबाजी के भी शोर सुनाई दे रहे हैं। हालांकि दिल्ली में इस बार प्रभाव अब तक कम है। लेकिन दूसरे राज्यों से जबरदस्त आतिशबाजी की भी खबरें आ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की और उन्हें दिवाली की शुभकामनाएं दीं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कोलकाता में अपने आवास पर काली पूजा और दिवाली पर पूजा-अर्चना की। श्रीनगर के लाल चौक पर दिवाली का जश्न चल रहा है। पश्चिमाम्नाय शारदा पीठम द्वारा आयोजित इस उत्सव में स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों की भागीदारी देखी जा रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को गुजरात के कच्छ में तैनात सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों के साथ दिवाली मनाई। प्रधानमंत्री ने बीएसएफ की वर्दी में कच्छ में सर क्रीक क्षेत्र के लक्की नाला में सेना, नौसेना और वायु सेना के जवानों के बीच मिठाइयां बांटीं। 2014 में सत्ता में आने के बाद से पीएम मोदी ने देश के विभिन्न स्थानों पर सैन्य कर्मियों के साथ दिवाली मनाने की परंपरा बनाई है।

हर साल, मोदी सैन्य सुविधाओं का दौरा करते हैं, जहां वह सैनिकों के साथ बातचीत करते हैं और त्योहार मनाते हैं।

इससे पहले दिन में, प्रधान मंत्री ने एक एक्स पोस्ट में भारत के लोगों को दिवाली की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, देशवासियों को दीपावली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। रोशनी के इस दिव्य त्योहार पर, मैं सभी के स्वस्थ, सुखी और समृद्ध जीवन की कामना करता हूं। मां लक्ष्मी और भगवान श्री गणेश के आशीर्वाद से सभी समृद्ध हों।

# गौरवबोध का दिन है दीपावली

## लक्ष्मी का उपयोग होता है, उपभोग के दुस्साहस पर रावण जैसी दुर्गति

**दीपक कुमार शर्मा**

दीपावली भारतीय मनोभूमि से प्रकट हुआ ऐसा अनोखा पर्व है, जिसका संबंध रोशनी से है। रोशनी शब्द ईरानी है, पर इसका मूल संस्कृत रूप रोचना है, जिसका तात्पर्य है द्युति। इससे माता लक्ष्मी का एक नाम रोचनावती पड़ा। रोशनी से भारत का सनातन संबंध है। ऋग्वेद का आरंभ अग्नि शब्द से हुआ है, जो प्रकाश का मूर्तिमान स्वरूप है। इससे ही दीपों की माला के त्योहार का सृजन हुआ है। दीपावली शब्द दो शब्दों से बना है दीप और आवलि, जिसका अर्थ है दीपों की पंक्ति। दीपावली मिट्टी से बने दीपों का पर्व है, जिन्हें मानव ने अपनी कर्म साधना से बनाया है। दीप वैदिक यज्ञ संस्कृति का लघु स्वरूप है। यह दीप वास्तव?में माता लक्ष्मी का मुख है। दीपावली में अनेक धर्म-साधनाएं, विश्वास और आचार पद्धतियां अपनी स्मृतियां बनाए हुए हैं। दीपावली की रात पूजी जा रहीं माता लक्ष्मी वेद-पुराणों के साथ ही बौद्ध साहित्य में आचार्या, भगवती, भट्टारिका और महाचार्यश्री विशेषणों के साथ उपस्थित हैं। यक्षपूजा से बौद्ध और शाक्त मार्ग में 'श्री-सुंदरी' की साधना का प्रवेश हुआ है और यक्ष संस्कृति के दीपदान का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन ही दीपावली है।

भारतरत्न डॉ. पांडुरंग वामन काणे ने धर्मशास्त्र का इतिहास में दीपावली के सुखरात्रि, यक्षरात्रि तथा सुखसुप्तिका नाम लिखे हैं। यह किसी देव या देवी के सम्मान में किया गया केवल एकदिवसीय उत्सव नहीं है, बल्कि पांच दिनों तक चलता है और इसमें अनेक कृत्य संपादित होते हैं।

धन पूजा, नरक चतुर्दशी, हनुमान जयंती, अन्नकूट तथा भाईदूज। इनमें सबसे खास है भगवती महालक्ष्मी की पूजा। लक्ष्मी जी का संबंध मात्र धन से ही नहीं, बल्कि उनकी पवित्रता से भी है, क्योंकि लक्ष्मी अशुद्ध, अपवित्र और अप्राकृतिक से कभी नहीं जुड़ती। लक्ष्मी भगवान नारायण के साथ प्रतिष्ठित हैं। शास्त्रों में वे श्री, शोभा, समृद्धि और सौभाग्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वात्स्यायन के कामसूत्र में दीपावली 'यक्ष-रात्रि' है। यक्ष-रात्रि से तात्पर्य है कि इस दिन यक्षराज कुबेर की पूजा होती थी। दीपावली के साथ यक्षों के जुड़ने का तात्पर्य ऋग्वेद के श्रीसूक्त से स्पष्ट है। इसके एक मंत्र में 'मणिना सह' शब्द का प्रयोग है, जिसका संबंध यक्षों द्वारा किए जाने वाले 'मणिभद्र यज्ञ' से है। महाभारत में मणिभद्र एक यक्ष हैं, जो यक्षस्वामी कुबेर के साथ वर्णित हैं। यक्षों से संबंध होने से कामसूत्र ने दीपावली को यक्ष रात्रि कहा है।

शास्त्र दीप को निर्जीव नहीं, वरन देवता मानते हैं-भो दीप देवरूपस्त्वम्...। दीप के देवता में परिवर्तित हो जाने का एक सुंदर इतिहास है। पुराकाल में अग्नि को बचाए रखने के तमाम उपायों में दीप सबसे आसान तरीका था। वह सहारा था जीवन का और लौकिक व्यवहारों का। आचार्य यास्क के अनुसार, 'भरत' का अर्थ आदित्य है और उससे उत्पन्न प्रजा 'भारती' है। इस प्रकार भारत शब्द का अर्थ है सूर्य संतान यानी प्रकाश की प्रजा। हमारे देश भारत का मतलब ही प्रकाश में रत है, जो प्रकाशोत्सव मनाता है। वेद कहते हैं कि माता लक्ष्मी सुखी दांपत्य, स्वादिष्ट अन्न, लहलहाती फसल तथा गौ माता से जुड़ी है। दीपावली मनुष्य के लिए गौरव बोध का पर्व है। आचार्य कुबेरनाथ राय दीपावली को मनुष्य के हाथों अंधकार पर विजय की रात्रि मानते हैं। धरती की बेटी माता सीता के सगे भाई हैं ये दीप। लक्ष्मी का उपयोग होता है, उपभोग नहीं। जो उसके उपभोग का दुस्साहस करता है, वह रावण जैसी दुर्गति को प्राप्त होता है।

# दिवाली पर अहंकार मिटाने वाली रोशनीः प्रकाश आपके भीतर... मानव अस्तित्व में स्पष्टता सबसे अहम, मन के बादल हटाएं

दिवाली रोशनी का त्योहार है। प्रकाश महत्वपूर्ण क्यों है, इसका एक कारण हमारा दृश्य तंत्र है। अन्य प्राणियों के लिए यह जीवन जीने के लिए एक प्रकाश मात्र है। लेकिन मनुष्य के लिए प्रकाश का मतलब केवल देखना नहीं है। हमारे जीवन में प्रकाश का उदय एक नई शुरुआत है। अधिकांश प्राणी सहज ज्ञान से जीवित रहते हैं, इसलिए उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं करना है। आप भले ही एक इन्सान के रूप में पैदा हुए हों, लेकिन एक अच्छा इन्सान बने रहने के लिए आपको बहुत-सी चीजें करनी पड़ती हैं।

मानवीय बुद्धि ऐसी है कि अगर इसे सही तरीके से व्यवस्थित नहीं किया जाए, तो यह उन प्राणियों की अपेक्षा अधिक भ्रम और दुख का कारण बनती है, जिनके पास आपके मस्तिष्क का दस लाखवां हिस्सा है। वे बिल्कुल स्पष्ट लगते हैं।

अगर आपको कोई कुछ बोले भी नहीं और आप स्वयं ही चिंतित रहते हैं, तो इसका सीधा-सा मतलब है कि आपकी बुद्धि आपके खिलाफ काम कर रही है। मानव अस्तित्व के लिए स्पष्टता सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिए प्रकाश महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका मतलब ही स्पष्टता है। दिवाली का त्योहार स्पष्टता को समर्पित है। दिवाली पर आप देखेंगे कि हजारों दीयों से गांव से लेकर शहर तक जगमगा उठते हैं। दिवाली मनाने का मतलब केवल बाहर दीये जलाना नहीं है, बल्कि अंदर के अंधकार को दूर करने के लिए भी रोशनी होनी चाहिए। रोशनी का मतलब स्पष्टता है, इसके बगैर आपके पास मौजूद हर गुण सिर्फ नुकसानदेह होगा, क्योंकि स्पष्टता के बिना आत्मविश्वास एक आपदा है। आज दुनिया भर में कई काम स्पष्टता के बिना किए जाते हैं।

स्पष्टता के बिना हम जो भी करने की कोशिश करेंगे, वह विनाशकारी ही होगा।

प्रकाश हमारी दृष्टि में स्पष्टता लाता है-न केवल भौतिक रूप से, बल्कि हमारे आसपास की हर चीज को समझने और जीवन को समझदारी से जीने में भी मददगार साबित होता है। दिवाली वह दिन है, जब अंधकारमय शक्तियों को मार दिया गया और तब प्रकाश हुआ। अंधेरे बादल जो उदास वातावरण में छाए रहते हैं, उन्हें यह एहसास नहीं होता कि वे सूर्य को रोक रहे हैं, मनुष्य को कहीं से कोई प्रकाश लाने की जरूरत नहीं है। अगर वह अपने भीतर जमा हुए काले बादलों को हटा दे, तो प्रकाश हो जाएगा। रोशनी का त्योहार बस इसी बात की याद दिलाता है।

# दिवाली संदेशः अच्छाई हमारी प्रतीक्षा कर रही है, सबसे अंधेरी रात में दीये जलाने से उम्मीद का मनोविज्ञान जुड़ा

हमारे मन में उम्मीदें तब जगती हैं, जब हम मानते हैं कि कुछ अच्छा होना बाकी है। नाउम्मीदी के बीच उम्मीद का जो दरवाजा खुलता है, अंधेरों के बीच जो चिंगारी चमकती है, वही दिवाली का प्रतीक है। भगवान राम द्वारा दुष्ट रावण को हराने के उपलक्ष्य में मनाए जाने वाले दिवाली के त्योहार में हर वर्ष हम दीये जलाते हैं, वातावरण को रोशन करते हैं और मिठाई के साथ खुशियां बांटते हैं। इस दौरान घर की सफाई एक तरह से मन की सफाई का प्रतीक होती है। वनवास के दौरान भगवान श्रीराम, लक्ष्मण और सीता को कई कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ऐसा लगा, मानो जीवन लगातार उनकी परीक्षा ले रहा था। इसके बावजूद श्रीराम में आगे बढ़ने का साहस और प्रेरणा थी।

आखिर कौन-सी चीज थी, जो उन्हें चुनौतियों के बावजूद प्रेरित करती थी। वह थी-उम्मीद। भगवान श्रीराम की तरह हम सब भी एक के बाद एक चुनौतियों का सामना करते हैं और जीवन की कठिनाइयों पर विजय पाने के लिए निरंतर संघर्ष करते हैं। कई बार ऐसा होता है कि हम अपनी उम्मीदें खोने लगते हैं। लेकिन दिवाली जैसे त्योहार हमें याद दिलाते हैं कि इस लंबी कठिन यात्रा के अंत में अच्छाई हमारी प्रतीक्षा कर रही है। उम्मीद के बारे में तो हम सभी जानते हैं, लेकिन अक्सर भूल जाते हैं कि यह कितनी शक्तिशाली हो सकती है। खुशी, उम्मीद और मन की शांति ही हमें अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रेरित करती है। उम्मीद आत्म-सम्मान और शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है। आशावादी होने से लक्ष्यों की प्राप्ति में सफलता की संभावना बढ़ जाती है। उम्मीद किसी वांछित लक्ष्य के लिए कार्य करने की हमारी क्षमता में सुधार करती है। जो आशावादी है, वह उच्च लक्ष्य हासिल करने की संभावना रखता है। उम्मीद हमारी केवल कामना करने के बजाय काम करने में मदद कर सकती है। जब हम दीये जलाते हैं और उन्हें अमावस्या की अंधेरी रात भर जलाए रखते हैं, तो हम केवल एक उज्ज्वल भविष्य की ही कामना नहीं कर रहे होते हैं; हम सक्रिय रूप से उस उज्ज्वल भविष्य के लिए रास्ता रोशन कर रहे होते हैं। जब हम आशा की कमी और अकेलापन महसूस करते हैं,.

# दीपोत्सवः पग-पग दिवाली की श्री... बच्चों को स्नेह-सद्भाव की अपनी उज्जवल सांस्कृतिक परंपरा के उजाले में लाना

यों तो आम तौर पर सारे हिंदू पर्व-त्योहार शुक्ल पक्ष में मनाए जाते हैं, लेकिन दिवाली की खासियत है कि यह कृष्ण पक्ष में मनाया जाता है और वह भी अमावस्या की गहन अंधेरी रात को। मान्यता है कि इसी दिन 14 वर्ष के वनवास के बाद भगवान श्रीराम भाई लक्ष्मण एवं सीता जी के साथ अयोध्या लौटे थे और उसी की खुशी में दिवाली मनाई गई थी, जो परंपरा के रूप में आज तक चली आ रही है। लेकिन मुझे लगता है कि यह मनुष्य की उस अदम्य इच्छाशक्ति का भी त्योहार है कि वह घनी अंधेरी रात को भी अपने उद्यम के दीपों से रोशन कर सकता है। तमसो मा ज्योतिर्गमय-यानी अंधेरे से उजाले की तरफ जाने की मनुष्य की अदम्य इच्छाशक्ति ही है, जो सारे जगत में उजियारा फैला देती है।

अंधेरे से उजाले की तरफ जाने की मनुष्य की यही अदम्य इच्छाशक्ति हमें अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाती है और अपने चारों तरफ ज्ञान की रोशनी फैलाने के लिए प्रेरित करती है। ज्ञान के बगैर चेतना नहीं और चेतना के बिना मन के भीतर का अंधेरा नहीं मिट सकता है। और जब तक हम अपने भीतर के कलुष को, मन की मलिनता को नहीं मिटा देते, तब तक लाख दीये जला लें, खुशहाली का उजाला नहीं फैल सकता है। शायद यही कारण रहा होगा कि गौतम बुद्ध ने अप्प दीपो भव का आह्वान किया था, क्योंकि हमारे मन के भीतर के अंधेरे को कोई दूसरा नहीं मिटा सकता, हमें खुद ही दीपक बनना होगा और अपने भीतर के अंधेरे को मिटाने के साथ ही अपने चारों तरफ अज्ञानता के अंधेरे को मिटाना होगा। मन की मलिनता को मिटाने और अंतस के अंधेरे को दूर करने की यही प्रेरणा हमें दिवाली से पहले अपने घर-द्वार से लेकर आसपास के वातावरण की साफ-सफाई के लिए प्रेरित करती है। दिवाली के ठीक बाद छठ का त्योहार आता है, जो नदियों के किनारे मनाया जाता है। इसलिए साफ-सफाई का यह कार्यक्रम दिवाली से लेकर छठ घाट पर ही संपन्न होता है।

एक और खास बात है कि हमारे ज्यादातर सांस्कृतिक त्योहार प्रकृति, पर्यावरण और कृषि संस्कृति को सहेजने और संरक्षित करने के भी अवसर होते हैं। बचपन में हमने देखा है कि घरों में जब दिवाली के दिन दीये जलाए जाते थे, तो एक दीया कुएं, तालाब, पेड़-पौधों, फुलवारी के पास भी जलाया जाता था। यानी अपने उत्सव में प्रकृति और पर्यावरण को भी शामिल करने की हमारी संस्कृति रही है।

हालांकि दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि ग्रामीण संस्कृति के पराभव और महानगरीय संस्कृति के इस चकाचौंध वाले दौर में हमारी वह पारंपरिक संस्कृति छीजती जा रही है। अभी हाल यह है कि दिवाली से पहले ही वायु की गुणवत्ता दिल्ली-एनसीआर समेत कई शहरों में इतनी खराब हो चुकी है कि सांस लेने में भी मुश्किल हो रही है और मन यही सोचकर डर रहा है कि दिवाली के बाद न जाने हवा कैसी होगी! पटाखों का शोर और धुआं त्योहार की खुशहाली को धूमिल करते हैं।

यही नहीं, दिवाली के अवसर पर परस्पर मिलने-जुलने की जो संस्कृति थी, उसमें भी कमी आई है। हालांकि पहले भी हर शहर की त्योहार मनाने की अपनी-अपनी संस्कृति होती थी, जो हमारी बहुलतावादी संस्कृति की परिचायक थी। मैं पहले कोलकाता में रहती थी और वहां मैंने देखा कि कोलकाता के लोग त्योहारों को कलात्मक ढंग से मनाते हैं।

**कार्यालय कार्यपालन अभियंता, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय खंड, मोहला-मानपुर-अं.चौकी (छ.ग.)**
E-mail eemohla-cg@nic.in
Har Ghar Jal Jal Jeevan Mission

**// ई-प्रोक्योरमेंट निविदा आमंत्रण सूचना //**
**रिस्क एंड कास्ट**

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल की ओर से एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से प्रपत्र- ए में जल जीवन मिशन अंतर्गत जल जीवन मिशन अंतर्गत एकल ग्राम/रेट्रोफिटिंग योजनांतर्गत जिला मोहला मानपुर-अं.चौकी के विभिन्न विकासखंडो के विभिन्न ग्रामों में रिस्क एवं कास्ट में UPVC/HDPE पाईप लाईन जोड़ने बिछाने, उच्चस्तरीय जलागार निर्माण, स्वीच रूम, उच्चस्तरीय जलागार के चारों ओर बाउंड्रीवॉल निर्माण, सबमर्सिबल पंप का प्रदाय एवं स्थापना कार्य, विद्युत विभाग (CSPDCL) से इलेक्ट्रिक कनेक्शन, इलेक्ट्रोक्लोरीनेटर स्थापना, क्लोरीनेटर रूम, घरों एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत नल कनेक्शन प्रदाय आदि एवं अन्य समस्त कार्य, टेस्टिंग, 03 माह का ट्रायल रन, 06 माह तक संचालन संधारण का कार्य (सम्पूर्ण कार्य सामग्री सहित, संलग्न शेड्युल अनुसार) की निविदाएं दिनांक 28.10.2024 से ऑन लाईन पर आमंत्रित की जाती है। उपरोक्त कार्य के निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in से दिनांक 05.11.2024 से डाउनलोड की जा सकती है तथा निविदा डाउनलोड करने की अंतिम दिनांक 19.11.2024 (शाम 5:30 बजे) तक है।

| क्र. | निविदा क्रमांक | सिस्टम क्रमांक | विकासखण्ड | योजना/ग्राम का नाम | निविदा की लागत (रु.लाख में) | निविदा में प्रचलित एस.ओ.आर. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 8 | 160688 | चौकी | मुंजाल, झिटिया, खड़खड़ी | 85.76 | PHE दिनांक 01.06.2020 से लागू एवं संशोधन 02/2020.21 तक तथा PWD 2015 का दिनांक 07.04.2016 से लागू |
| 2 | 9 | 160689 | मानपुर | चवरगांव, आमाकोड़ो, पिटेमेटा, मिचगांव | 72.56 | |

कार्यपालन अभियंत,
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खंड,
मोहला-मानपुर-अं.चौकी (छ.ग.)

जी-242503537/7

# करहल में मुलायम कुनबे को एक साथ मिलेगी जीत-हार

**संजय सक्सेना**

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के जिला मैनपुरी की करहल विधानसभा सीट पर उपचुनाव के लिये बिसात बिछ गई है। यूपी में नौ सीटों पर उपचुनाव हो रहा है, लेकिन सबसे अधिक चर्चा करहल विधान सभा सीट की ही हो रही है। यहां बीजेपी और समाजवादी पार्टी के बीच कड़ा मुकाबला होने के आसार नजर आ रहे हैं,लेकिन मैदान में बसपा का उम्मीदवार भी ताल ठोंक रहा है। मगर सबसे रोचक यह है कि यहां हारेगा भी मुलायम परिवार का नेता और जीतेगा भी मुलायम के घर का लीडर। इस सीट पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने अपने भतीजे पूर्व सांसद तेज प्रताप यादव को मैदान में उतारा गया है जिनको भाजपा के प्रत्याशी और अपने फूफा यानी चाचा धर्मेंद्र यादव के सगे बहनोई अनुजेश यादव से चुनाव के मैदान में टक्कर मिल रही हैं। सपा मुखिया अखिलेश यादव 2022 में यहां से विधायक चुने गये थे और 2024 में सांसद बनने के बाद अखिलेश ने इस सीट को छोड़ दिया था। ऐसे में उनकी प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी है। बीजेपी मिल्कीपुर विधान सभा सीट के बाद इस सीट को लेकर काफी ज्यादा उत्साहित हैं। वहीं चुनावी दंगल में अखिलेश यादव भी खूब पसीना बहा रहे हैं। नामांकन में तेज प्रताप के साथ मौजूद रहकर उन्होंने समर्थकों को संदेश दिया था और इसके बाद स्थानीय नेताओं को लगातार निर्देश भी दे रहे हैं। करहल विधानसभा सीट की बात की जाये तो मैनपुरी जिले में आने वाली इस सीट को सपा नेता अपनी पुश्तैनी सीट बताते हैं। वैसे भी यह इलाका मुलायम परिवार का गढ़ माना जाता है। इस सीट ही नहीं आसपास की कई लोकसभा और विधानसभा सीट पर भी सपा का लंबे समय से वर्चस्व चला आ रहा है। वर्ष 1993 से अब तक सपा कहरल सीट पर केवल एक बार पराजित हुई है। बीते चार चुनावों से तो सपा के प्रत्याशी लगातार जीत रहे हैं। अखिलेश यादव ने 2022 के विधान सभा चुनाव में यहां 67 हजार से ज्यादा वोटों के अंतर से बड़ी जीत हासिल की थी।कुछ माह पूर्व हुए लोकसभा चुनाव में कन्नौज का सांसद बनने के बाद अखिलेश यादव ने इस सीट से त्यागपत्र दिया था, जिसके बाद अब यहां उपचुनाव हो रहा है। सपा प्रत्याशी की बात की जाये तो तेज प्रताप यादव इससे पहले वर्ष 2014 में मैनपुरी लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में लड़े थे और सांसद बने थे। उनके मैदान में उतरने के बाद अखिलेश यादव सहित पूरे सैफई परिवार की प्रतिष्ठा इस चुनाव से जुड़ गई है। उधर, यादव बाहुल्य इस सीट को जीतने के लिये भाजपा ने भी पूरी ताकत झोंक रखी है। करहल सीट पर जीत हासिल कर बीजेपी लोकसभा चुनाव में सपा से मिली हार का हिसाब बराबर करना चाहती है। इसके साथ ही भाजपा ने सैफई परिवार के रिश्तेदार अनुजेश यादव को प्रत्याशी बनाकर सबको चौंका दिया है। बता दें अनुजेश यादव की मां उर्मिला यादव घिरोर विधानसभा सीट से दो बार विधायक रह चुकी हैं। यह क्षेत्र वर्तमान में करहल विधानसभा सीट के अंदर आता है। अनुजेश यादव की पत्नी संध्या यादव (सपा सांसद धर्मेंद्र यादव की बहन) मैनपुरी की जिला पंचायत अध्यक्ष रह चुकी हैं। ऐसे में यदि बीजेपी अनुजेश की जीत की उम्मीद लगा रही है तो इसे सपा हल्के में नहीं ले रही है, परंतु इतना तय है कि मुलायम कुनबे से दो प्रत्याशियों की चुनाव में प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। कुल मिलाकर बीजेपी ने सपा के सामने वह स्थिति खड़ी कर दी है जिसमें सपा को अपनी जीत की खुशी और बीजेपी की हार का गम दोनों मनाना पड़ेगा।

# मोदी कौन सा नया धमाका करने जा रहे हैं

**अभिनय आकाश**

भारत की आबादी कितनी है? इस सवाल का जवाब आपको गूगल पर मिल जाएगा। लेकिन इस अगला सवाल आएगा कि इंटरनेट पर मौजूद इस जानकारी को आप सत्यापित कैसे करेंगे। संदर्भ किसका देंगे। तब आपको भारत के आधिकारिक जनगणना के आंकड़ों की जरूरत पड़ेगी। सोचिए कि अगर आपको एक साधारण से सवाल के जवाब के लिए इस रिपोर्ट की आवश्यकता है तो 140 करोड़ लोगों के जीवन के हर पहलू के लिए जिम्मेदार सरकार को कितने महीन आंकड़ों की जरूरत पड़ती होगी। हम सब की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास आदि के लिए जो नीतियां बनाई जाती हैं, वो जनगणना के आंकड़ों के आधार पर ही तैयार की जाती है। भारत में 12 बरस से जनगणना हुई ही नहीं। केंद्र सरकार ने जनगणना कराने का फैसला कर लिया है। ये 2025 में शुरू होकर 2026 तक चलेगी। अब सरकार इसमें जातिगत जनगणना कराएगी या नहीं ये कंफर्म नहीं है। विपक्ष ने इसे लेकर सरकार से सवाल भी पूछे हैं। जनगणना वास्तव में कैसे की जाती है, इसका परिसीमन, महिला संसद कोटा से संबंध है। जाति जनगणना लोगों की जरूरत है या फिर इसकी मांग सिर्फ और सिर्फ एक सियासी या चुनावी जिद है। तमाम सवालों के जवाब आइए इश रिपोर्ट के जरिए आपको देते हैं।

सरकारी सूत्रों के मुताबिक जनगणना 2025 में शुरू होकर 2026 तक चलेगी। इस जनगणना में लोगों से संप्रदाय भी पूछा जा सकता है। लोकसभा सीटों का परिसीमन जनगणना के बाद होगा। जाति जनगणना के बारे में केंद्र ने अभी कोई फैसला नहीं लिया है।

भारत में जनगणना के बीच जाति जनगणना का बीज अंग्रेजों ने बोया था। फूट डालों और राज करो उन्हीं की नीति थी। समझ लीजिए कि जाति जनगणना उसी पॉलिसी की टूल किट थी। बहुत संक्षेप में हम 1881 से 2024 तक आते हैं। 1881 से 1931 तक अंग्रेजों ने छह बार जाति जनगणना करवाई। 1941 में भी जाति की गिनती हुई लेकिन डेटा प्रकाशित नहीं किया गया। 1951 में स्वतंत्र भारत की पहली सरकार ने एससी-एसटी को छोड़कर बाकी जाति की गिनती रोक दी।

2011 में केंद्र ने जाति जनगणना को मंजूरी दी, लेकिन डेटा जारी नहीं किया। 2011 की जनगणना में 46 लाख जातियों और उपजातियों का पता चला था। तब कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए-2 की सरकार थी। आज के इंडिया अलायंस के कई सहयोगी तब अड़े हुए थे। लेकिन तब मनमोहन सिंह की सरकार ने जातियों की गिनती को सार्वजनिक नहीं किया। 2021 में कोविड की वजह से जनगणना नहीं हो पाई। विडंबना देखिए कि 2024 के चुनाव और उसके बाद से कांग्रेस उसी जाति जनगणना के लिए बैटिंग कर रही है, जिसके आंकड़े उसने खुद 2011 में जारी नहीं किए थे।

जनगणना के दौरान लोगों से पूछे जाने वाले सवाल तैयार कर लिए गए हैं। इनमें क्या परिवार का मुखिया या अन्य सदस्य अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति से संबंधित हैं। परिवार के सदस्यों की कुल संख्या, परिवार की मुखिया महिला है या नहीं? परिवार के पास कितने कमरे हैं? परिवार में कितने विवाहित जोड़े हैं? क्या परिवार के पास टेलीफोन, इंटरनेट कनेक्शन, मोबाइल, दोपहिया, चारपहिया वाहन है या नहीं आदि सवाल शामिल किए गए हैं।

जनगणना में संप्रदाय के बारे में भी पूछा जाएगा। मान लीजिए कर्नाटर राज्य जहां वोक्कालिंगा और लिंगायत समुदाय है उसके बारे में पूछा जाएगा। दक्षिण की विभिन्न राज्य सरकारों ने सार्वजनिक रूप से इसजनगणना के दौरान लोगों से पूछे जाने वाले सवाल तैयार कर लिए गए हैं. इनमें क्या परिवार का मुखिया या अन्य सदस्य अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति से संबंधित हैं. परिवार के सदस्यों की कुल संख्या, परिवार की मुखिया महिला है या नहीं? परिवार के पास कितने कमरे हैं? परिवार में कितने विवाहित जोड़े हैं? क्या परिवार के पास टेलीफोन, इंटरनेट कनेक्शन, मोबाइल, दोपहिया, चारपहिया वाहन है या नहीं आदि सवाल शामिल किए गए हैं। इसमें आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री और एनडीए की सहयोगी टीडीपी के मुखिया चंद्रबाबू नायडू का भी नाम शामिल है। उन्होंने राज्य के लोगों से आबादी के प्रभाव का जिक्र है। इसके साथ ही अधिक बच्चे पेदा करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस मामले में सरकार के सूत्रों ने कहा कि वे इस चिंता से अवगत हैं और कोई भी उपाय जो दक्षिणी राज्यों को नुकसान पहुंचा सकता है, उससे बचा जाएगा।

जनगणना जल्दी पूरी करने के 2 बड़े कारण: पहला- साल 2026 में गठित होने वाले डिलिमिटेशन कमिशन के आधार पर लोकसभा और विधानसभा सीटों का नए सिरे से सीमांकन होना है। 2026 तक लोकसभा, राज्यसभा और विधानसभाओं के निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या पर फ्रीज लगा था। आबादी के नए आंकड़ों के हिसाब से इन निर्वाचन क्षेत्रों का नए सिरे से सीमांकन होगा। संसद की सीटों की संख्या भी बढ़ेगी।

दूसरा- इन बढ़ी सीटों के हिसाब से महिलाओं के लिए लोकसभा व विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें आरक्षित की जाएंगी। इसके लिए ऐतिहासिक विधेयक सितंबर 23 में पारित किया जा चुका है।

2025 की जनगणना से नया सेंसस चक्र शुरू हो जाएगा। नई साइकिल 2025 के बाद 2035 और इसके बाद 2045 की होगी। 1881 से हर दस साल बाद होने वाली जनगणना 2021 में होनी थी, जो 3 साल से अधिक देरी से शुरू होने की संभावना है। सूत्रों ने कहा, पूरी कवायद 2 से ढाई साल में पूरी होगी। ऐसे में इस डेटा को सिर्फ 2031 तक सीमित रखना तार्किक नहीं होगा। इस बार की जनगणना डिजिटल होगी और सेल्फ इन्यूमिरेशन ऐप का सहारा भी लिया जाएगा। ताकि, जनगणना कम समय में पूरी की जा सके। जनगणना की जो कवायद 3 साल में फैली होती है, उसे 18-24 महीनों में पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। जनगणना वर्ष में जनसंख्या गणना फरवरी के दूसरे और चौथे सप्ताह के बीच होती है। सामने आए आंकड़े जनगणना वर्ष में 1 मार्च की आधी रात तक भारत की जनसंख्या को दर्शाते हैं। फरवरी में गणना अवधि के दौरान जन्म और मृत्यु का हिसाब देने के लिए, गणनाकार संशोधन करने के लिए मार्च के पहले सप्ताह में घरों में लौटते हैं।

84वें संविधान संशोधन की भाषा कहती है कि परिसीमन केवल वर्ष 2026 के बाद ली गई पहली जनगणना के आंकड़ों पर ही हो सकता है। इससे पता चलता है कि जनगणना का जनसंख्या गणना भाग 2026 के बाद किया जाना है। इसलिए, यदि जनगणना अभ्यास अगले साल शुरू होना है और सरकार 2029 के लोकसभा चुनावों के लिए परिसीमन प्रक्रिया शुरू करना चाहती है। मौजूदा प्रावधान में संशोधन की आवश्यकता हो सकती है। 16वें वित्त आयोग की सिफारिशें यहां एक महत्वपूर्ण तत्व हो सकती हैं। वित्त आयोग, हर पांच साल में गठित एक निकाय, केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय संसाधनों के हस्तांतरण की सिफारिश करता है। 16वें वित्त आयोग को अगले साल के अंत तक अपनी रिपोर्ट सौंपनी है। इसके अलावा, संसद ने पिछले साल 128वें संविधान संशोधन को मंजूरी दी, जिसमें महिलाओं के लिए लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित की गईं। हालाँकि, यह परिसीमन अभ्यास के बाद लोकसभा और राज्य विधानसभाओं की सीटों में संशोधन के बाद ही प्रभावी होगा।

ऐसी भी उम्मीद है कि अगली जनगणना में अलग जाति जनगणना की आवश्यकता को खत्म करने के लिए जाति डेटा भी एकत्र किया जा सकता है, जिसकी हाल के वर्षों में कुछ राजनीतिक दलों द्वारा मांग की गई है। जनगणना में जाति संबंधी आंकड़ों का संग्रह अभूतपूर्व नहीं होगा। 1941 की जनगणना तक जाति से संबंधित कुछ जानकारी प्राप्त की गई थी और यह प्रथा स्वतंत्र भारत में ही बंद कर दी गई थी। पहले के कुछ वर्षों में जनगणना में सभी धर्मों के लोगों की जाति या संप्रदाय की जानकारी प्राप्त की जाती थी। अन्य वर्षों में, केवल हिंदुओं का जाति डेटा एकत्र किया गया था। 1951 की जनगणना के बाद से यह प्रथा बंद कर दी गई और तब से केवल अनुसूचित जाति या जनजाति पर डेटा एकत्र किया गया है।

**पुराण दिग्दर्शन .... तीसरा अध्याय**

# वेदपुराण-परम्पराध्यायः

**गतांक से आगे...**

इसी प्रकार एक अरब संख्या वाले आदिम पुराण के विभिन्न अंश भी जुदा 2 नामों से विख्यात होने लगे थे। इस समय अष्टादश पुराणों के जो नाम देखे जाते हैं, इनका बहुत कुछ व्यवहार वेदोपदेश युग में ही श्रारम्भ हो चुका था। तत्तत् प्रकरणों के नामकरण का व्यवहार था तो मुख्य श्रोता वक्ताओं के या प्रतिपाद्य विषय के नाम पर निर्भर था ऐसा अनुमान है, क्योंकि वर्तमान पुराणों का उपक्रम और उपसंहार पढ़ने पर अथवा नारद आदि पुराणों में दी हुई पुराण-सूची का पारायण करने पर यह सिद्ध हो जाता है कि प्राय: सभी पुराणों का सम्बन्ध ब्रह्मा जी और उनके मानसिक पुत्रों से हैं।

ऐसी दशा में आगे चल कर शिष्य प्रशिष्यों के प्रति गुरुजनों ने उन 2 सम्वादों को आदिम श्रोता वक्ताओं के नाम सहित बताया होगा यह अनुमान सिद्ध बात है, और इसी तरह वर्तमान पुरागों के नाम और उनके प्रतिपाद्य विषय की तुलना भी उपर्युक्त भाव की समर्थक है।

आदिम पुराण के स्मर्ता और वक्ता- जिस प्रकार मीमांसाशास्त्र के निर्णयानुसार वेद अपौरुषेय हैं और गौतमात्रिवशिष्ठकश्यपादि ऋषि वेद-मन्त्रों के द्रष्टामात्र हैं, कर्ता वा निर्माता नहीं, इसी प्रकार पुराणों की मौलिक सामग्री का भी कोई पुरुष-विशेष कर्ता नहीं है, अपितु वेदोक्त पुराण-अंश के स्मर्ता ब्रह्मा जी हैं, और ऋषि-देवतात्मक-चरित्रों के वक्ता अनेक मन्त्रद्रष्टा ऋषि हैं अर्थात् जो व्यक्ति वेदों के द्रष्टा हैं वे ही व्यक्ति पुराणों के स्मर्ता या वक्ता हैं। क्योंकि वेदमन्त्रों का उपदेश ब्रह्मा जी से आरम्भ हुआ था और उनके मानस-पुत्रों के शिष्य प्रशिष्यों से हो विनियोग-मर्यादा का सूत्रपात हो चुका था। अत: विनियोगणित ऋषि देवताओं के चरित्रों का निरूपण भी इसी समय से प्रारम्भ हुआ मानना चाहिए!

**क्रमशः ...**

# छत्तीसगढ़ स्थापना दिवसः भगवान राम का ननिहाल कैसे बना छत्तीसगढ़

**पवन तिवारी**

छत्तीसगढ़ का स्थापना दिवस 1 नवंबर को बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। भगवान श्रीराम का ननिहाल कौशल राज्य आज पूरे देश में छत्तीसगढ़ के नाम से प्रख्यात है। त्रेता युग के हजारों साल बाद और वर्तमान से लगभग 300 साल पहले गोंड जनजाति के शासनकाल के दौरान इस राज्य का नाम छत्तीसगढ़ पड़ा था। यह एक ऐसा राज्य है जो कि हिंदुस्तान के मध्य में घने जंगलों से घिरा हुआ है। छत्तीसगढ़ मंदिरों और झरनों के साथ-साथ अपनी आदिवासी संस्कृति और परंपरा के लिए जाना जाता है। मध्य प्रदेश का हिस्सा रहने वाला छत्तीसगढ़ 1 नवंबर 2000 में अपने मूल नाम छत्तीसगढ़ के नाम से जाना जाने लगा है।

छत्तीसगढ़ पहले मध्यप्रदेश का हिस्सा था लेकिन साल 2000 में मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ अस्तित्व में आया। हमेशा से धान के कटोरे के नाम से पूरे हिंदुस्तान में जाना जाने वाला छत्तीसगढ़ को पहली बार मराठा साम्राज्य के समय 1795 में आधिकारिक दस्तावेज में इसके नाम का इस्तेमाल किया गया था। साल 2013 की गणना के अनुसार दो करोड़ 55 लाख की जनसंख्या वाला यह राज्य तरक्की की कई ऊंचाइयों को छू चुका है।

मराठा साम्राज्य के समय छत्तीसगढ़ नाम लोकप्रिय हुआ था। पहली बार 1975 में आधिकारिक दस्तावेज में सामने आया था। छत्तीसगढ़ क्षेत्र कलिंग के चेदि वंश का हिस्सा था। 1803 तक मध्यकाल में वर्तमान पूर्वी छत्तीसगढ़ का एक बड़ा हिस्सा उड़ीसा के संबलपुर राज्य का हिस्सा था। 1 नवंबर के दिन साल 1956 से लेकर साल 2000 तक भारत के छह अलग-अलग राज्यों का जन्म हुआ इसमें मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब-हरियाणा, कर्नाटक और केरल शामिल हैं। इन राज्यों में एक ही दिन स्थापना दिवस मनाया जाता है।

छत्तीसगढ़ राज्य को पूरे 24 वर्ष हो चुके हैं। छत्तीसगढ़ राज्य वर्तमान में अपनी युवावस्था की ऊंचाइयों तक पहुंच चुका है। साल 2000 में जुलाई में लोकसभा और अगस्त में राज्यसभा में छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के प्रस्ताव पर मुहर लगी थी। उस वक्त छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेश का हिस्सा था। उस वक्त मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार और दिग्विजय सिंह मुख्यमंत्री थे। वहीं केंद्र में भाजपा की गठबंधन की सरकार में अटल बिहारी प्रधानमंत्री थे। 4 सितंबर 2000 को भारत सरकार के राज्य पत्र में प्रकाशन के बाद 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ देश के 26 वें राज्य के रूप में दर्ज हो गया था। नया राज्य बनने के बाद अजीत जोगी छत्तीसगढ़ के पहले मुख्यमंत्री बने थे।

ऐसा कहा जाता है कि अटल बिहारी ने 1990 से ही तय किया था कि छत्तीसगढ़ एक अलग राज्य बनना चाहिए। अटल बिहारी को छत्तीसगढ़िया आदिवासी संस्कृति और वन संपदा से काफी लगाव था। अलग छत्तीसगढ़ बनाने की मांग केंद्र में सबसे पहले आचार्य नरेंद्र दुबे ने की थी। इसके लिए उन्होंने 1965 में 'छत्तीसगढ़ समाज' की स्थापना की थी। इसके बाद अलग छत्तीसगढ़ को लेकर कई नेताओं ने मांग की।

# अमरीका के असली चेहरे को बेनकाब करता यह चुनाव

**योगेन्द्र यादव**

अमरीकी चुनाव का विश्लेषण करने से पहले कबीरदास से क्षमायाचना करते हुए एक तुकबंदी पेश है-

*कमला, ट्रम्प दोऊ खड़े, काके करूं सखाय।*
*बलिहारी ट्रम्प आपनो, जिन अमरीका दियो दिखाय॥*

भावार्थ- कवि कहता है कि मेरे सम्मुख डोनाल्ड ट्रम्प और कमला हैरिस दोनों खड़े हैं और इस नाचीज हिंदुस्तानी की दुविधा है कि किससे दोस्ती करूं। फिर उसके समक्ष सत्य का प्रकाश होता है और वह कह उठता है- जय हो ट्रम्प साहेब की, जिन्होंने पूरी दुनिया को अमरीका का सच्चा चेहरा दिखा दिया।

दरअसल अमरीका के चुनाव को देखने के तीन नजरिए हो सकते हैं। पहला, बाकी दुनिया की तरह हम खाली बैठे उत्सुकता से चुनाव के परिणाम का अनुमान लगा सकते हैं, मानो यह इंगलैंड और ऑस्ट्रेलिया का टैस्ट मैच हो। अमरीकी राजनीति के विद्वानों की राय मानें तो इस बार कांटे की टक्कर है। रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से दूसरी बार राष्ट्रपति चुने जाने के दावेदार डोनाल्ड ट्रम्प और डैमोक्रेटिक पार्टी की ओर से निवर्तमान उप राष्ट्रपति और पहली बार राष्ट्रपति के चुनाव में उतरी कमला हैरिस दोनों को लगभग एक बराबर वोट मिलने की संभावना है, 45 प्रतिशत के आसपास। अनुमान है कि वोटों में कमला हैरिस 2 से 3 प्रतिशत आगे रह सकती हैं। लेकिन अमरीका की चुनाव पद्धति इतनी अजीब है कि अधिक वोट आने के बावजूद कमला हैरिस के चुनाव हारने की संभावना ज्यादा है।

दूसरा नजरिया एक चिंतित विश्व नागरिक का होगा। हम चिंता कर सकते हैं कि डोनाल्ड ट्रम्प जैसी खड़ दिमाग दुनिया के सबसे ताकतवर देश का राष्ट्रपति बनने का पूरी दुनिया पर क्या असर पड़ेगा? लेकिन सच यह है कि हमारी चिंता करने से कुछ होने वाला नहीं। यूं भी, जो भी अमरीकी राष्ट्रपति बने, हमारे जैसे देशों को कोई खास फर्क पडने वाला नहीं। अमरीकी चुनाव पर एक तीसरा नजरिया भी हो सकता है, एक ठेठ हिन्दुस्तानी नजरिया। बेगाने की शादी में अब्दुल्ला दीवाना बनने की बजाय हम दूर से

इस चुनाव को देखें और सीखें। अमरीका के चुनावी घमासान के चलते अचानक अमरीकी सपने का सुनहरी पर्दा गिर गया है और उसका फायदा उठाकर पूरी दुनिया को लोकतंत्र का उपदेश देने वाली जन्नत की हकीकत देखने का मौका न छोड़ें। इस नजर से देखने पर हमें सबसे आगे डोनाल्ड ट्रम्प नामक महाशय मिलेंगे, जिनके साथ आधा अमरीका खड़ा है, आधे से ज्यादा श्वेत और मर्द मतदाता खड़े हैं, ऐलन मस्क जैसे रईस खड़े हैं। जब आप इन महाशय की जन्मकुंडली पर नजर दौड़ाते हैं तो पाते हैं कि दुनिया का कोई ऐसा कुकर्म नहीं, जिससे इन्हें परहेज रहा हो। डोनाल्ड ट्रम्प ने रियल एस्टेट और बिल्डर के काम से 660 करोड़ डॉलर (लगभग 55,000 करोड़ रुपए) का साम्राज्य बनाया है, टैक्स फ्रॉड में पकड़े जा चुके हैं। अपने बिजनैस के अलावा झूठ और नफरत का धंधा खुलकर चलाते हैं। गैर श्वेत आप्रवासियों के बारे में खुलकर अफवाह फैलाते हैं। हाल ही में उन्होंने कहा कि अमरीका में आए मैक्सिकन आप्रवासी कुत्तों-बिल्लियों को खा रहे हैं। बात झूठी निकली लेकिन ट्रम्प सच और झूठ के बीच कोई भेद नहीं करते। अमरीका का मीडिया ट्रम्प के झूठ को झूठ बताने में कोताही नहीं करता।

डोनाल्ड ट्रम्प औरतों के मामले में बदनाम हैं = तीन बार शादी की है, दर्जनों अफेयर रहे, औरतों के बारे में खुलकर अश्लील टिप्पणियां करते रहे हैं। जुबान बेलगाम है। उनके साथ व्यापार में, राष्ट्रपति कार्यालय में और पार्टी में काम करने वाले अनगिनत लोग उनकी बेईमानी, बदमजगी, बेवकूफी, बदतमीजी और बेहयाई की शिकायत कर उनका साथ छोड़ चुके हैं। यही नहीं, पिछली बार 2020 में राष्ट्रपति चुनाव हारने के बाद ट्रम्प साहब ने अपने समर्थकों को राजधानी और संसद भवन पर हमला करने के लिए उकसाया, वहां बलवा कराया और अमरीकी इतिहास में पहली बार तख्ता पलटने की कोशिश करवाई। यह सब कोई खुफिया आरोप नहीं हैं। अगर आप विकीपीडिया चैक करेंगे तो ट्रम्प साहब के कारनामों की अलग-अलग 79 एंट्रीज मिलेंगी। आप सोचेंगे कि ऐसी छवि वाला व्यक्ति सार्वजनिक जीवन में बचा कैसे है? यह सवाल आपको मंच की दूसरी तरफ ले जाएगा, जहां आपको इक्यासी साल के एक बुजुर्ग जो बाइडेन मिलेंगे। खोए-खोए से, लडखड़ाते हुए यह सज्जन इस वक्त अमरीका के राष्ट्रपति हैं, दुनिया की सबसे ताकतवर फौज के कमांडर हैं। कुछ महीने पहले तक डोनाल्ड ट्रम्प के सामने डैमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार भी थे। वो तो भला हो एक टी.वी. डिबेट का, जिसमें ट्रम्प से बहस करते हुए बाइडेन साहब की मानसिक अवस्था की कलई खुल गई और उनके समर्थकों को उन्हें बीच रास्ते इस दौड़ से बाहर निकालना पड़ा।

अब डोनाल्ड ट्रम्प का मुकाबला कर रही हैं कमला देवी हैरिस। भारतीय मूल की तमिल मां और जमैका के अश्वेत पिता की संतान कमला एक अश्वेत महिला हैं, पढ़ी लिखी हैं, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हैं और बोलने में चुस्त। उनकी पृष्ठभूमि से आप यह न समझ लें कि उन्हें भारत या तीसरी दुनिया के अश्वेत लोगों से कोई हमदर्दी है। इस मायने में वे अमरीकी मुख्यधारा राजनीति की प्रवक्ता हैं, इसराईल की समर्थक, दुनिया में अमरीकी दादागिरी की वकालत करती हैं और अमरीका के भीतर थैलिशाहों के साथ हैं। उन पर कोई बड़ा आरोप नहीं है। न कुछ बुरा करने का, न कुछ अच्छा करने का। न बुरा बोलने का, न अच्छा सोचने का। तमाम बड़े नेताओं की तरह वह भी विचार मुक्त हैं। यह है विकल्प अमरीका की जानता के सामने।

अगर आप दुनिया के हाशिए पर बैठ कर अमरीकी चुनाव में झांकेंगे तो आप समझेंगे कि असली सवाल यह नहीं है कि अमरीकी चुनाव में कौन जीतेगा। सवाल यह है कि अमरीका का चुनाव इन विकल्पों तक क्यों सिमट गया है? डोनाल्ड ट्रम्प जैसा व्यक्ति दूसरी बार राष्ट्रपति बनाने के करीब क्यों पहुंच गया है? क्या अमरीकी समाज का रातों रात इतना पतन हो गया है? यानी हमें अचानक अमरीकी समाज का पूरा सच देखने का मौका मिल गया है? क्या ट्रम्प एक औसत अमरीकी की दबी-छिपी कुंठाओं और अमरीकी चरित्र की अभिव्यक्ति हैं? या दुनिया भर में अब महामानव नेताओं से पिंड छुड़ाकर औसत की पूजा का युग शुरू हो गया है? जैसा अरस्तु का डर था- क्या लोकतंत्र भीड़तंत्र में बदल रहा है?

## आज का इतिहास

1897 जुवेंटस एफसी ट्यूरिन एक एसोसिएशन फुटबॉल क्लब के रूप में स्थापित किया गया।
1924 न्यूयॉर्क पहला राज्य है जिसने वर्ष की शुरुआत में पैर और मुंह के प्रकोप के बाद तुर्की से अलग-थलग पड़े प्रतिबंधों को समाप्त कर दिया है।
1927 बेहतर मॉडल ए का उत्पादन जो पहले के मॉडल टी टिन लिज़ी की जगह लेगा, फोर्ड कारखानों में शुरू हो गया है। कीमतें . 460 से शुरू होती हैं।
1928 तुर्की के राष्ट्रपति मुस्तफा केमल अतातुर्क ने तुर्की भाषा के ओटोमन तुर्की वर्णमाला एस्टे आधिकारिक लेखन प्रणाली को बदलने के लिए वर्तमान 29-अक्षर तुर्की वर्णमाला पेश की।
1928 वर्तमान 29-अक्षर तुर्की वर्णमाला को पेश किया गया था, जो तुर्क तुर्की वर्णमाला को तुर्की भाषा की आधिकारिक लेखन प्रणाली के रूप में प्रतिस्थापित करता है।
1928 रोमानियाई रेडियो प्रसारण कंपनी की शुरूआत हुई।
1940 इतालवी फासीवादियों ने ग्रीस के एक अच्छी तरह से आबादी वाले क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था। आगे की रिपोर्ट के अनुसार इटली अल्बानिया की सीमा की ओर बढ़ रहा था। इस बीच, अंग्रेजों ने इटली के नेपल्स पर बढ़त बना ली थी।
1948 एथेनागोरस। को 268 वीं सर्वव्यापी पैट्रिऑन कांस्टेंटिनोपल के रूप में चुना गया था।
1950 दो प्यूर्टो रिकान राष्ट्रवादियों ने अमेरिकी एस हैरी ट्रूमैन (चित्र) की हत्या करने का प्रयास किया।
1952 संयुक्त राज्य अमेरिका प्रशांत क्षेत्र में एन्विटोक एटोल पर हाइड्रोजन बम का सफलतापूर्वक विस्फोट करता है। इसे दुनिया का पहला थर्मोन्यूक्लियर हथियार बताया गया है।
1954 फ्रंट डे लिबेरेशन नेशनले ने फ्रांसीसी शासन के खिलाफ अल्जीरियाई युद्ध की शुरुआत की।
1956 भाषा के आधार पर मध्य प्रदेश राज्य का गठन किया गया।
1958 तत्कालीन सोवियत संघ ने परमाणु परीक्षण किया।
1962 इटली में कॉमिक बुक एंटीरो डायबोलिक की शुरआत की गयी।
1970 पाकिस्तान के कराची हवाई अड्डे पर पोलिश उपाध्यक्ष को गोली मरी गयी।
1973 मैसूर का नाम बदलकर कर्नाटक किया गया।
1974 संयुक्त राष्ट्र ने पूर्वी भूमध्यसागरीय देश सायप्रस की स्वतंत्रता को मान्यता दी।
1993 मास्ट्रिच संधि जो यूरोपीय संघ (ईयू) की स्थापना करती है, आधिकारिक रूप से आज शुरू होती है। इस संधि को यूरोपीय संघ पर 12 देशों द्वारा अनुमोदित किया गया था।

# अयोध्या के लिए क्यों खास है यह दिवाली

**जगत गुरु शंकराचार्य राजराजेश्वराश्रम जी महाराज**

अयोध्या में भव्य राम मंदिर में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा इसी साल 22 जनवरी को की गई। प्रधानमंत्री मोदी की उपस्थिति में वहां हवन-पूजन के सारे कार्यक्रम संपन्न हुए। कई सौ साल बीत गए, सनातन परिवारों की कई पीढ़ियां निकल गईं, इस दिन को देखने की आस लिए, तब जाकर यह दिन आया। प्रभु श्रीराम टेंट से निकल कर मंदिर में विराजमान हुए। 22 जनवरी को जो कुछ अयोध्या की धरती पर हो रहा था, वह इवेंट मात्र नहीं था, वहां एक इतिहास रचा जा रहा था।

भारत को एक ऐसा नेतृत्व मिला है, जो देश की परंपरा, गौरव और सनातनी मूल्यों की ना सिर्फ 'विधर्मियों' से सुरक्षा कर रहा है, बल्कि भारत का मान पूरी दुनिया में स्थापित कर रहा है। पीएम मोदी ने भगवान राम की प्रतिमा की मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा करके, 140 करोड़ भारतीयों का सर सम्मान से ऊंचा किया है। इस बार दीपावली पर दीयों की रोशनी थोड़ी खास होगी। हमारे प्रभु श्रीराम का दूसरा वनवास जो पूरा हुआ है। करोड़ों सनातनियों के आराध्य को दशकों तक टेंट में रहना पड़ा। यह देश ना इस घटना को भूल सकता है और ना इसके दोषियों को। फिर उन्हें कैसे भुलाएगा, जिन्होंने हमारे भगवान राम को टेंट से निकाल कर मंदिर में प्रतिष्ठित किया।

राम हिंदुओं के तो भगवान हैं ही, वे पीर के, फकीर के, कबीर के, सबके हैं। इसलिए पाकिस्तान जाने से पहले अल्लामा इकबाल जब हिंदुस्तानी होने पर गर्व करते थे, उस दौर में लिखकर गए कि, 'है राम के वजूद पे हिन्दोस्तां को नाज़/ अहल-ए-नज़र समझते हैं उन को इमाम-ए-हिंद।।' भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा के ठीक 104 दिनों के बाद 5 मई को प्रधानमंत्री दोबारा रामलला के दर्शन और पूजन के लिए आए।

उसके बाद वह अयोध्या की जनता के बीच गए। उन्होंने करीब दो किलोमीटर का रोड शो किया। इसमें सभी जाति और वर्ग के लोग मौजूद थे। अयोध्या की सड़क पर रोड शो का रथ जैसे ही आगे बढ़ा, नारों से वातावरण गूंज उठा। हर कोई या तो 'जय श्री राम' का नारा लगा रहा था, या फिर 'हर हर मोदी-घर घर मोदी' का। उन पर फूलों की बारिश हुई। इस तरह पूरा समाज सैकड़ों सालों के स्वप्न को सच करके जमीन पर उतारने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के प्रति अपनी कृतज्ञता

ज्ञापित कर रहा था।

अयोध्या में 496 सालों के बाद यह पहली दीपावली है, जब श्रीराम लला टेंट से निकल कर मंदिर में विराजमान हैं। अयोध्या तो भगवान राम की नगरी है। वह राजा हैं इस शहर के। आप जानते हैं कि अयोध्या में पहली दीपावली तब मनी थी, जब भगवान चौदह वर्षों का अपना वनवास पूरा करके माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ लौटे थे। उस वर्ष उनके आने की खुशी में अयोध्या नगरी को दीयों से रौशन किया गया था। इतना पुराना रिश्ता है अयोध्या का दीपावली से। इस नगर से दीपावली प्रारंभ हुई और भगवान राम ने अपनी पहली दीपावली अयोध्या में ही मनाई।

भगवान जब टेंट में चले गए फिर अयोध्या में दीपावली को लेकर अधिक उत्साह बचा नहीं था। पुरानी बात की जाए तो यहां बहुत ही सीमित दायरे में परिसर में दिवाली मनाई जाती थी और सिर्फ मंदिर के पुजारी ही विशेष सुरक्षा के बीच दीया जला पाते थे। इस बार श्रीराम का मंदिर जगमगाएगा। वैसे अयोध्यावासियों के साथ पूरे देश ने मोदी जी के आह्वान पर इस वर्ष 22 जनवरी को दीपावली मनाई थी। पीएम मोदी ने सीतामढ़ी से अयोध्या तक रेल लाइन की मंजूरी देकर इस बार की दीपावली को खास बना दिया है। माता सीता के जन्मस्थान से श्रीराम के जन्मस्थान को जोड़कर उन्होंने बिहार और उत्तर प्रदेश दोनों को दीपावली पर विशेष उपहार दिया है।

श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास जी ने लिखा है धन्य अवध जो राम बखानी। जिस अयोध्या नगरी की चर्चा करते हुए भगवान ने स्वयं उसे धन्य कहा हो, उस नगरी का वर्णन और क्या किया जाए? धन्य है, अयोध्याजी जिसके पैर मानसरोवर से निकली सरजू नदी पखारती है। इस नगरी की सुरक्षा में स्वयं जगत का संरक्षण करने वाले हनुमान जी महाराज हनुमानगढ़ी पर विराजमान हैं। साधु-संतों की नगरी अयोध्या में, साधु संतों के रखवारे हनुमान जी की पहरेदारी आठों पहर है। ऐसी पवित्र नगरी दशकों से देश की राजनीति की बंधक बनी रही। अब जाकर वह बंधन टूटा है। भगवान का दूसरा वनवास पूरा हुआ है। उनके आने की खुशी में मानो सारा अयोध्या गुनगुना रहा है, मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे, राम आएंगे।

मर्यादा पुरुषोत्तम की जब बात होती है तो भारतीय समाज में यह स्थान सदा से श्रीराम के लिए सुरक्षित है। राम सनातन परंपरा में सिर्फ एक अच्छे पुत्र के रूप में ही याद नहीं किए जाते, बल्कि वे एक अच्छे राजा, एक अच्छे पति, एक अच्छे भाई के रूप में भी पूर्ण हैं। हिंदू धर्म में प्रभु श्रीराम की पूजा एक ऐसे मनुष्य के रूप में की जाती है, जो समाज का आदर्श है।

प्रधानमंत्री की समृद्ध सनातन परंपरा की आध्यात्मिक विरासत के प्रति अगाध श्रद्धा के चलते देश भर में प्रार्थना और पूजा स्थलों पर लगातार सुविधाएं बढ़ी हैं, वहां सुधार के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। बीते दस सालों में हमारे तीर्थ स्थलों पर श्रद्धालुओं की सिर्फ संख्या नहीं बढ़ी है, बल्कि अब हम अपने पर्व और त्योहार भी विराटता के साथ मना रहे हैं।

राम लला की जन्मस्थली अयोध्या की ही बात की जाए, तो मोदी के सत्ता में आने के बाद ही वहां पूरी भव्यता के साथ दीपोत्सव का हर बार नया कीर्तिमान बन रहा है। अयोध्या ने हर बार अपने पिछले साल के रिकार्ड को तोड़ा है। इस तरह अयोध्या के पास एक साथ सबसे अधिक दीपक जलाने का वर्ल्ड रेकॉर्ड है। इस बार यह दीपोत्सव विशेष रहने वाला है।

दीपोत्सव को लेकर अयोध्या में तैयारियां युद्धस्तर पर चल रही हैं। पिछली बार का रेकॉर्ड तोड़ते हुए इस बार 55 घाटों पर 28 लाख दीयों को एक साथ जलाए जाने का विश्व कीर्तिमान बनाने की तैयारी है। यह मोदी के सशक्त नेतृत्व की वजह से ही संभव हुआ है कि हिंदू त्योहारों में दशकों से सक्रिय रहने वाला विध्नसंतोषियों का पूरा इको-सिस्टम लापता है। इसीलिए राम भक्त सिर्फ कहते नहीं बल्कि 'मोदी है तो मुमकिन है' में विश्वास भी रखते हैं।

# ट्रम्प की जीत का भारत पर प्रभाव क्या होगा

**के.एस. तोमर**

वैश्विक भू-राजनीति के बदलते समीकरणों में, अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव के परिणाम का भारत पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा। चाहे डोनाल्ड ट्रम्प की सत्ता में वापसी हो या उप-राष्ट्रपति कमला हैरिस की ऐतिहासिक जीत, परिणाम भारत-अमरीका संबंधों की दिशा को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करेगा। अगले अमरीकी राष्ट्रपति का चीन के प्रति कठोर रुख अपनाना लगभग तय है, जो आर्थिक उपायों, गठबंधनों और तकनीकी प्रतिस्पर्धा पर ध्यान केंद्रित करेगा। अमरीकी हितों की रक्षा के लिए व्यापार नीतियां, जिसमें शुल्क और प्रतिबंध शामिल हैं, को लागू किया जा सकता है, साथ ही चीनी आपूर्ति शृंखलाओं पर निर्भरता को कम करने के प्रयास भी किए जाएंगे। क्वाड गठबंधन को मजबूत करने और इंडो-पैसिफिक, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर, में सैन्य उपस्थिति को बढ़ाने से चीन के क्षेत्रीय प्रभाव को संतुलित किया जा सकेगा।

तकनीकी प्रतिस्पर्धा प्रमुख भूमिका निभाएगी, जिसमें अमरीकी नवाचार में निवेश और चीन को निर्यात पर प्रतिबंध शामिल हैं। अंत में, सीमित जलवायु सहयोग के बावजूद, मानवाधिकार संबंधी मुद्दे शायद विवाद का एक महत्वपूर्ण विषय बने रहेंगे।

डोनाल्ड ट्रम्प की विदेश नीति 'अमेरिका फर्स्ट' पर आधारित रही है, जिसमें बहुपक्षीय सांझेदारी की बजाय , अक्सर लेन-देन आधारित कूटनीति को प्राथमिकता दी गई है। अगर ट्रम्प फिर से ओवल ऑफिस में लौटते हैं, तो भारत को निम्नलिखित बातों की अपेक्षा करनी चाहिए। ट्रम्प का दूसरा कार्यकाल व्यापार घाटे को संतुलित करने पर अधिक जोर दे सकता है। पहले स्टील और एल्युमीनियम पर लगाए गए टैरिफ ने भारतीय निर्यात को प्रभावित किया था, लेकिन ट्रम्प के द्विपक्षीय व्यापार समझौतों की प्राथमिकता भारत के लिए नई वार्ताओं के अवसर खोल सकती है।

भारत को अपने निर्यात और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ाने के लिए ट्रम्प की कठिन वार्ताओं की शैली के अनुरूप ढलना होगा। उनकी टैरिफ नीति अमरीकी कृषि उत्पादों पर भारतीय टैरिफ को कम करने के लिए चर्चा का कारण बन सकती है, जिसे ट्रम्प अमरीका की विकास कुंजी मानते हैं।

ट्रम्प के कार्यकाल में भारत के साथ रक्षा संबंध मजबूत हुए हैं, जिससे बड़े रक्षा समझौते और ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ क्वाड गठबंधन के तहत सुरक्षा सहयोग का विस्तार हुआ है।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ते तनाव को देखते हुए, ट्रम्प का दूसरा प्रशासन चीन के खिलाफ एक संतुलन के रूप में भारत की भूमिका का समर्थन करना जारी रख सकता है।

बड़ी सैन्य संलिप्तता के प्रति ट्रम्प की अनिच्छा भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा स्वतंत्रता के हित में हो सकती है, जिससे संयुक्त सैन्य अभ्यास और रक्षा तकनीकी हस्तांतरण में वृद्धि हो सकती है।

ट्रम्प के पहले कार्यकाल में इमिग्रेशन एक मुख्य मुद्दा था, जिसमें उनके प्रशासन ने एच-1बीएच वीजा अनुमोदनों में महत्वपूर्ण कमी की, जिससे भारतीय पेशेवरों को नुकसान हुआ। ट्रम्प की दूसरी जीत का मतलब सख्त इमिग्रेशन नीतियां हो सकता है, जो भारत के कुशल श्रमिकों की आवाजाही को बाधित कर सकती हैं। इससे भारतीय तकनीकी क्षेत्र प्रभावित हो सकता है, जो अमरीकी बाजार तक पहुंच के लिए ॥-1क्र पर निर्भर है। हालांकि, आर्थिक सांझेदारी में ट्रम्प की रुचि को देखते हुए, भारत अपने कुशल श्रमिकों के लिए विशेष वीजा श्रेणियों पर बातचीत कर सकता है।

ट्रम्प ने भारत के साथ मानवाधिकार एजेंडे को आगे नहीं बढ़ाया है, विशेष रूप से कश्मीर या आंतरिक धार्मिक नीतियों जैसे मुद्दों पर। एक दूसरा कार्यकाल इस गैर-हस्तक्षेप दृष्टिकोण को जारी रख सकता है।

# क्या कनाडा को आतंक प्रायोजक देश के रूप में नामित कर सकता है भारत?

**अभिनय आकाश**

इमरान खान जब 2018 में चुनाव जीते थे तो उन्होंने नया पाकिस्तान बनाने का वादा किया था। लेकिन अब जेल में हैं। लेकिन उनके इस काम को कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो ने किया है। उन्होंने कनाडा को नया पाकिस्तान बना दिया है। उन्होंने अपने देश का संविधान या झंडा नहीं बदला बल्कि भारत के साथ अपने रिश्तों को जहां पहुंचा दिया है वहां से कनाडा को नया पाकिस्तान बुलाना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। भारत और कनाडा में चल रही तनातनी के बीच खालिस्तानी आतंकवादी गुरवतपंत सिंह पन्नू ने कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो के साथ अपने सीधे रिश्तों की बात कबूली है। पन्नू का दावा है कि वो तीन सालों से ट्रूडो से सीधे संपर्क में रहा है। उसने ही भारत के खिलाफ खुफिया जानकारी मुहैया कराने का दावा भी किया है। उसका कहना है कि उसी की दी हुई जानकारी पर ट्रूडो ने कार्रवाई भी की है। ट्रूडो ने पिछले साल हुई खालिस्तानी समर्थक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या मामले में भारत पर कई गंभीर आरोप लगाए। इसके बाद भारत ने कनाडा से अपने छह राजनयिकों को वापस बुलाया।

पन्नू ने कनाडा के चैनल सीबीसी न्यूज को दिए एक इंटरव्यू में कई सनसनीखेज दावे किए हैं। उसी में उसने कहा है कि उसके कहने पर ये कार्रवाई हुई। इंटरव्यू में पन्नू ने पीएम ट्रूडो ने जो सार्वजनिक बयान दिया उसको लेकर कहा कि वो न्याय, कानून के शासन और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति कनाडा की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। न्याय के लिए कथित तौर पर सिख प्रधानमंत्री कार्यालय से बीते दो से तीन वर्षों से संपर्क में है और सभी जासूसी नेटवर्क का ब्यौरा दे रहा है। इंटरव्यू में पन्नू ने भारत पर कई और अनर्गल आरोप लगाए हैं। उसका कहना है कि भारत सरकार ने उसे मारने की साजिश रची, लेकिन वो नहीं डरता है। उसने ये भी कहा कि मैं निश्चित रूप से खालिस्तानी अभियान तभी तक चला पाऊंगा जब तक जीवित हूं। आपको बता दें कि निज्जर

हो या पन्नू ये सभी भारत के द्वारा घोषित आतंकवादी हैं। ये लगातार भारत की अखंडता पर चोट करने की फिराक में रहते हैं। इन्हीं के एजेंडे में पड़कर कनाडा इन दिनों भारत विरोधी कैंपेन चला रहा है।

आतंकवाद प्रायोजक स्टेट एक ऐसा दर्जा जो संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के कृत्यों का समर्थन करने के लिए कुछ देशों पर लागू किया जाता है। यह पदनाम केवल अमेरिकी विदेश मंत्री द्वारा ही लागू किया जा सकता है। इस स्थिति में कानूनी, आर्थिक और राजनयिक परिणाम शामिल हैं। जैसा कि अमेरिकी विदेश विभाग की वेबसाइट में उल्लेख किया गया है, राज्य सचिव द्वारा अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के कृत्यों के लिए बार-बार समर्थन प्रदान करने के लिए निर्धारित देशों को तीन कानूनों निर्यात प्रशासन अधिनियम की धारा 6 (जे), हथियार निर्यात नियंत्रण की धारा 40 अधिनियम, और विदेशी सहायता अधिनियम की धारा 620ए के अनुसार नामित किया गया है।

एक बार इस तरह नामित होने के बाद इन देशों को कई प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है, जैसे अमेरिकी विदेशी सहायता पर प्रतिबंध, रक्षा निर्यात और बिक्री पर प्रतिबंध, दोहरे उपयोग वाली वस्तुओं के निर्यात पर कुछ नियंत्रण और विविध वित्तीय और अन्य प्रतिबंध शामिल हैं। इसके अलावा, ये देश अमेरिकी संघीय और राज्य अदालतों में प्रतिरक्षा खो देते हैं। इसका मतलब यह है कि देश अब अमेरिकी नागरिकों, अमेरिकी सशस्त्र बलों के सदस्यों और अमेरिकी सरकारी कर्मचारियों द्वारा अमेरिका में लाए गए मुकदमों से अछूता नहीं रहेगा। वर्तमान में अमेरिका ने चार देशों क्यूबा, डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (उत्तर कोरिया), ईरान और सीरिया को इस श्रेणी में रखा है।

एक बार जब किसी देश को नामित कर दिया जाता है, तो वह तब तक आतंकवाद का प्रायोजक देश बना रहता है जब तक कि वैधानिक मानदंडों के अनुसार इस पदनाम को रद्द नहीं कर दिया जाता। किसी देश को सूची से हटाने के लिए, राष्ट्रपति को कांग्रेस को प्रमाणित करते हुए एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। अमेरिका ने तीन देशों को आतंकवाद सूची से हटा दिया है. 1990 में, दक्षिणी यमन को हटा दिया गया जब इसका उत्तरी यमन में विलय हो गया। इराक को 1982 में हटा दिया गया, फिर 1990 में वापस जोड़ा गया और 2004 में हटा दिया गया। इसके अलावा, लीबिया को 2006 में हटा दिया गया। अप्रैल 2022 में यूक्रेनी राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने अमेरिका से रूस को विदेश विभाग की आतंकवाद के राज्य प्रायोजकों की सूची में जोड़ने की अपील की थी। हालांकि ये स्वीकार नहीं हो सका।

वर्तमान में भारत के पास ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। हालाँकि, यह प्रतिबंध या तो आर्थिक या रक्षा-संबंधी लग सकता है। नई दिल्ली कनाडा पर आर्थिक प्रतिबंध लगा सकती है, जिसका ओटावा पर काफी असर पड़ सकता है। भारत कनाडा की अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचा सकता है, जो पहले से ही भारत के पक्ष में व्यापार असंतुलन का सामना कर रहा है। भारत अपने वाणिज्य दूतावासों को भी बंद कर सकता है, जिससे दूतावासों का कामकाज न्यूनतम स्तर पर हो जाएगा। यह वीजा सेवाओं को भी निलंबित कर सकता है जैसा कि पिछले साल एक महीने से अधिक समय के लिए किया गया था। नई दिल्ली भारत में कनाडाई वित्तीय संस्थानों और निवेशों पर रोक लगाने का विकल्प भी चुन सकती है।

# चीन के लिए ट्रिपल डी फॉर्मूला

**अभिनय आकाश**

अक्सर ये कहा जाता है कि अगर हमारे पड़ोसी अच्छे हैं तो हमारी रोजमर्रा की कई छोटी-बड़ी बातों की फिक्र यूं ही खत्म हो जाती है। यही फॉर्मूला देशों पर भी लागू होता है। मई 2003 में पूर्व भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि हम दोस्त बदल सकते हैं, लेकिन अपने पड़ोसी नहीं। हालांकि, मौका मिलने पर चीन और पाकिस्तान ऐसे पड़ोसी हैं जिसे हर कोई बदलना चाहेगा। कट्टर प्रतिद्वंद्वी भारत के साथ पाकिस्तान के रिश्ते हमेशा से खराब रहे हैं। यह परंपरागत रूप से भारत में आतंक का निर्यात करता रहा। वहीं बात चीन की करें तो दूसरों की जमीन पर अतिक्रमण करना और दोस्ती की आड़ में दगाबाजी का खंजर घोपने का उसका पुराण रिकॉर्ड रहा है। इसलिए भारत संग दोनों देशों के रिश्ते हालिया कुछ सालों में सबस खराब दौर में रहे हैं। साल 2019 के बाद से भारत पाकिस्तान की ओर से कोई विशेष पहल नहीं हुई है। वहीं गलवान में हुई झड़प के बाद चीन के साथ सैन्य स्तर पर तो बात हो रही लेकिन शीर्ष स्तर पर द्विपक्षीय संवाद की कमी नजर आयी। पुरानी कहावत है कीप योर फ्रेंड्स क्लोज, एंड योर एनिमी क्लोजर यानी अपने दोस्तों को करीब रखो और अपने दुश्मनों को और भी करीब रखो। भारत के अभी के एक महीने के कदम पर गौर करें तो आपकी उसके एक्शन में इसकी बानगी नजर आ जायेगी।

पाकिस्तान के साथ भारत की बातचीत पिछले कई सालों से बंद पड़ी है। विदेश मंत्री जयशंकर के अंदाज में कहे तो द्विपक्षीय संबंधों के बारे में जो पाकिस्तान का रवैया होगा, भारत की प्रतिक्रिया उसी के अनुरूप होगी। लेकिन भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर एससीओ की बैठक में शामिल होने के लिए बीते दिनों इस्लामाबाद गए। 9 साल के अंतराल के बाद पहली बार भारतीय प्रतिनिधिमंडल पाकिस्तान की सरजमीं पर कदम रखा था। लंबे वक्त से पाकिस्तान का कोई न कोई अधिकारी या मंत्री इस बात की पैरवी करता आया है कि भारत के साथ विभिन्न मुद्दों पर पाकिस्तान को बातचीत करनी चाहिए। यही वजह है कि पाकिस्तान इस उम्मीद में है कि किसी तरह मुलाकात के जरिए दोनों के बीच के तनाव को कम किया जाए।

16 अक्टूबर को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक के लिए विदेश मंत्री एस जयशंकर की पाकिस्तान यात्रा के बाद भारत-पाकिस्तान द्विपक्षीय संबंधों में प्रारंभिक लेकिन

सकारात्मक बदलाव आया है। पाकिस्तान के पूर्व प्रधान मंत्री नवाज शरीफ ने उम्मीद जताई कि जयशंकर की इस्लामाबाद यात्रा के साथ, भारत और पाकिस्तान दोनों अतीत को पीछे छोड़ सकते हैं और ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन जैसी भविष्य की समस्याओं से निपट सकते हैं। नवाज के बयान और उनके भाई शाहबाज के बॉडी लैंग्वेज से साफ प्रतीत होता है कि पाकिस्तान बार बार ये संदेश देने की कोशिश कर रहा है कि वो तो भारत से दोस्ती करने को आतुर है।

जयशंकर की इस्लामाबाद यात्रा और पीएम शहबाज से मुलाकात के बाद एक बड़ा फैसला सामने आया। भारत और पाकिस्तान ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर पर समझौते की वैधता को अगले पांच साल के लिए बढ़ाने पर सहमति जताई है। वहीं पाकिस्तान की तरफ से दोनों देशों के बीच क्रिकेट संबंध फिर शुरू किए जाने की मांग भी की जा रही है। हालांकि भारत की तरफ से इसपर सकारात्मक प्रतिक्रिया सामने नहीं आयी है। गौरतलब है कि तनाव के बीच अक्सर क्रिकेट सीरीज ने शांति बहाल करने में खास भूमिका निभाई है। कई बार बहुत खराब दिनों में भारत-पाकिस्तान की सरकारों ने क्रिकेट डिप्लोमेसी का सहारा लिया।

रूस के कज़ान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बीच पांच साल बाद द्विपक्षीय बातचीत हुई। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि पीएम मोदी ने सीमा संबंधी मामलों पर मतभेदों को हमारी सीमाओं पर शांति भंग न करने देने के महत्व को रेखांकित किया। दोनों नेताओं ने कहा कि भारत-चीन सीमा प्रश्न पर विशेष प्रतिनिधियों को सीमा प्रश्न के समाधान और सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। दोनों ने इस बात पर जोर दिया कि परिपक्वता और बुद्धिमत्ता के साथ, और एक-दूसरे की संवेदनशीलता, हितों, चिंताओं और आकांक्षाओं के लिए पारस्परिक सम्मान दिखाकर, दोनों देश शांतिपूर्ण, स्थिर और लाभकारी द्विपक्षीय संबंध बना सकते हैं। भारत और चीन दोनो देश इस बात को लेकर तो राजी हुए है कि द्विपक्षीय संबंधो की बेहतरी मे ही दोनो देशो का भला है। हालांकि यह भी सच है कि जहां भारत ने पट्रोलिंग अरेजमेट का जिक्र अपने आधिकारिक बयान मे किया था, वही चीन के विदेश मंत्रालय ने इससे दूरी बनाई।

एलएसी पर अप्रैल 2020 से पहली वाली स्थिति तब मानी जाएगी, जब तीन डी यानी डिसइंगेजमेंट, डीएस्केलेशन, डीइंडक्शन पूरा हो जाए। भारत और चीन के बीच सहमति के हिसाब से देपसांग और डेमचॉक में डिसइंगेजमेंट होने पर पहला डी ही पूरा होगा। डिसइंगेजमेंट का मतलब है कि सैनिको का आमने-सामने से हटना। दूसरी स्टेज है है डीएस्केलेशन। जिसका मतलब है कि दोनों देशों के सैनिक साजोसामान जो इस तरह तैनात किए गए है कि जरूरत पड़ने पर कभी भी एक-दूसरे पर हमला हो सकता है, उसे सामान्य स्थिति में लाना। तीसरा डी है, डीइंडक्शन। अभी पूर्वी लद्दाख में एलएसी पर दोनों तरफ से 50-50 हजार से ज्यादा सैनिक तैनात है। डीइंडक्शन का मतलब है कि जो भी भारी तादाद में सैनिक और साजो सामान तैनात है, उसे वापस पुरानी पोजिशन में भेजना।

ये एक ऐसा सवाल है , जिसका जवाब चीन ने इतिहास में पिछले कई मौकों पर अपने कदमों के जरिये खुद ही दिया है। हमारे पड़ोसी का भरोसा तोड़ने का पुराना इतिहास रहा है। चीनी राष्ट्रपति ने दोनों देशों के बीच वे 1993, 1996, 2005 और 2013 में हुए समझौतों को । पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। अभी भी अगर देखें तो डिसइंगेजमेंट के लिए जो सहमति पहले हुई थी, उसके तहत एक अस्थायी बफर जोन बनाया गया था। यह जोन भारत के इलाके में ही बना था। इस इलाके में सैन्य गश्ती की ताजा सहमति हुई है और इसमें यह साफ नहीं कहा गया है कि बफर जोन का क्या होगा। चीन की ओर से सहमति का ऐलान नहीं किया गया, केवल पुष्टि के तौर पर ही कहा गया है कि दोनों देशों के बीच सीमा मसले पर एक हल खोजा गया है। डर यह है कि चीन के साथ भारत के संबंध एक जाने पहचाने पैटर्न पर फिर से ना चल पड़े।

# युद्ध के कगार पर पश्चिम एशिया

इस्राइल और ईरान के बीच बढ़ती तनातनी को देखते हुए यह आशंका बहुत बढ़ गयी है कि पश्चिम एशिया में कभी भी बड़ा क्षेत्रीय युद्ध हो सकता है। बीते दिनों ईरान ने इस्राइल पर बड़ी संख्या में मिसाइलें दागी, जिनमें से कई निशाने पर पहुंचने में कामयाब रहीं। अमेरिका भी पूरी तरह से इस्राइल के समर्थन में खड़ा है। इस्राइल के नेताओं ने ईरानी हमले पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है और बदले की कार्रवाई करने की चेतावनी दी है। अगर देखा जाए, तो ईरान के सामने इस हमले के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा था। लेबनान में हिज्बुल्लाह को बनाने में ईरान की बड़ी भूमिका रही है। बेरूत में हुए इस्राइली हमलों में हिज्बुल्लाह के प्रमुख हसन नसरल्लाह समेत कई बड़े नेता मारे गये है। वहां ईरानी सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी की भी मौत हुई है। कुछ समय पहले ईरान की राजधानी तेहरान में हमास के प्रमुख इस्माइल हनिये की भी हत्या हुई थी। अब तक ईरान ने संयम रखा था, जिसे 'रणनीतिक धैर्य' की संज्ञा दी जाती है। ईरान को यह भी आश्वासन दिया गया कि युद्धविराम की संभावना है, इसलिए वह इस्राइल पर हमला न करे। इसके बाद ईरान ने प्रतीक्षा की, पर इस्राइल के लगातार हमलों के कारण ईरान के भीतर बहुत से लोग आक्रोशित हो रहे थे। यह भी कहा जाने लगा था कि ईरान कमजोर हो गया है और उसके पास जवाबी हमले की क्षमता नहीं बची है। इससे ईरान की साख पर असर पड़ने लगा था। ऐसे में मुझे लगता है कि ईरान ने हमले कर इस्राइल को यह संदेश देने की कोशिश की है कि उसके पास समुचित सैन्य क्षमता है और वह इस क्षेत्र में सक्रिय विभिन्न संगठनों के साथ अब भी खड़ा है। उन्होंने यह भी कहा है कि इस हमले के साथ बात खत्म हो गयी और उनका बदला पूरा हो गया। लेकिन इस्राइल अब बदला लेने पर आमादा दिख रहा है। अगर वह हमले करता है, तो उसके निशाने क्या होंगे, इसके बारे में कह पाना मुश्किल है। लेबनान और तेहरान में हुए हमलों से यह बात तो स्पष्ट हो चुकी है कि ईरान के खुफिया और सुरक्षा तंत्र में इस्राइल बड़ी सेंध लगा चुका है। अंदर से जानकारी मिले बिना इस तरह के हमले कर पाना संभव नहीं होता। इस कारण ईरान के नेतृत्व के मन में भी आशंकाएं हैं कि कहीं इस्राइल नेताओं को निशाना बनाने में कामयाब न हो जाए या रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ठिकानों पर हमले न कर दे। अभी तक यह सुनने में आ रहा है कि अगर इस्राइल हमले करता है, तो वह परमाणु संयंत्रों, तेल डिपो आदि को निशाना बना सकता है। लेकिन यदि इस्राइल हमले करते है, तो युद्ध के आग के भड़कने की आशंका बहुत बढ़ जायेगी क्योंकि फिर ईरान भी जवाबी हमले करने के लिए बाध्य हो जायेगा। बीते अप्रैल में जब ईरान ने इस्राइल मिसाइलों और ड्रोनों से हमला किया था, तब उसकी जानकारी पहले से ही दे दी गयी थी। वे हमले मुख्य रूप से सांकेतिक थे। अगर हालिया हमला भी उसी तर्ज पर है, तब तो लड़ाई आगे नहीं बढ़ेगी, पर यह बहुत कुछ इस्राइल की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा। उसके पास अमेरिका का समर्थन तो है ही, किंतु अमेरिकी नेतृत्व इस समय ऐसी स्थिति में नहीं है कि वह इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को काबू में कर सके। इसीलिए मेरा मानना है कि इस्राइल जिस तरह के हमले करेगा, उसी से आगे की स्थिति निर्धारित होगी। भारत ने पश्चिम एशिया की बिगड़ती हालत पर गहरी चिंता व्यक्त की है तथा सभी पक्षों से संयम बरतने और लड़ाई को आगे न बढ़ाने का आह्वान किया है। भारत का हमेशा से यह मानना रहा है कि युद्ध से विवादों का समाधान नहीं हो सकता तथा संवाद और कूटनीति की राह अख्तियार करनी चाहिए। भारत द्वि-राष्ट्र समाधान की पैरोकारी करता है। ईरान और इस्राइल दोनों ही भारत के महत्वपूर्ण भागीदार हैं और इनके साथ भारत के संबंध बहुत अच्छे हैं। यदि लड़ाई का विस्तार होता है, तो भारत पर उसका अनेक कारणों से बड़ा असर होगा। अगर पश्चिम एशिया में बड़े पैमाने पर युद्ध छिड़ जाता है, तो भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता की बात होगी उस क्षेत्र में कार्यरत 95 लाख भारतीयों की सुरक्षा सुनिश्चित करना। प्रभावित क्षेत्रों से उन्हें बाहर निकालना एक बड़ी चुनौती होगी। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि यह लड़ाई एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगी, समूचा पश्चिम एशिया इसके दायरे में होगा। इसीलिए सभी देश चाहते हैं कि युद्ध न हो। दूसरी बड़ी चिंता की बात है कि पश्चिम एशिया से तेल और गैस की आपूर्ति बाधित हो सकती है। हम अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए आयात पर निर्भर हैं और अधिकांश उसी इलाके से आता है। अभी ही तेल की कीमतें बढ़ने लगी हैं। पश्चिम एशियाई देश निवेश के भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं। वह भी प्रभावित हो सकता है। वह क्षेत्र आयात-निर्यात का प्रमुख रास्ता है। लाल सागर में यमन के हूथियों की पाबंदी के बाद वैश्विक व्यापार बाधित हुआ है। बड़ी लड़ाई की स्थिति में उधर के सामुद्रिक मार्ग भी बंद हो सकते हैं और हवाई यातायात भी प्रभावित होगी। इन सबका असर पूरी दुनिया पर होगा, लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव होगा। दुर्भाग्य से, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की वार्ताओं का असर होता नहीं दिख रहा है। शायद लेबनान में युद्धविराम हो जाए क्योंकि हिज्बुल्लाह के शीर्ष नेतृत्व को खत्म करने के बाद इस्राइल भी अपनी कार्रवाई रोक दे। हालांकि बातचीत शुरू हो चुकी है, पर गाजा और लेबनान में इस्राइली हमले जारी हैं। उसने सीरिया और यमन में भी कुछ हमले किये हैं।

**महालक्ष्मी सम्पूर्ण जगत का वैभव और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली परम शक्ति हैं। इन्ही की कृपा से जीव-जन्तु समृद्धि को प्राप्त करते हैं और अन्न, जल ग्रहण कर अपना जीवनयापन करते हैं। ऐसे ही महालक्ष्मी के अनेक रूप पुराण, तन्त्र इत्यादि ग्रंथों में प्रचलित हैं। प्रस्तुत लेख में महालक्ष्मी के ऐसे ही रूपों को स्पष्ट किया गया है।**

# अद्भुत स्वरूप हैं महालक्ष्मी के

**1. लक्ष्मी :** लक्ष्मी नाम से प्रसिद्ध ऐश्वर्य एवं कल्याण की वृष्टि करने वाली यह देवी सर्वविदित है। इनका लक्ष्मी नाम से वर्णन पुराण एवं कई तन्त्र ग्रंथों में हुआ है। लक्ष्मीतंत्र नाम के तंत्र ग्रंथ में इनका मूल स्वरूप लक्ष्मी नाम से प्रकट किया गया है।

**2. महिषमर्दिनी :** माँ लक्ष्मी का महिषमर्दिनी रूप मार्कण्डेय पुराण में उल्लिखित है। मार्कण्डेय पुराण के अध्याय दुर्गासप्तशती के नाम से भी जाने जाते हैं। दुर्गासप्तशती में मध्यचरित की देवी महालक्षी हैं, जिन्होंने महिष नामक दैत्य का अन्त किया था और समस्त देवताओं तथा सामान्यजन को पीड़ा से छुटकारा दिलाया था। इनका प्राकट्य त्रिशक्ति और सभी देवताओं के शरीर से हुआ था।

**3. कमला :** कमला दशमहाविद्याओं में से अंतिम महाविद्या है। कमल पर आसीन होने के कारण इन्हें कमला कहा जाता है। यह महालक्ष्मी का ही एक रूप है। इन्हें विभिन्न प्रकार के सुख, द्रव्य, समृद्धि प्रदान करने वाली देवी के रूप में माना जाता है।

**4. भृगुतनया:** विष्णु पुराण में माँ लक्ष्मी को भृगु ऋषि और ख्याति की पुत्री बताया गया है। इसलिए माँ लक्ष्मी को भृगुतनया कहा जाता है।

**5. समुद्रतनया :** दुर्वासा ऋषि के शाप से माँ लक्ष्मी समुद्र में विलीन हो गई थीं। पुनः इनका प्राकट्य समुद्र से होने के कारण इन्हें समुद्रतनया कहा जाता है।

**6. रमा :** माँ लक्ष्मी कामदेव की माँ हैं। उनकी सृष्टि के नियमों का पालन करवाने में कामदेव का प्रमुख योगदान था। वे अपनी मां लक्ष्मी जी के आदेश के अनुसार दण्ड भी दिया करते थे। माँ लक्ष्मी को पुत्र कामदेव से अत्यधिक स्नेह था। माँ लक्ष्मी का यह रूप रमा नाम से जाना जाता है।

**7. श्री :** श्री नाम माँ लक्ष्मी का भी है और ललिता बालत्रिपुर सुन्दरी का भी। एक बार लक्ष्मी जी ने कुल की अधिष्ठात्री देवी ललिता की कई वर्षों तक उपासना की थी। इस उपासना से प्रसन्न होकर ललिता ने अपना घर और नाम अर्थात् श्री और श्रीयंत्र दोनों माँ लक्ष्मी को प्रदान कर दिए तभी से माँ लक्ष्मी श्री के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

**8. कीर्ति :** लक्ष्मीतंत्र में माँ लक्ष्मी इन्द्र से अपने प्रमुख चार रूपों का वर्णन करते हुएएकहती हैं कि चार रूपों में विभक्त हूं। इनमें से कीर्ति नाम का द्वितीय रूप है, जो यश प्रदान करने वाला है।

**9. जया :** लक्ष्मीतंत्र में उल्लिखित कीर्ति रूप के समान ही जया रूप भी है। माा लक्ष्मी जया रूप में विजय प्रदान करती हैं।

**10. माया :** कीर्ति एवं जया के समान ही चतुर्थ रूप माया है। माया रूप में माँ लक्ष्मी सभी सुखों को प्रदान करती है।

**11. वैष्णवी :** माँ लक्ष्मी भगवान विष्णु की अर्धांगिनी हैं। भगवान विष्णु उन्हीं की शक्ति से सभी लीलाओं को रचते हैं। समुद्र से प्रकट होने पर माँ लक्ष्मी ने उनके वक्षस्थल में अपना निवास बनाया था। भगवान विष्णु को धारण करने के कारण ही वे वैष्णवी कहलाईं।

**12. सीता :** त्रेतायुग में जब भगवान विष्णु राम के रूप में प्रकट हुए, तो उनकी अर्धांगिनी के रूप में लक्ष्मी ने सीता के रूप में जन्म लिया था।

**13. राधा एवं रुक्मणी :** द्वापरयुग के अंत में जब भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लिया था, तब माँ लक्ष्मी ने उनकी शक्ति के रूप में राधा के रूप में जन्म लिया। रुक्मणी को भी माँ लक्ष्मी का रूप और श्रीकृष्ण की शक्ति माना जाता है।

**14. आदिलक्ष्मी :** आदिलक्ष्मी अष्टलक्ष्मी में से एक है, जिनके एक हाथ में कमल है तो दूसरे हाथ में सफेद झंडा है और अन्य दो हाथों में अभयमुद्रा एवं वरमुद्रा है।

**15. ऐश्वर्य लक्ष्मी :** ऐश्वर्य लक्ष्मी अष्ट लक्ष्मी मूर्तियों में द्वितीय लक्ष्मी हैं। ये भी चार भुजाओं वाली हैं और सफेद वस्त्र धारण करती हैं।

**16. धन लक्ष्मी :** धनलक्ष्मी छह हाथों वाली है और लाल वस्त्र धारण करती है। इनके हाथ में चक्र, दूसरे में शंख, तीसरे में अमृत कलश, चौथे में धनुष-बाण, पांचवें में कमल तथा छठा हाथ अभयमुद्रा रूप में है। ये निरंतर मुद्राओं की वर्षा करती हैं।

**17. धान्यलक्ष्मी :** धान्यलक्ष्मी आठ भुजाओं वाली है। हरे वस्त्र धारण करती है। इनके हाथों में क्रमशः कमल, गदा, फसल, गन्ना, केला, अभय एवं वरमुद्रा है।

**18. गज लक्ष्मी :** गजलक्ष्मी अष्टलक्ष्मी में से एक है। इनके चार भुजाएं हैं और ये लाल वस्त्र धारण करती हैं। इनके पीछे दो हाथी होते हैं, जो जल कलशों से इन पर वर्षा कर रहे हैं।

**19. सन्तान लक्ष्मी :** सन्तान लक्ष्मी छह हाथों वाली हैं। इनके हाथ में क्रमशः कलश, तलवार, ढाल, वर मुद्रा और एक भुजा में बच्चा है। बच्चे के हाथ में एक कमल है। इनकी उपासना श्रेष्ठ सन्तति प्रदान करने वाली है।

**20. वीर लक्ष्मी :** वीर लक्ष्मी आठ भुजाओं वाली हैं और लाल वस्त्र धारण करती हैं। इनके हाथों में क्रमशः शंख, चक्र, धनु-बाणष त्रिशूल, पुस्तक, अभयमुद्रा और वरमुद्रा है।

**21. विजयलक्ष्मी :** विजयलक्ष्मी अष्ट लक्ष्मियों में से एक हैं। ये आठ भुलाओं वाली हैं, जो लाल वस्त्रों को धारण करती हैं। इनके हाथों में चक्र, शंख, तलवार, ढाल, कमल, पाश और अभयमुद्रा है।

## श्री महालक्ष्मी का पूजन क्यों?

लक्ष्मी जी के पूजन के साथ अन्य देवी-देवताओं का भी पूजन क्यों किया जाताहै, यह प्रश्न एक बार कुछ महर्षियों और मुनियों ने सनत कुमार से पूछा तो सनत कुमार ने बताया कि लक्ष्मी जी जब समस्त देवी-देवताओं के साथ राजा बलि के यहां बंधक थीं, तब भगवान विष्णु ने उन्हें सभी देवताओं के साथ दीपावली के दिन ही बलि की कैद से मुक्त कराया था और बलि की कैद से मुक्ति पाकर लक्ष्मी तथा सभी देवता जाकर क्षीरसागर में सो गए।

श्री महालक्ष्मी के साथ अन्य देवी-देवताओं के भी पूजन का यही उद्देश्य है कि क्षीरसागर को छोड़कर हमारे घर समस्त देवी-देवताओं के साथ पधारें और लक्ष्मी के साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं की कृपा दृष्टि भी हम पर सदैव बनी रहे।

### ऐसे करें लक्ष्मी पूजन

दीपावली के दिन जहां व्यापारी वर्ग अपनी दुकान या प्रतिष्ठान पर दिन में लक्ष्मी का पूजन करता है, वहीं दूसरी ओर गृहस्थ सांय प्रदोष काल में महालक्ष्मी का आह्वान करते हैं। गोधूलि लग्न में पूजा आरंभ करके महानिशीथ काल तक अपने-अपने अस्तित्व के अनुसार महालक्ष्मी के पूजन को जारी रखा जाता है। इसका अभिप्रायः यह है कि जहां गृहस्थ और वाणिज्य वर्ग के लोग धन की देवी लक्ष्मी से समृद्धि और वित्तकोष की कामना करते हैं, वहीं साधु-संत और तांत्रिक कुछ विशेष सिद्धियां अर्जित करने के लिए रात्रिकाल में अपने तांत्रिक षटकर्म करते हैं।

### पूजन की सामग्री

महालक्ष्मी पूजन में केशर, रोली, चावल, पान, सुपारी, फल, फूल, दूध, खील, बताशे, सिंदूर, सूखे, मेवे, मिठाई, दही, गंगाजल, धूप, अगरबत्ती, दीपक, रूई तथा कलावा नारियल और तांबे का कलश चाहिए।

# सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक स्वास्तिक

सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने के तरीकों में स्वस्तिक का महत्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए स्वास्तिक ने मंगल चिन्हों में प्रतिष्ठा प्राप्त की है। मंगल प्रसंगों के अवसर पर पूजा स्थान तथा दरवाजे की चौखट और प्रमुख दरवाजे के आसपास स्वास्तिक चिन्ह बनाने की परंबरा है। वे स्वास्तिक कतई परिमाण नहीं देते, जिनका संबंध प्लास्टिक, लोहा, स्टील या लकड़ी से हो। सोना, चांदी, तांबा अथवा पंचधातु से बने स्वास्तिक प्राण प्रतिष्ठित करवाकर चौखट पर लगवाने से सुखद परिणाम देते हैं, जबकि रोली-हल्दी-सिन्दूर से बनाए गए स्वास्तिक आत्मसंतुष्टि ही देते हैं।

अशांति दूर करने तथा पारिवारिक प्रगति के लिए स्वास्तिक यंत्र रवि-पुष्य, गुरू-पुष्य तथथ दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी श्रीयंत्र के साथ लगाना लाभदायक है। अकेला स्वास्तिक यंत्र ही एक लाख चौबीस धनात्मक ऊर्जा उत्पन्न करने में सक्षम है। वास्तुदोष के निवारण में भी चीनी कछुआ 700 चौबीस भर देने की क्षमता रखता है, जबकि गणेश की प्रतिमा और उसका वैकल्पिक स्वास्तिक आकार एएलाख चौबीस की समानता रहने से प्रत्येक घर में स्थापना वास्तु के कई दोषों का निवारण करने की शक्ति प्रदान करता है।

गाय के दूध, गाय के दूध से बने हुएएदही और घी, गोनीत, गोबल जिसे पंचगव्य कहा जाता है, को समानुपात से गंगाजल के साथ मिलाकर आम अथवा अशोक के पत्ते से घर तथा व्यावसायिक केंद्रों पर प्रतिदिन छिड़काव करने से ऋणात्मक ऊर्जा का संहार होता है। तुलसी के पौधे के समीप शुद्ध घी का दीपक प्रतिदिन लगाने से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

## राजनाथ सिंह ने बॉब खाथिंग संग्रहालय का किया उद्घाटन

**श्रीनगर।** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि

पूर्वी लद्दाख में एलएसी (वास्तविक नियंत्रण रेखा) पर सैनिकों की वापसी की प्रक्रिया लगभग पूरी हो गई है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने असम के तेजपुर में बॉब खाथिंग संग्रहालय के उद्घाटन समारोह के दौरान बोलते हुए कहा कि एलएसी के साथ कुछ क्षेत्रों में संघर्षों को हल करने के लिए भारत और चीन के बीच राजनयिक और सैन्य दोनों स्तरों पर चर्चा चल रही है। हाल की वार्ता के बाद जमीनी स्थिति को बहाल करने के लिए व्यापक सहमति बनी है। समझौते में पारंपरिक क्षेत्रों में गश्त और चराई से संबंधित अधिकार शामिल हैं। हम केवल विघटन से आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे, लेकिन इसके लिए हमें थोड़ा और इंतजार करना होगा। यह भारत और चीन दोनों द्वारा पुष्टि किए जाने के बाद आया कि भारत-चीन सीमा क्षेत्रों में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गश्त व्यवस्था के संबंध में दोनों देशों के बीच एक समझौता हुआ है।

## महाराष्ट्र में कांग्रेस को झटका रवि राजा भाजपा में शामिल

**मुंबई।** महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले

एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में, कांग्रेस नेता रवि राजा ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है और गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने का फैसला किया है। राजा ग्रेटर मुंबई नगर निगम में विपक्ष के नेता रहे हैं और 44 वर्षों से अधिक समय से पार्टी के सदस्य थे। पूर्व कांग्रेस नेता और मुंबई नगर निगम के पूर्व एलओपी रवि राजा महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम देवेंद्र फड़नवीस की मौजूदगी में बीजेपी में शामिल हुए। डिप्टी सीएम देवेंद्र फड़णवीस ने कहा कि रवि राजा के साथ-साथ कई कांग्रेस नेता हमारे संपर्क में आ रहे हैं और वे बीजेपी में शामिल होना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि जल्द ही वे कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल होंगे। मुझसे नाम मत पूछिए लेकिन आने वाले दिनों में कांग्रेस नेता हमारे साथ आएंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हमारे गठबंधन से कुछ लोगों ने क्रॉस नॉमिनेशन कर दिया है।

## झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन पर भाजपा ने कसा तंज

**रांची।** झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की

उम्र को लेकर विवाद शुरू हो गया है। बीजेपी का आरोप है कि पिछले पांच साल में हेमंत सोरेन की उम्र सात साल बढ़ गयी। सोरेन ने 2019 में अपनी उम्र 42 साल बताई थी, लेकिन इस साल उन्होंने हलफनामे में बताया कि उनकी उम्र 49 साल है। सोरेन पर निशाना साधते हुए बीजेपी प्रवक्ता प्रतुल शाह देव ने एक्स पर पोस्ट किया कि क्या आपने कभी किसी की उम्र 5 साल में 7 साल बढ़ती हुई सुनी है? झारखंड में ऐसा हो सकता है। इससे पहले, भाजपा ने सोरेन पर हमला करते हुए कहा कि उन्होंने सत्ता हासिल करने के लिए बरहेट निर्वाचन क्षेत्र के लोगों को धोखा दिया है। निर्वाचन क्षेत्र से उनके भाजपा प्रतिद्वंद्वी गमालियाल हेम्ब्रोम ने कहा कि यह चुनाव सिर्फ मेरी लड़ाई नहीं है; यह इस निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की लड़ाई है। इस विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत 618 गांव हैं, और यदि आप उनमें से 10% का भी दौरा कर सकते हैं, तो आप ऐसा कर सकते हैं।

## राज ठाकरे के बेटे के राजनीतिक भविष्य का सवाल है: संजय राउत

**मुंबई।** शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने

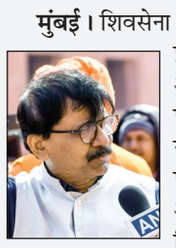

प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की हालिया प्रशंसा के लिए महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) प्रमुख राज ठाकरे की आलोचना की है और सुझाव दिया है कि यह उनके बेटे के राजनीतिक भविष्य के लिए चिंता से उपजा है। राउत ने भाजपा नेताओं के प्रति ठाकरे के अतीत के विरोध और उनके साथ उनके वर्तमान गठबंधन के बीच स्पष्ट अंतर को उजागर किया, और चुनाव नजदीक आने पर उनके इरादों पर सवाल उठाए। ठाकरे के बारे में बोलते हुए, राउत ने कहा कि उनका बेटा चुनाव लड़ रहा है, इसलिए आप उनकी मानसिक स्थिति को समझ सकते हैं। इस नेता ने पीएम मोदी और एचएम अमित शाह को महाराष्ट्र में आने की अनुमति नहीं दी, लेकिन अब उन्होंने उनकी प्रशंसा करना शुरू कर दिया है, इसलिए उन्होंने उनके मन में डर है कि यह उनके बेटे के भविष्य के बारे में हो सकता है।

## आरसीपी सिंह ने सरदार पटेल जयंती पर बनाई अपनी पार्टी

**पटना।** एक वक्त में सीएम नीतीश कुमार के

राम कहे जाने वाले जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद सिंह (आरसीपी सिंह) ने अपनी नई पार्टी बना ली है। इसका नाम उन्होंने आसा रखा है। मतलब समझाते हुए आरसीपी सिंह ने कहा कि मेरी नई पार्टी का नाम आसा है। इसका मतलब है आप सबकी पार्टी। हमारा झंड तीन रंगों का आयताकार होगा। इसमें सबसे ऊपर हरा, बीच में पीला, नीचे नीला रंग होगा। जब चुनाव आयोग हमें पार्टी सिंबल देगा तो बीच के पीले रंग वाले हिस्से में पार्टी का लोगो काले रंग से आएगा। आरसीपी सिंह ने पीएम नरेंद्र मोदी को भी धन्यवाद दिया। पूर्व केंद्रीय मत्री ने यह भी दावा किया कि 140 लोग अभी ही हमारी पार्टी से चुनाव लड़ने को तैयार हैं। हमारा संगठन प्रखंड स्तर से लेकर जिला, राज्य स्तर तक होगा। हम मिस्ड कॉल से लोगों को अपने संगठन में जोड़ेंगे।

### सरदार पटेल की जयंती पर बोले प्रधानमंत्री

# अनुच्छेद 370 को हमेशा के लिए जमीन में गाड़ दिया गया है: मोदी

**केवड़िया।** गुरुवार को देश लौहपुरुष सरदार पटेल की जयंती मनाया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के केवड़िया में स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पहुंचकर सरदार पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय एकता दिवस परेड की सलामी भी ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर कार्यक्रम में मौजूद लोगों को एकता की शपथ दिलाई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम के अवसर पर बोलते हुए अपने संबोधन में कहा कि मैं राष्ट्रीय एकता दिवस पर सभी देशवासियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इस बार का राष्ट्रीय एकता दिवस अद्भुत संयोग लेकर आया है। एक तरफ आज हम एकता का उत्सव मना रहे हैं, वहीं दूसरी ओर दीपावली का पावन पर्व है। अब तो दीपावली का पर्व भारत को दुनिया से भी जोड़ रहा है और अनेक देश इसे राष्ट्रीय उत्सव की तरह मना रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज से सरदार पटेल का 150वां जन्मजयंती वर्ष शुरू हो रहा है। आने वाले दो वर्षों तक देश, सरदार पटेल की 150वीं जन्मजयंती का उत्सव मनाएगा। ये भारत के प्रति उनके असाधारण योगदान के प्रति नमन है। जब देश को आजादी मिली तो दुनिया में कई लोग थे, जो भारत के बिखरने का आकलन कर रहे थे, उन्हें जरा भी उम्मीद नहीं थी कि सैकड़ों रियासतों को जोड़कर एक भारत का निर्माण हो पाएगा, लेकिन सरदार साहब ने ये करके दिखाया।

जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने पर बोलते हुए पीएम मोदी ने कहा कि आजादी के सात दशक बाद देश में एक देश और एक

संविधान का संकल्प भी पूरा हुआ है। सरदार साहब को मेरी ये सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है। 70 साल तक बाबा साहेब अंबेडकर का संविधान पूरे देश में लागू नहीं हुआ था। संविधान की माला जपने वालों ने संविधान का ऐसा घोर अपमान किया था। कारण था, जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद-370 की दीवार। अनुच्छेद-370 को हमेशा-हमेशा के लिए जमीन में गाड़ दिया गया है। पहली बार वहां इस विधानसभा चुनाव में बिना भेदभाव के मतदान किया गया। पहली बार वहां के मुख्यमंत्री ने भारत के संविधान की शपथ ली है। ये दृश्य भारत के संविधान निर्माताओं को अत्यंत संतोष देता होगा और ये संविधान निर्माताओं को हमारी विनम्र श्रद्धांजलि है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकियों के आकाओं को पता है कि अगर उन्होंने हमला किया तो भारत उन्हें मुंहतोड़ जवाब देगा। उत्तर पूर्व में बातचीत के जरिए कई चुनौतियों का समाधान किया। बोडो और ब्रू रींग समझौते हुए। त्रिपुरा में नेशनल लिबरेशन फ्रंट के साथ समझौता हुआ। भारत तेजी से शांति, विकास और समृद्धि की तरफ बढ़ रहा है।

भारत के बढ़ते सामर्थ्य से, भारत में बढ़ते एकता के भाव से भारत के भीतर और भारत के बाहर भी कुछ ताकतें, कुछ विकृति मानसिकता परेशान हैं। ऐसे लोग भारत में अस्थिरता, अराजकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ये ताकतें भारत के आर्थिक हितों को चोट पहुंचाने में जुटी हैं। एकता के इस मंत्र को हमें कभी भी कमजोर नहीं पड़ने देना है। हर झूठ का मुकाबला करना है, एकता के मंत्र को जीना है।

देश की आजादी के बाद विभिन्न रियासतों के भारत में विलय का श्रेय सरदार वल्लभ भाई पटेल को जाता है। यही वजह है कि उनकी जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है। दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमाओं में से एक स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्थल पर सैन्य परेड का भी आयोजन किया गया, जिसमें देशभर से 16 मार्चिंग टुकड़ियां शामिल हुईं। साथ ही सशस्त्र बल वीरता दर्शाने वाले कई प्रदर्शन भी करेंगे। पीएमओ कार्यालय की तरफ से जारी बयान के अनुसार, भारतीय वायुसेना के हवाई जहाज फ्लाईपास्ट कर सरदार पटेल को पुष्पांजलि अर्पित की।

इस दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। परेड के दौरान एनएसजी कमांडोज ने दल ने मार्च किया। साथ ही बीएसएफ और सीआरपीएफ के दलों ने वीरता दर्शाने वाले प्रदर्शन किए। स्कूली छात्रों के एक दल ने बैंड प्रस्तुति दी। सरदार पटेल की जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट साझा करके लिखा, भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्म-जयंती पर उन्हें मेरा शत-शत नमन। राष्ट्र की एकता और संप्रभुता की रक्षा उनके जीवन की सर्वोच्च प्राथमिकता थी। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व देश की हर पीढ़ी को प्रेरित करता रहेगा।

# कांग्रेस 'इंडिया गठबंधन' के सत्ता की राह में बन सकती है रोड़ा

### झारखंड में पिछला स्ट्राइक रेट दोहराना चुनौती

**रांची।** झारखंड में इंडिया गठबंधन में सीट का बंटवारा हो गया है। गठबंधन की तस्वीर साफ है। गठबंधन में झामुमो 43 सीटों के साथ सबसे बड़ा दल है। वहीं, कांग्रेस ने अपने पास 30 सीटें रखी है। कांग्रेस पिछली बार 16 सीट जीत कर आयी थी। विधायक प्रदीप बलमुचू और बंधु तिर्की कांग्रेस में शामिल हो गये थे। ऐसे में कांग्रेस का पिछला चुनावी स्ट्राइक गड़बड़ाया, तो सत्ता की राह मुश्किल होगी। जमीन पर कांग्रेस सुस्त दिख रही है। कांग्रेस के प्रत्याशी अपने-अपने स्तर पर भले ही जुटे हैं और समीकरण को साध रहे हैं, लेकिन प्रदेश स्तर पर चुनावी आक्रमकता नहीं है।

#### प्रदेश कांग्रेस के पास जनाधार वाले नेताओं का टोटा

भाजपा के दर्जनों आला नेता, अलग-अलग राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री जुटे हैं। वहीं, प्रदेश कांग्रेस के पास बड़े और जनाधार वाले राष्ट्रीय नेताओं का टोटा है। कांग्रेस ने टिकट बंटवारे में भी लेटलतीफी दिखायी। पहली सूची में 21 प्रत्याशियों का नाम आया। उसके बाद नामांकन की आखिरी तिथि से महज एक दिन पहले दूसरी और तीसरी लिस्ट जारी हुई। उम्मीदवारों में ऊहापोह की स्थिति बनी रही। प्रत्याशी नामांकन की तैयारी भी नहीं कर पाये।

#### राजद और माले के प्रदर्शन पर निगाहें

गठबंधन में राजद और माले के प्रदर्शन पर भी निगाहें होंगी। राजद सात सीटों पर चुनाव लड़ रहा है। वहीं माले के पास चार सीट है। इन दोनों के पास गठबंधन की 11 सीट हैं। इन सीटों पर बेहतर प्रदर्शन ही इंडिया गठबंधन की राह आसान कर सकता है। गठबंधन को खतरे की राह से बाहर निकाल सकता है। हालांकि, राजद और माले से कांग्रेस व झामुमो के साथ फ्रेंडली फाइट है।

#### 'चारपाई' चुनाव चिन्ह के साथ राहुल और प्रियंका की तस्वीर, गुस्से में कांग्रेस

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश में उप चुनाव के पहले राजनीति गरमा गई है। फूलपुर विधानसभा सीट पर भी उप चुनाव करवाए जा रहे हैं जहां से कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष सुरेश चन्द्र यादव ने निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर नामांकन किया है। यही नहीं उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की तस्वीर के साथ एक पोस्टर जारी किया जिसपर लगातार प्रतिक्रिया आ रही है। इस बीच कांग्रेस पार्टी के महानगर अध्यक्ष प्रदीप मिश्रा अंशुमन ने मामले पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने पोस्टर प्रकरण में सुरेश चन्द्र यादव के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कही है। चेतावनी भरे लहजे में अंशुमन ने कहा कि दिवाली के बाद यादव के खिलाफ पुलिस को शिकायत की जाएगी। यादव फूलपुर विधानसभा के उप चुनाव में कांग्रेस का वोट काटने के लिए बीजेपी के इशारे पर काम कर रहे हैं। पोस्टर में राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की तस्वीर डालकर वह मतदाताओं को भ्रमित कर रहे हैं। इससे पहले इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी के विरुद्ध नामांकन दाखिल करने संबंधी मामले में कांग्रेस की अनुशासन समिति ने सुरेश चन्द्र को पार्टी से 6 वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया है।

#### एमवीए दलों में भी कई सीटों पर आर-पार की लड़ाई

**मुंबई।** महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में कुछ सीटों पर महा विकास अघाड़ी (एमवीए) के बीच दोस्ताना लड़ाई की अटकलों के बीच, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एससीपी) प्रमुख शरद पवार ने इस बात पर जोर दिया कि गठबंधन के साथी जल्द ही उन सीटों पर समाधान खोजने के लिए बैठेंगे जहां एमवीए से एक से अधिक नामांकन भरे गए है। पवार ने कहा कि मुझे इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है क्योंकि मैं इन सभी बातचीत का हिस्सा नहीं हूं। हमारे अन्य नेता इस पर विचार कर रहे हैं, लेकिन मुझे पता है कि कुछ 10-12 सीटें ऐसी हैं जहां गठबंधन की ओर से दो नामांकन भरे जा रहे हैं। वरिष्ठ नेता ने कहा क अगले दो-तीन दिनों में हम साथ बैठेंगे और इसका समाधान निकालेंगे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार), कांग्रेस के साथ, महा विकास अघाड़ी के बैनर तले शिवसेना (उद्धव ठाकरे) के साथ गठबंधन में है। एनसीपी-एससीपी प्रमुख पवार ने आगे इस बात पर प्रकाश डाला कि उनकी पार्टी महाराष्ट्र के लोगों से समर्थन प्राप्त करने का विश्वास जताते हुए अपने घोषणापत्र और विचारधारा के साथ लोगों के बीच जाएगी। पवार ने आगे कहा कि हम एक घोषणापत्र और अपनी विचारधारा के साथ लोगों के बीच जाएंगे ताकि हमें लोगों का समर्थन और मदद मिल सके। हम 6 नवंबर से राहुल गांधी, उद्धव ठाकरे और मेरी मौजूदगी में चुनाव प्रचार शुरू करेंगे। मुझे यकीन है कि महाराष्ट्र के लोग हमें भरपूर समर्थन देंगे।% महाराष्ट्र में एक ही चरण में 20 नवंबर को चुनाव होंगे और वोटों की गिनती 23 नवंबर को होगी। इस बीच, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) के महासचिव डी राजा ने सीट बंटवारे पर इंडिया ब्लॉक में गठबंधन दलों को विश्वास में नहीं लेने के लिए कांग्रेस की आलोचना की और कहा कि कांग्रेस को भाजपा से सवाल करने के बजाय खुद से सवाल करना चाहिए।

खेल
प्रमुख समाचार

## भारत और न्यूजीलैंड के बीच अंतिम टेस्ट मैच आज से

**मुंबई।** भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैच

की टेस्ट सीरीज का तीसरा और आखिरी मुकाबले शुक्रवार, 1 नवंबर से मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला जाएगा। भारत 26 अक्टूबर को पुणे में दूसरा टेस्ट 113 रन से हारने के बाद 12 साल में पहली बार घरेलू टेस्ट सीरीज हार गया। मेजबान टीम ने बेंगलुरु में पहला टेस्ट 8 विकेट से गंवाया था। चार में से तीन पारियों में टीम का कुल स्कोर 46, 156 और 245 रहा, जिसमें बल्लेबाजों को स्विंग और स्पिन दोनों के सामने संघर्ष करना पड़ा।

इस मैच से एक दिन पहले जसप्रीत बुमराह को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार टीम इंडिया मुंबई टेस्ट में जसप्रीत बुमराह को आराम देने वाली है जिसके बाद वो टीम का साथ छोड़ अहमदाबाद अपने घर भी लौट गए हैं। ऐसे में न्यूजीलैंड के खिलाफ आखिरी टेस्ट में भारतीय टीम बुमराह के बिना मैदान पर उतरेगी। सूत्र ने बताया कि, वह मुंबई टेस्ट नहीं खेलेंगे और घर वापस लौट गए हैं। भारतीय टीम प्रबंधन चाहता था कि वह कुछ आराम करें ताकि वह अपने शरीर को स्वस्थ कर सकें। अब वह भारतीय टीम के साथ तब जुड़ेंगे जब टीम ऑस्ट्रेलिया के लिए रवाना होगी।

बुमराह को ये आराम आगामी बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के तहत टीम मैनेजमेंट चाहती है कि बुमराह ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए तरोताजा रहे। रिपोर्ट में ये भी बताया गया है कि टीम मैनेजमेंट की रणनीति पहले पुणे टेस्ट में जसप्रीत बुमराह को आराम देने की थी, मगर बेंगलुरु टेस्ट में मिली हार के बाद रणनीति का बदलना पड़ा और बुमराह दूसरे टेस्ट में खेले। जसप्रीत बुमराह के बाहर होने पर मोहम्मद सिराज की टीम में वापसी हो सकती है, जिन्हें पुणे टेस्ट में आराम दिया गया था। ऐसे में भारतीय पेस बैटरी कम अनुभव के साथ वानखेड़े स्टेडियम में उतरेगी।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

## सेंसेक्स 553 अंक टूटा निफ्टी 24200 के करीब

**मुंबई।** दिवाली के दिन घरेलू शेयर बाजार के

बेंचमार्क सूचकांक गुरुवार को फिर लाल निशान पर बंद हुए। सेंसेक्स 553.12 अंक गिरकर 79,389.06 पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी 135.50 अंक कमजोर होकर 24,205.35 पर बंद हुआ। इससे पहले सुबह बाजार लाल निशान पर ही खुला था। दिवाली 2024 की मुहूर्त ट्रेडिंग 1 नवंबर 2024 को होगी। अमेरिकी शेयर बाजार में गिरावट देखी गई है। एशियाई बाजारों में भी अमेरिकी बाजार के असर के चलते गिरावट का दौर जारी है। तेल की कीमतें बढ़ गई हैं। पंजाब नेशनल बैंक, आरबीएल बैंक, इंडिया मार्ट, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के मार्केट पोजीशन के पार चले जाने के चलते इनकी ट्रेडिंग पर रोक लगा दी गई है।

## 840 टन प्याज पहुंचा दिल्ली कीमतें घटने की उम्मीद बढ़ी

**दिल्ली।** प्याज की कीमतों को नियंत्रित करने की बहु-आयामी रणनीति के तहत सरकार ने इसकी आपूर्ति बढ़ाई है। सरकार ने बुधवार को कहा कि रेल के माध्यम से लगभग 840 टन बफर प्याज दिल्ली के किशनगंज रेलवे स्टेशन पर पहुंचा है। 20 अक्टूबर को कांडा एक्सप्रेस के माध्यम से 1,600 टन प्याज के दिल्ली पहुंचने के बाद रेल परिवहन से यह दूसरी बड़ी आपूर्ति है। नेफेड ने मूल्य स्थिरीकरण कोष के तहत यह खरीद की है। इसे मुख्य रूप से आजादपुर मंडी के माध्यम से जारी किया जाएगा। इस प्याज का एक हिस्सा खुदरा में 35 रुपये प्रति किलो के हिसाब से बेचा जाएगा। वर्तमान में राष्ट्रीय राजधानी के बाजार में प्याज 60-80 रुपये किलो के हिसाब से बिक रहा है। आपूर्ति बढ़ने से कीमतें कम होने की उम्मीद है। सरकार ने पहली बार विभिन्न क्षेत्रों में प्याज को समय पर और कम परिवहन लागत से पहुंचाने के लिए रेल परिवहन का इस्तेमाल किया है।

## कॉग्निजेंट की तीसरी तिमाही का शुद्ध लाभ 10.8% उछला

**नईदिल्ली।** नैस्डैक-लिस्टेड आईटी कंपनी कॉग्निजेंट ने अपने पूरे साल के रेवेन्यू गाइडेंस को घटाकर 19.8-19.7 बिलियन डॉलर कर दिया है, जो कॉन्सटेंट करंसी में 1.4-1.9% ग्रोथ को दर्शाता है। कंपनी ने यह बदलाव अगस्त में बेलकन के एक्विजिशन को ध्यान में रखते हुए किया है। कॉग्निजेंट ने वित्तवर्ष-24 की तीसरी तिमाही में 582 मिलियन डॉलर का नेट इनकम दर्ज किया है, जो पिछले साल की तुलना में 10.8% ज्यादा है। हालांकि, पिछली तिमाही के मुकाबले यह ग्रोथ केवल 0.8% रही। कॉग्निजेंट का फाइनेंशियल ईयर जनवरी से दिसंबर तक चलता है। वित्तवर्ष-24 की तीसरी तिमाही में कंपनी की रेवेन्यू 2.7% बढ़कर 5 बिलियन डॉलर पहुंची, जो कॉन्सटेंट करेंसी के आधार पर है। रिपोर्टेड टर्म्स में रेवेन्यू 3% की बढ़त के साथ दर्ज हुआ। दूसरी तिमाही में दी गई गाइडेंस से बेहतर प्रदर्शन करते हुए तीसरी तिमाही में रेवेन्यू ग्रोथ ने उम्मीदें पार कर दीं।

## पहली छमाही में राजकोषीय घाटा 29.4 फीसदी रहा

**नईदिल्ली।** केंद्र का राजकोषीय घाटा 2024-25 की पहली छमाही के अंत में पूरे वित्त वर्ष के लिए निर्धारित लक्ष्य का 29.4 फीसदी या 4,74,520 करोड़ रुपये रहा। 2023-24 की समान अवधि में यह घाटा बजट अनुमान का 39.3 फीसदी रहा था। लेखा महानियंत्रक की ओर से बुधवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, 2024-25 की अप्रैल-सितंबर में शुद्ध कर राजस्व संग्रह 12.65 लाख करोड़ या बजट अनुमान का 49 फीसदी रहा। सितंबर, 2023 के अंत में यह 49.8 फीसदी था। इस दौरान केंद्र सरकार का कुल खर्च 21.11 लाख करोड़ या 43.8 फीसदी रहा है। एक साल पहले की समान अवधि में यह बजट अनुमान का 47.1% था। कुल खर्च में से 16.96 लाख करोड़ राजस्व खाते में जबकि 4.15 लाख करोड़ पूंजीगत खाते में थे। सरकार ने चालू वित्त वर्ष में राजकोषीय घाटे को 4.9% तक सीमित रखने का लक्ष्य रखा है।

# बैंक को विदेशी हाथों में सौंपने से बचें

**प्रो. अश्विनी महाजन**

मार्च 2020 में भारत का एक महत्वपूर्ण निजी बैंक यस बैंक प्रबंधन की गलतियों (भ्रष्टाचार सहित) के कारण लगभग दिवालिया हो गया था। ऐसे में सरकारी बैंक भारतीय स्टेट बैंक ने 49 प्रतिशत शेयर खरीद कर उसे अपने हाथ में लिया, जिससे यस बैंक में जमाकर्ताओं का विश्वास पुन: जम गया। बाद में यस बैंक ने नये शेयर जारी कर और पूंजी जुटायी और स्टेट बैंक की हिस्सेदारी 24 प्रतिशत तक आ गयी। अन्य 11 ऋणदाता संस्थाओं के पास यस बैंक के लगभग 9.74 प्रतिशत तथा दो निजी इक्विटी फंडों के पास 16.05 प्रतिशत शेयर हैं। खबरों के अनुसार जापान की मित्सुबिशी यूएफजे फाइनेंशिएल ग्रुप नामक कंपनी को स्टेट बैंक के यस बैंक के शेयरों को बेचने की बात आगे बढ़ गयी है। प्रस्तावित विदेशी निवेशक यस बैंक के 51 प्रतिशत शेयर पाना चाहते हैं ताकि उसके पास निर्णय का अधिकार आ जाए। वे पहले तो भारतीय रिजर्व बैंक की इस शर्त को मानने के लिए तैयार नहीं थे कि उन्हें अगले 15 वर्षों में अपनी प्रोमोटर शेयर होल्डिंग को 26 प्रतिशत तक लाना होगा, पर अब मान गये हैं। इस बैंक को उबारने में स्टेट बैंक ने 7,520 करोड़ रुपये लगाये थे, पर बैंक के पुनरुद्धार के बाद वह पूंजी बढ़कर अब 18,000 करोड़ रुपये हो गयी है। ऐसे में यह विचार करना जरूरी है कि क्या यस बैंक जैसे महत्वपूर्ण बैंक को विदेशी हाथों में सौंपना उचित होगा।

उदारीकरण नीतियों के अंतर्गत कई सरकारी उद्यमों का निजीकरण किया गया। बैंकिंग क्षेत्र में पहले से ही निजी भारतीय और विदेशी बैंक कार्यरत थे। सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ गैर-वित्तीय संस्थानों को बैंकों में बदला गया और कुछ नये बैंकों को निजी

क्षेत्र में काम करने की मंजूरी दी गयी। पर इस दौरान भी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के निजीकरण से सरकार बचती रही। बैंकिंग किसी भी देश के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय क्षेत्र है। यह सही है कि दुनिया में निजी और सरकारी दोनों प्रकार के बैंक होते हैं। अमेरिका और यूरोप सरीखे पूंजीवादी देशों में ज्यादातर बैंक निजी हाथों में हैं। निजी बैंकों में जमाकर्ताओं की राशि बीमा की सीमा तक ही सुरक्षित होती है। बीते सालों में अमेरिका में ही हजारों बैंक दिवालिया हुए तथा जमाकर्ताओं को अपनी कमाई से हाथ धोना पड़ा। यूरोप की स्थिति भी बहुत भिन्न नहीं है और वहां भी बैंक दिवालिया हुए हैं। भारत एक ऐसा देश है, जहां आजादी के बाद और खासतौर पर 1969 में बड़े बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद निजी बैंकों के दिवालिया होने की भी खबरें अपवाद हैं। सार्वजनिक बैंकों में जमाकर्ताओं की राशि डूबना तो संभव ही नहीं क्योंकि इसकी सरकार की संप्रभु गारंटी होती है। भारतीय रिजर्व बैंक के सख्त नियमन के कारण निजी बैंकों में लोगों की धन राशि काफी हद तक सुरक्षित है और जब कभी कुप्रबंधन के कारण उनके दिवालिया होने की संभावना भी बनती है, तो सरकारी हस्तक्षेप से उसे दुरूस्त कर दिया जाता है।

हाल में कुछ चुनिंदा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का एकीकरण कर बैंकों की संख्या को कुछ कम किया गया है। समय-समय पर सरकार सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों के निजीकरण की बात भी दोहराती रही है। लेकिन अभी तक किसी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक का निजीकरण नहीं किया गया है। नीतिगत चर्चा के बिना क्या एक महत्वपूर्ण बैंक, जो स्टेट बैंक द्वारा डूबने से बचाया गया था, को विदेशी हाथों में सौंपना यस बैंक के ग्राहकों, देश के वित्तीय क्षेत्र की स्थिरता और विकास के लिए उपयुक्त होगा? क्या यस बैंक को विदेशी हाथों में सौंपना एकमात्र विकल्प है? यदि अन्य विकल्प हैं, तो उन पर गंभीरता से विचार हुआ है या नहीं? जब सरकार रणनीतिक निवेशकों की तलाश में विनिवेश के साथ आगे बढ़ रही थी, तो कुछ हलकों से एक समझदारी भरा विचार आया कि क्या हम इक्विटी रूट के जरिये विनिवेश नहीं कर सकते। तब से सरकार विभिन्न वाणिज्यिक उपक्रमों में सरकार के शेयरों को बाजार में बेचकर इक्विटी रूट के जरिये विनिवेश कर रही है।

## संक्षिप्त समाचार

### मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेशवासियों को दी दिवाली की शुभकामनाएं

**रायपुर।** छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेशवासियों को दीपावली पर्व की बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने सभी के लिए सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की है। उन्होंने कहा है कि दीपावली के दिन भगवान राम लंका पर विजय प्राप्त करके वापस अयोध्या आए थे। उनके आने की खुशी और स्वागत में दीप जलाए जाते हैं। इस साल की दीवाली बहुत खास है, क्योंकि लगभग 500 साल बाद भगवान श्रीराम अयोध्या में अपने भव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि दीपावली पर्व सबके लिए मंगलमय हो। विकास की रोशनी गांव गांव तक पहुंचे, लोगों में परस्पर स्नेह की जड़ें और गहरी तथा मजबूत हों तथा मां लक्ष्मी की कृपा से छत्तीसगढ़ प्रदेश धनधान्य और सुखसम्पदा से परिपूर्ण रहे।

### राज्यपाल श्री डेका ने राज्य स्थापना दिवस पर दी शुभकामनाएं

**रायपुर।** राज्यपाल श्री रमेन डेका ने छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि राज्य स्थापना दिवस हमारे प्रदेश की संस्कृति, समृद्धि और विकास के संकल्प को एक नई दिशा देने का अवसर है। छत्तीसगढ़ स्थापना के पश्चात बीते वर्षो में राज्य ने एक विशिष्ट पहचान बनाई है और विभिन्न क्षेत्रों में विकास के नये आयाम गढ़े हैं। राज्यपाल ने प्रदेशवासियों से आव्हान किया है कि हम सभी को एकजुट होकर राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए अपना योगदान देने का संकल्प लेना चाहिए। स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समरसता के साथ हम सब मिलकर अपने राज्य को नई ऊंचाईयों तक ले जायेंगे। मेरी कामना है कि हमारा छत्तीसगढ़ इसी तरह प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे और हर नागरिक का जीवन खुशहाल और समृद्ध हो।

### राज्यपाल रमेन डेका ने राज भवन के स्वच्छता कर्मियों का किया सम्मान

**रायपुर।** राज्यपाल श्री रमेन डेका द्वारा आज दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर राजभवन के स्वच्छता कर्मियों को सम्मानित किया गया। राज्यपाल ने स्वच्छता कर्मियों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं और कहा कि उनका कार्य न केवल आवश्यक है अपितु महत्वपूर्ण भी है। राज्यपाल श्री डेका ने राज भवन परिसर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखने के लिए स्वच्छता कर्मियों के योगदान की प्रशंसा भी की।

### राजधानी में पूरी तरह से प्रतिबंध रही मांस-मटन की बिक्री

**रायपुर।** दीपावली के अवसर पर गुरुवार को राजधानी रायपुर में मांस-मटन की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया गया है। आज हिंदू धर्म का सबसे बड़ा त्यौहार है। आज के दिन भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण के साथ वनवास से वापिस अयोध्या लौटे थे। इसी की खुशी में दीपावली मनाई जाती है और माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। वहीं कल यानी 1 नवंबर को महावीर निर्वाण दिवस है। ऐसे पावन अवसर पर मांस-मटन का सेवन न किया जाए। इसलिए धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए ये निर्णय लिया गया है। सुधर्म जैन नवयुवक मंडल और मटन व्यापारी संघ की आपसी सहमति के बाद, 1 नवंबर को प्रतिबंधित मांस और मटन की बिक्री को निरस्त कर दिया गया है।

# सलमान खान और इरफान नहीं लड़ सकेंगे चुनाव

## रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव : अब कुल 30 प्रत्याशी मैदान में

**रायपुर।** रायपुर दक्षिण विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन वापस लेने की आखिरी तारीख के बाद 30 प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। कुल 57 लोगों ने नामांकन फॉर्म जमा किया था जिसमें से 4 लोगों ने नाम वापस लिए। वहीं 12 प्रत्याशियों के फॉर्म रिजेक्ट हुए।

**किन पार्टियों के नेता मैदान में**- चुनाव मैदान में भारतीय जनता पार्टी से सुनील कुमार सोनी और कांग्रेस से आकाश शर्मा चुनाव मैदान में हैं। इसके साथ ही गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से फरीद मोहम्मद कुरैशी, भारतीय सर्वजन हिताय समाज पार्टी से विक्रम अडवानी, हमर राज पार्टी से मनीष कुमार ठाकुर लड़ रहे हैं।

**रायपुर दक्षिण उपचुनाव में निर्दलीय**- निर्दलीय आशीष पाण्डेय, नीरज दुबे, मोहम्मद शान अहमद, अब्दुल अजीम, चन्द्र प्रकाश कुर्रे, प्रकाश कुमार उरांव, संतोष वर्मा, जयंत अग्रवाल चुनाव मैदान में हैं।

**किनके फॉर्म हुए रिजेक्ट**- जोहार छत्तीसगढ़ पार्टी से गोपीचंद साहू, राष्ट्रवादी

कांग्रेस पार्टी शरद पवार से बृजनारायण साहू, निर्दलीय उम्मीदवारों में अब्दुल शौकत गनी, रूबीना अंजुम, दीनबंधु गुप्ता,सलमान खान, मोहम्मद इरफान खान,रमीज अलमास, मोहम्मद वसीम रिजवी, बहुजन मुक्ति पार्टी से कृष्णा चिनखेड़े, अदनान शाहिद के नामांकन रिजेक्ट किए गए हैं।

**किन्होंने नाम लिया वापस**- वहीं नामांकन वापसी के आखिरी दिन हैदर भाटी, जुगराज जगत, रवि भोई और महेंद्र कुमार बाघ ने अपना नाम वापस लिया है।

रायपुर उपचुनाव में मुख्य मुकाबला बीजेपी और कांग्रेस के बीच है। बृजमोहन अग्रवाल के गढ़ में भाजपा ने इस बार सुनील सोनी को उतारा है। तो कांग्रेस ने एनएसयूआई के प्रदेश अध्यक्ष आकाश शर्मा को खड़ा किया है।

**कौन है सुनील सोनी**- सुनील सोनी ने छात्र राजनीति से शुरुआत की। वे रायपुर में दुर्गा कॉलेज के अध्यक्ष रहे। रायपुर नगर निगम में पार्षद बने। सुनील सोनी साल 2000 से 2003 तक रायपुर नगर निगम में सभापति रहे। साल 2004 से 2010 तक रायपुर के महापौर रहे। साल 2011 से 2013 तक सोनी रायपुर डेवलपमेंट अथॉरटी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। साल 2014 में वे बीजेपी संगठन में प्रदेश उपाध्यक्ष बने। इसके बाद सोनी मई 2019 में रायपुर लोकसभा सीट से सांसद बने।

**कौन है आकाश शर्मा**- आकाश शर्मा वर्तमान में छत्तीसगढ़ युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष है। साल 2014 से 2020 तक वे एनएसयूआई छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं। 2018 में एनएसयूआई के राष्ट्रीय सचिव बने। आकाश शर्मा हस्ड्ढ और युवा कांग्रेस दोनों ही संगठन के प्रदेश अध्यक्ष बनने वाले छत्तीसगढ़ के पहले नेता हैं।

**रायपुर दक्षिण में मतदाताओं का प्रतिशत**-रायपुर रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट पर 10% एससी मतदाता है। एसटी मतदाता 4 प्रतिशत है। ओबीसी मतदाताओं में 53% ओबीसी मतदाता रायपुर दक्षिण में है। जिसमें साहू समाज के 16 प्रतिशत, यादव समाज के 6% और कुर्मी समाज के 6% मतदाता शामिल है। सामान्य वर्ग से 16% मतदाता इस विधानसभा क्षेत्र में है। जिसमें 5% ब्राह्मण और 4% वैश्य शामिल है। 17% अल्पसंख्यक मतदाता है इसमें से 10 प्रतिशत मुस्लिम मतदाता शामिल है।

### दीपावली के चलते फल और फूल दोनों के मिजाज हुए तेज

**रायपुर।** दीपों के त्योहार को लेकर लोगों की खरीदारी जारी है। रायपुर के सभी चौक चौराहों पर पूजन सामाग्री और फल फूल दी दुकानें सजी हैं। सुबह से ही ग्राहकों की भारी भीड़ दुकान पर है। पूजा के लिए अपनी जरुरत के हिसाब से खरीददारी कर रहे हैं। दुकानदारों का कहना है कि महंगाई का असर दुकानदारी पर पड़ रहा है। कीमतें ज्यादा होने के चलते लोग मोल भाव और हिसाब से खरीदारी कर रहे हैं। कई दुकानदारों का तो कहना है कि महंगाई के चलते ग्राहकी इस बार कम है। फलों की दुकान लगाने वाले दुकानदार विक्की का कहना है कि दीपावली का पर्व होने के कारण बाजार में रौनक देखने को मिल रहा है। लोग पूजन सामग्री के साथ ही फल-फूल, केला पत्ता और आम पत्ता जैसी चीजों की खरीदारी कर रहे हैं।

## गोवर्धन पूजा में क्या करें क्या नहीं

**रायपुर।** दीपावली का पर्व पूरे पांच दिनों का होता है। इसमें हर एक दिन का धार्मिक महत्व है। गोवर्धन पूजा के दिन को मुख्य रूप से भगवान कृष्ण की पूजा होती है। इस दिन गोबर से गोवर्धन पर्वत का प्रतिरूप बनाया जाता है। इस दिन लोग गाय के गोबर से बने पर्वत की पूजा तो करते ही हैं साथ ही भगवान कृष्ण को अन्नकूट का प्रसाद भी चढ़ाते हैं।

कभी भी गोवर्धन पूजा घर के बंद कमरे में नहीं करनी चाहिए। ऐसा माना जाता है कि बंद जगह पर की गई पूजा भगवान नहीं स्वीकारते। यही नहीं ज्योतिष के अनुसार भी इस दिन बंद कमरे में गोवर्धन पूजा करना अशुभ माना गया है। यदि कोई ऐसा करता है, तो उसके घर की सुख समृद्धि घटने लगती है। गोवर्धन पूजा हमेशा खुली जगह जैसे घर का आंगन, बालकनी या छत में ही करनी चाहिए।

ऐसी मान्यता है कि यह पूजा सुहागिन महिलाओं के लिए बहुत खास होती है, इसलिए इस दिन आपको भूलकर भी काले कपड़े नहीं पहनने चाहिए।इस दिन गंदे कपड़े पहनकर भी पूजा ना करें। ऐसा करने से पूजा का पूरा फल नहीं मिलता है। इस दिन यदि आप हल्के पीले या नारंगी रंग के कपड़े पहनेंगे तो ये आपके जीवन में सौभाग्य आएगा।गोवर्धन पूजा के दिन मुख्य रूप से गायों की पूजा का विधान है।इस दिन गौ पूजा से घर की सुख समृद्धि में बढ़ोत्तरी होती है।

कभी भी गोवर्धन पूजा अकेले एक महिला को नहीं करनी चाहिए। यदि आपके घर में ज्यादा लोग नहीं मौजूद हैं तो आपको अन्य रिश्तेदारों के साथ ये पूजा करनी चाहिए। मान्यता है कि इस पूजा में परिवार के जितने सदस्य शामिल होंगे उनके जीवन में अच्छा समय आते जाएगा। घर में सदा खुशहाली बनी रहेगी। हमेशा परिवार के सदस्यों को एक साथ गोवर्धन पूजा करनी चाहिए।

## राज्यपाल ने रेडक्रॉस के चार मोबाइल मेडिकल यूनिट का शुभारंभ किया

**रायपुर।** राज्यपाल श्री रमेन डेका ने आज राजभवन में छत्तीसगढ़ रेडक्रॉस सोसाइटी के चार मोबाइल मेडिकल यूनिट का शुभारंभ किया और इन्हें हरी झंडी दिखाकर विभिन्न जिलों के लिए रवाना किया।

उक्त मोबाइल मेडिकल यूनिट्स भारत सरकार के उद्यम ग्रामीण विद्युतीकरण निगम लिमिटेड के सीएसआर मद से छत्तीसगढ़ रेडक्रॉस सोसाइटी को उपलब्ध कराई गई है, जो छत्तीसगढ़ के चार आदिवासी बाहुल्य जिलों, मोहला-मानपुर, कोंडागांव, सारंगढ़-बिलाईगढ़ और मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिलों में सेवाएं देंगीं।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि मोबाइल मेडिकल यूनिट के जरिये विशेषकर ग्रामीण इलाकों में अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं मिलेंगीं। ग्रामीणों को बीमारियों के प्रति जागरूक होने में भी इससे मदद मिलेगी। राज्यपाल श्री डेका ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की, कि ये वाहन उन इलाकों में जाएंगे, जहां स्वास्थ्य सेवाओं का पहुंचना कठिन है और स्थानीय लोगों को चिकित्सकीय देखभाल की अत्यधिक देखभाल की आवश्यकता है। इससे स्वास्थ्य व्यवस्था सुदृढ़ होगी और लोगों का जीवन स्तर बेहतर होगा।

उल्लेखनीय है कि इन वाहनों में हेल्थ एटीएम मशीन लगाई गई है, जिससे लोगों को स्वास्थ्य जांच रिपोर्ट जल्द और नि:शुल्क उपलब्ध हो सकेगी। मोबाइल यूनिट के साथ मौजूद चिकित्सक मामूली बीमारियों का तुरंत उपचार करेंगे और आवश्यक होने पर गंभीर मरीजों को बड़े अस्पतालों में रेफर किया जाएगा। अगले तीन वर्षों तक इनके सुचारू संचालन और इन्हें सर्वसुविधायुक्त बनाए रखने के लिए आरईसी फाउंडेशन आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेगा।

कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ रेडक्रॉस सोसाइटी के सीईओ श्री एम. के. राऊत ने मेडिकल मोबाइल यूनिट के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी छत्तीसगढ़ राज्य शाखा ने दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने के लिए यह महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

आरईसी फाउंडेशन के सीएमडी श्री विवेक कुमार देवांगन ने बताया कि वर्तमान में छत्तीसगढ़ को चार मोबाइल मेडिकल यूनिट दिए गए हैं, जिनकी संख्या भविष्य में बढ़ाई जाएगी। राज्यपाल ने इस अवसर पर प्रदेशवासियों और कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ रेडक्रॉस सोसाइटी के चेयरमैन श्री अशोक कुमार अग्रवाल, सचिव डॉ. रूपल पुरोहित, आरईसी लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक श्री प्रदीप फेलोस एवं निगम के अन्य अधिकारीगण, संबंधित जिलों के चिकित्सा अधिकारी तथा नोडल अधिकारी उपस्थित थे।

## दीपावली में पटाखे जलाते वक्त इन बातों का रखें ध्यान

**रायपुर।** दीपावली का त्योहार पूरे छत्तीसगढ़ में धूमधाम से मनाया जा रहा है। हर घर के सामने रंगोली बनाई जा रही है। बच्चे अपने हरफनमौला वाली मस्ती में है। दीपावली का त्योहार छत्तीसगढ़ के सभी लोगों के घर में खुशियां लाएं सभी लोग सुख समृद्धि में रहे। यह मंगल कामना सभी लोग कर रहे हैं। घर के सामने सभी लोग दिया जला रहे हैं। ताकि छत्तीसगढ़ से कष्ट का हर वह अंधेरा दूर हो। छत्तीसगढ़ विकास की राह पर जा सके। दीपावली के इस मौके पर थोड़ी सी सावधानी छत्तीसगढ़ की जनता के लिए भी जरूरी है।

दीपावली पर सावधानी की खास जरुरत होती है।ताकि किसी तरह की कोई अप्रिय घटना ना हो। त्यौहार के समय में आमतौर पर लोग पटाखा फोड़ते समय कुछ बातों को भूल जाते हैं। जिससे खुद के साथ आसपास के लोगों को परेशानी हो सकती है। मीडिया आप सभी लोगों से निवेदन करता है कि सावधानी से बड़ी दुर्घटनाओं को टाला जा सकता है। इसलिए एक दीपक छत्तीसगढ़ में कोई अप्रिय घटना ना हो इसके लिए भी जरूर जलाएं।वरिष्ठ फिजीशियन डॉक्टर दिवाकर तेजस्वी ने दीपावली के अवसर पर लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। डॉक्टर दिवाकर ने पटाखा जलाते समय लोगों को कुछ बातों का खास ध्यान रखने की अपील की है।

1. बहुत ज्यादा आवाज करने वाले पटाखे ना फोड़े। 2. छोटे बच्चों के हाथों में ज्यादा आवाज करने वाले बम या पटाखे ना दें। 3. घर के आसपास जहां भी बच्चे पटाखे फोड़ रहे हो वहां पर बड़े लोग जरूर रहे। 4. घर या कॉलोनी के आसपास काफी सतर्कता के साथ पटाखे फोड़े। 5. कच्चे मकान घास फूस के इलाके में पटाखे फोड़। तो इस बात का ध्यान रखें कि वहां पर जलती हुई आग ना रहे। 6. घर की कॉलोनियों के आसपास पटाखे फोड़े पर ध्यान रखें। ज्यादा आवाज से बहुत छोटे बच्चों को नुकसान हो सकता है। 7. जिन मकान या कॉलोनी में ज्यादा बुजुर्ग रहते हैं। वहां पर ज्यादा आवाज करने वाले पटाखे या ज्यादा धुआं देने वाले पटाखे ना फोड़े। इससे उन्हें सांस लेने में दिक्कत हो सकती है।

दीपावली के त्यौहार में इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखें। आप सुरक्षित दीपावली मना सकते हैं। आप सभी लोगों को शुभ समृद्धि मिले खूब खुशियां मिले, साथ ही आपसे निवेदन करता है कि आप सुरक्षित दीपावली मनाएं।

## विजय शर्मा को चयनित एसआई युवाओं ने लड्डूओं से तौला

**कवर्धा।** छत्तीसगढ़ के डिप्टी सीएम और कवर्धा विधायक विजय शर्मा छोटी दिवाली पर अपने अपने विधानसभा क्षेत्र के दौरे पर रहे। इस दौरान एसआई चयनित युवाओं ने उनका जोरदार स्वागत किया और लड्डुओं से उन्हें तोला। चयनित अभ्यर्थियों ने गृहमंत्री विजय शर्मा का दिवाली से पहले रिजल्ट जारी करने को लेकर आभार जताया। युवाओं ने कहा कि दिवाली पर उन्हें बहुत बड़ा तोहफा मिला है। उनके जीवन का सपना पूरा हुआ।

एसआई भर्ती परीक्षा में कवर्धा के 38 युवक युवतियों का चयन- छत्तीसगढ़ में एसआई परीक्षा परिणाम 6 साल से लटका हुआ था। जिसके लिए अभ्यर्थियों ने गृहमंत्री, मुख्यमंत्री से कई बार रिजल्ट घोषित करने की मांग की। 6 साल का इंतजार 28 अक्टूबर को खत्म हुआ। साय सरकार ने अभ्यर्थियों को दिवाली गिफ्ट के रूप में एसआई रिजल्ट जारी कर दिया। जिसमें कबीरधाम जिले के लगभग 38 युवक युवतियों का बस इंस्पेक्टर, प्लाटून कमांडर, सूबेदार के रूप में चयन हुआ है।

बुधवार को कबीरधाम जिले के सभी चयनित युवाओं ने नगर के भारत माता चौक में गृहमंत्री का स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया। चयनित अभ्यर्थियों ने गृहमंत्री विजय शर्मा को लड्डुओं से तौला फिर उन लड्डुओं को गरीबों में बांटा। विजय शर्मा ने कहा कि साय सरकार के प्रयास से सब इंस्पेक्टर भर्ती रिजल्ट घोषित किया गया है। जल्द ही कई और अलग अलग पदों पर भी विकेंसी निकली जाएगी। जिसमें सबसे पहले छत्तीसगढ़ के युवाओं का अधिकार होगा।

गृहमंत्री विजय शर्मा कहा की छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय की सरकार बनने के बाद नगर सेना में महिलाओं के लिए 1715 पद की भर्ती प्रक्रिया चल रही है। जरनल के लिए 500 पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया चल रही है, 341 पद एसआई के लिए जारी कर दिया गया है। 5900 पदों पर आरक्षक के लिए जारी किया जा चुका है। एसआई की रुकी हुई भर्ती प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। बाकी भर्ती प्रक्रिया भी समय पर पूरी की जाएगी।

डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने कहा पुलिस को देखने से सज्जनों के मन में ताकत आनी चाहिए और दुर्जनों के मन में डर आना चाहिए। यही रूप पुलिस का होना चाहिए। जीवन में छोटे छोटे विषय पर भ्रमित ना हो, जीवन का आनंद समाज की संतुष्टि में है। चयनित एसआई रितेश परमार ने कहा एसआई की तैयारी 2018 से कर रहा था। पिता जैसा बनने का सपना था, जिसे आज मैंने कर दिया।

डिप्टी सीएम ने कहा कि कवर्धा में खेल का माहौल है। हर खेल में यहां के युवाओं का सलेक्शन होता है। इसलिए मैंने जिले में 12 करोड़ से ज्यादा की राशि से 24 स्टेडियम बनाने की घोषणा की है। ताकि आने वाले समय में पुलिस, एसआई, अग्निवीर भर्ती के लिए फिजिकल तैयारी किया जा सके।

विजय शर्मा ने पिपरिया नगरपंचायत में नगर विकास के लिए 7 करोड़ 37 लाख 60 हजार रुपए के लागत से सीसी रोड, पानी टंकी, हाट बाजार, स्कूल भवन नगर सौंदर्यीकरण समेत 44 विकास कार्यों का भूमिपूजन भी किया। इसके अलावा डिप्टी सीएम ने 2।91करोड़ रुपए लागत की भेलवाभांवर मार्ग सड़क निर्माण के लिए भूमिपूजन किया।

## 24 साल के राजनीतिक इतिहास में थर्ड फ्रंट को नहीं मिली कोई जगह

**रायपुर।** छत्तीसगढ़ की राजनीतिक स्थिति की बात की जाए तो यहां सिर्फ दो दल भाजपा और कांग्रेस का ही दबदबा रहा है। इन्हीं के बीच सत्ता आती और जाती रही, लेकिन थर्ड फ्रंट की बात की जाए तो कोई भी ऐसा मजबूत थर्ड फ्रंट कभी नहीं रहा। जिसने 24 साल के छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन किया हो या फिर गेम चेंजर रहा हो। आज तक सत्ता पर पहुंचने में थर्ड फ्रंट कामयाब नहीं रहा है। आखिर छत्तीसगढ़ में थर्ड फ्रंट की क्या भूमिका है, क्यों उसे सफलता नहीं मिली, आइये जानने की कोशिश करते हैं।

मध्य प्रदेश के विभाजित होकर छत्तीसगढ़ का निर्माण हुआ। एक नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ बना। जब छत्तीसगढ़ राज्य बना तो उसके हिस्से में कुल 90 विधानसभा सीट आई। उस दौरान छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार थी और अजीत जोगी मुख्यमंत्री बने। राज्य निर्माण के समय छत्तीसगढ़ में दलीय स्थिति की बात की जाए तो कांग्रेस के पास कल 48 सीट थी, जबकि भाजपा के पास 36 सीट थी, वहीं थर्ड फ्रंट की बात की जाए तो उसमें बहुजन समाज पार्टी के पास सबसे ज्यादा 3 सीट थी। गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के पास 1 सीट थी। 2 निर्दलीय विधायक भी थे।

इसके बाद छत्तीसगढ़ में साल 2003 में विभाजन के बाद पहला विधानसभा चुनाव हुआ। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को 50 सीट मिली जबकि कांग्रेस को 37 सीट ही हाथ लग पाई। वहीं थर्ड फ्रंट की बात की जाए तो बहुजन समाज पार्टी 2 सीट जीतने में कामयाब रही। इसके अलावा राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने भी 1 सीट पर जीत हासिल की।

साल 2008 में हुए विधानसभा चुनाव में एक बार फिर भाजपा को 50 सीट मिली। कांग्रेस को इस बार एक सीट बढ़कर 38 सीट हासिल हुई। इस बार भी थर्ड फ्रंट के रूप

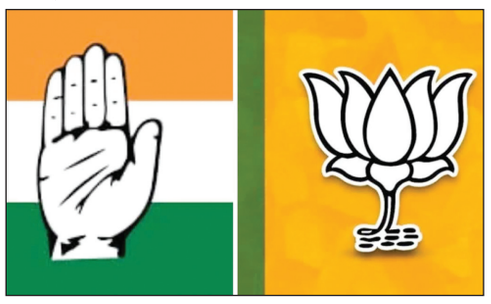

में बहुजन समाज पार्टी अपने 2 सीट के आंकड़े को कायम रखा।

साल 2013 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को 49 सीट हासिल हुई। कांग्रेस को 39 सीटें मिली। इस दौरान थर्ड फ्रंट की बात की जाए तो बहुजन समाज पार्टी 1 सीट ही जीत पाई जबकि एक सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार ने जीत हासिल की।

साल 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने एकतरफा जीत हासिल करते हुए 90 में से 68 सीटों पर अपना कब्जा कर लिया। वही 15 सालों से सत्ता पर काबिज भाजपा को महज 15 सीट से संतोष करना पड़ा। इस चुनाव में थर्ड फ्रंट ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए सीटों की संख्या बढ़ा ली। इस चुनाव में अजीत जोगी की पार्टी जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) 5 सीट जीतने में कामयाब रही। बहुजन समाज पार्टी की बात की जाए तो उसे 2 सीट हासिल हुई। इस तरह इस चुनाव में थर्ड फ्रंट के पास कुल 7 सीटे थी। जबकि इसके पहले विधानसभा चुनाव में दो-चार सीटों तक ही यह आंकड़ा पहुंच पाता था।

हाल में संपन्न हुए 2023 के विधानसभा चुनाव में एक बार फिर भाजपा ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए 54 विधानसभा सीटों पर जीत हासिल की। वहीं कांग्रेस 35 सीट ही जीत पाई। इस चुनाव में थर्ड फ्रंट ना के बराबर रहा। इस चुनाव में गोंडवाना गणतंत्र पार्टी को मात्र एक सीट हासिल हुई। जबकि बहुजन समाज पार्टी का इस चुनाव में खाता भी नहीं खुला।

छत्तीसगढ़ में थर्ड फ्रंट की स्थिति को लेकर राजनीति की जानकार एवं वरिष्ठ पत्रकार उचित शर्मा का कहना है कि थर्ड फ्रंट की एक छोटी जगह हमेशा छत्तीसगढ़ की राजनीति में रही है। उसे नकारा नहीं जा सकता। उनका अपना वोट बैंक है। 4 से 5 ब्व वोट बहुजन समाज पार्टी के हैं। साल 2003 के विधानसभा चुनाव की बात किया तो थर्ड फ्रंट ने पूरा खेल ही बिगाड़ दिया था। लेकिन यह जरूर है कि अब तक थर्ड फ्रेंड सत्ता में नहीं आई है। सिर्फ दो बड़ी मजबूत पार्टी कांग्रेस और बीजेपी ही सत्ता में रही है।

उचित शर्मा ने कहा कि सत्ता के समीकरण को साधने में थर्ड फ्रंट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 2003 के विधानसभा चुनाव की बात की जाए विद्याचरण शुक्ल ने एनसीपी थर्ड फ्रंट बनाकर जो चुनाव लड़ा और एक काफी बड़ा वोट परसेंटेज अपनी ओर खींचा। जिसका फायदा उस चुनाव में कहीं ना कहीं भाजपा को मिला। जबकि उस समय सरकार कांग्रेस की थी। ऐसे में थर्ड फ्रंट चुनावी समीकरण बिगाड़ते रहे हैं।

उचित शर्मा ने कहा कि हालांकि यह जरूर है कि छत्तीसगढ़ में थर्ड फ्रेंड की बहुत ज्यादा सीट नहीं है। बहुजन समाज पार्टी और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी की एक दो सीट अब तक थर्ड फ्रेंड की रही है। आम आदमी पार्टी लगातार संघर्ष करती रही लेकिन वर्तमान की बात की जाए तो अभी खत्म नजर आ रही है।

इस तरह से जेसीसीजे, आम आदमी पार्टी , गोंडवाना गणतंत्र पार्टी, बहुजन समाजव पार्टी, सर्व आदिवासी समाज की पार्टी है। इनका अच्छा वोट बैंक है। यह अलग बात है कि थर्ड फ्रंट सत्ता पर ताबीज हो या फिर ज्यादा सीट जीत पाई हो, यह संभव नहीं है।

## दिवाली से पहले राजधानी में दो-दो हत्याओं से हड़कंप...

**रायपुर।** दिवाली की पहली रात यानी रूप चौदस की रात दो-दो मर्डर से राजधानी दहल उठा। अंवति विहार के बाद अब कचना इलाके में एक ठेकेदार में अपने कर्मचारी की हत्या कर दी। मृतक युवक जेसीबी चालक था। फिलहाल खम्हारडीह थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर पूरे मामले की जांच में जुट गई है। इससे पहले इसी रात अवंति विहार में बदमाशों में एक बुजर्ग की हत्या कर दी। मिली जानकारी के अनुसार पूरा मामला खम्हारडीह थाना इलाके के कचना स्थित रहेजा निर्वाणा सोसाइटी का है। यहां एक ठेकेदार प्रेम साहू ने जेसीबी चालक सुंदरलाल साहू की हत्या कर दी। उसने सुंदरलाल साहू पर लकड़ी के बत्ते से हमला कर दिया। इससे सुंदरलाल साहू की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही खम्हारडीह पुलिस मौके पर पहुंचकर आगे की कार्रवाई कर रही है। बता दें कि छोटी दिवाली की रात राजधानी के खम्हारडीह इलाके के ही अवंति विहार इलाके में एक 72 वर्षीय बुजुर्ग रत्नेश्वर बनर्जी की हत्या कर दी गई। इतना ही नहीं उनकी पत्नी पर भी जानलेवा हमला किया गया। पुलिस को मृतक के घर रह रहे किराएदारों पर हत्या का शक है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

### कमिश्नर कावरे ने विकासखंड शिक्षा अधिकारी आर.पी. दास को किया निलंबित

**रायपुर।** रायपुर कमिश्नर महादेव कावरे ने बड़ी कार्यवाही करते हुए गरियाबंद विकासखंड शिक्षा अधिकारी आर.पी. दास को निलंबित कर दिया है। विकासखंड एवं शिक्षा अधिकारी के गरिमाविहीन व्यवहार एवं विलंबकारी कार्यनिति और अपने पद का सहजता से कार्य नही करने के कारण लगातार शिकायतें गरियाबंद कलेक्टर दीपक अग्रवाल के पास आ रही थी। जिसकी जांच पुष्टि करने पर आर. पी. दास विकासखंड एवं शिक्षा अधिकारी (प्राचार्य) के गरिमाविहीन व्यहार एवं विलंबकारी कार्य में दोष सिध्द होने के कारण जिला कलेक्टर गरियाबंद के प्रतिवेदन के आधार पर आर.पी. दास विकासखंड शिक्षा अधिकारी गरियाबंद (मूल पद प्राचार्य) को छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण तथा अपील) नियम, 1966 के नियम 9 के तहत तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.